र्जाठ्याव ।

क्षा अस्त्रमानि	1.
ভাশ দাত্রি পরিচয় · · · · · · · · · ·	
, 1	1
क्षत्र वर्ष्ट्य रूटना	,
AR TAISES:	•
জথ মার্কজের প্রস্থান্তর রাজপুজের নারী নিশ	•••
🐃 र মাক্ত ভার 🐩নি হৈতে নারীর প্রসংশ। 😁	•••
অথ রাজা চন্দ্রদের উপাখ্যান ••••	;
অথ রাজার নিকটে সহ্যানীর আগমন	••• ;
ক্ষম ফল ভক্তৰে রাণীৰ গত্ত ধারণ বিৰরণ 😶	3
অ্থ রাজপুলের মুগ অস্থেবণে কন্যা দর্শন	•••
অথ চারি বন্ধুর কন্যা অস্বেষণে গমন 🕠	•• >
श्रथ होति वश्र श्रव श्राम	
्रेरेका जीवर करवालकबान ताकप्रका देलरप	14.
শেশ চারি বন্ধুর অরবেগ হইতে গ্রহণ	3./
অথ কন্যা আনে শাধুপুরে প্রবেশ 💎 🗥	
व्यथ कनगत वितर त्यदमां कि दर्गना	-
ज्ञथ मनाग्रव श्रेष्ट्र जिल्लाम्। कदहन	1
অথ প্রয়োত্তর	, , , ,
अध प्राकात श्राक प्राक्तभूरकात जेशातन	
অম নখাগরের পুত্রবন্ধ বিলাপ	
শ্বিপ জার্থানের সদাগরের পুজে বনে গমন 😶	ļ
অব অর্ণ্যে সাধুবধুর মাণিক প্রাপ্ত · · · ·	
अश्व कांक अ मूर्ल विवत्न गार	
अब कार्यात क्षकि शिव्य द्वाप	

দোপরের পুজ ভার্ব্যাসহ বাটা আগমন • • • • •	* K
ভার্য্যা শোকে পত্তির বিলাপ · · · · ·	કું છે કુ
নাধুলুভের স্তবাস্থর প্রাণ পরিত্যাগ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	84
গ্দাগর সকংশে প্রাণ পরিত্যাপ · · · ·	\$
াজার মধ্যম পুজের উপদেশ ····	28
লমুত ফল ভক্ষণৈ উপপ্তির মৃত্যু · · · · · · ·	80
উপপত্তি শোকে নাধু ব্রীর বিলাপ · · · ·	45
ক্ল ভক্ষণে উপপন্থীর মৃত্যু	CD
স্থাগরের বিলাপ বর্ণন ••••• ••••	à,
विमारिमारिम छक वध	00
नाम नामीत विवास स्टमा •••• 2 ••••	3
क्न ७ करंग नामीत लादगा व्यक्तांम	29
রৈ পরিচয়ে সদাগরের মৃত্যু 💮 😁 💍	de
বচারে রাজার সবংশে মরণ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	ă,
धश्टब्बत विनाह	839
१३ घटत कना। इतर	**
রিসমূর অর্থে দেশে ধমন · · · · ·	W.
মেধো ক্লা দৰ্শন এবং ৰূপ বৰ্ণন ····	A
্রগর কন্যা বন্ধুগণ নিকটে দুভী প্রেরণ 💮 \cdots 🔻	b :
श दक्षान ममानादाद वाजि शमम	88
াগেরের প্রশ্ন জিক্ষাস: ও নদী ভীবে পমন 💎 😁	4
শ্রের উত্তর নদীভীরক্ষ অক্মি বিবরণ \cdots \cdots	800
।।। শীর ধুবতী সহিত কথোপকথন ও রতিদান ভিক।	1
बिराय •••••	*
ৰভীর সম্পাদীর প্রতি উত্তর · · · ·	26
মাসীর প্রভাতরান্তর চাতুর্ব্য ভারা বুবভীর ধর্ম রক্ষা	1
াধুপুত্তের অকস্মাৎ মূর্ক্তা বিবরণ ····	9
।। यहीन। शृद्धत्रपुरक करल दिनक्टन	9

্যষ্ণীর ভ্রাতার সহিত দরশন · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	نى ،
দপাঘাতে সন্ন্যাসীর প্রাণ পরিত্যাগ 🗼 \cdots	9
রদাধ্যের কন্যা সর্গ্রান্তে প্রাণ পরিত্যাগ 💎 ⋯	9%
হলুগণের রত্নপুর গমন ও নগর বর্ণন ••••	90
শ্বথ রত্বপুরে দেবালয়ে রাজ কন্যা দর্শনে বিপ্রস্কুরে	চ র
া বোহিত """	45
গরিবন্ধুর ৰূপ দর্শনে ৰগায় খানীর খেনেকি 💎 😶	" · 9 b
গুরিবলুর রাজ সভায় গমন 💎 😶 👓	· Þ.
ষ্ট্ৰকা বিপ্ৰস্কুতে এশ্ব কিন্তাস।	73
মহো ত্তর ও চারিমুগু বিবরণ ····	جو .
क्षे कालस्य नक्षांनीत व्यागमन	· · · • • • • • • • • • • • • • • • • •
লবির দেশের রাজা রত্বপুরে মন্ত্রী প্রেরণ 🗸 😶	58
 खो अर्था निक्छ इटेट पिनांत इटेग्रा श्रृनवात १ 	Į ę
্ল প্ৰবেশ ও উপপ্ৰতি দৰ্শনে খেদ 🗼 \cdots	64
াক্টী রাজ্যভার গমন এবং কারাগারে বন্ধ 🗼 · · ·	49
ব্ৰষ্টার লিখনে গর্ভ মধ্যে গির্ভ বিবরণ 💮 · · · ·	*5
ক্রিয়াভার পুজের বিবাহে বর যাত্রগণের ছুর্গাভ 👵	··· @
इतिकाम प्रकेश विवतन	_
🗿 ক্রতি রাজা তুঠি হইরা হেডু জিজানা 🗼 · · · ·	ክጸ
क्षीत्र खीत्र रिनांश	es .
্দ্রীর ব্রী উপপ্তির সহিত মৃত্যু 💎 💛	79
विषकनाति विवाह मध्या	A
क्रिक्षपुरब्धित विवर्षक् नमदश् कम्या इत्रव	55
विविश्वास्त्र व्यवसाय यूडना	> 6
্রা ব্রাজ্যে গমন এবং তাথকার বর্ণন	303
হাজ্যের পুর্ব বিবরণ জনণে পাত্রস্কুত প্রসায়ন	>+8
শাৰাণ সূৰ্ত্ত স্পৰ্ননে পাৰাণ হওনের বিবঃ	19 >.6
माना शोवां। त्रह देशक पुक्र ६ छीत व्यक्त	

রাজপুরোর পলাবার চেনী। ও কন্যার প্রবেখ	£ 24
लाकांत्र श्रक्ति महीत जेभरमभ	>86
চিত্রকলার স্থানে চোরের সন্ধান প্রাপ্ত	38
टक्षांद्रथत् विवत्	163
রাজপুঞ্জের বন্ধনেতে কন্যার খেদ	300
রাজপুত্তকে করিশিতির বন্ধ	300
রাজপুরের ভবে ভগবভীর আরমন 💢 👵 🙃	争为之
রাজপুত্তের স্তবে ভগবতার আসমন এ	784
বাজপুজের কিবাছ	74.
বাদসুত্র হলে বিশরীত রতি বাঞ্চা	2 43
ताबक्साति वांच कै	7.85
রামপুলের দেশে যাতা ···· ··· ·)wa
नां क्रेनांद्र विवर् ও वां अभूटक्षव यटर्स नम्म	194
ভারধ্বজের বিবাহ ···- · · · ·	390

ই'ত স্চিপত্ত সমাগ্রঃ।



वन्त्र ।	어행	3
বুকুমারীর গর্ক গ্রন্থ বিষরণ	*****	203
গিরের পুত্র বিবস্ত্র রাজ্যে গমন	* ***	222
গিরের পুজ বিবস্ত রাজ্যে গমন রাজ্যের পুর্ব বিবরণ	****	222
্বুর ত্রিনেত্র রাজ্যে গমন 🗼 · · · ·	1	22%
भू पुरस्त जोत व्यान नान,	•	27.0
धुस्राप्टत खुष्टिका आख		228
গুপুজের বিবাহ	• • • •	754
अस्ट मध्यारम्भ शमन अवः कथाकात वर्षन		228
রাজ্যের পুর্ব্ধ বিতরণ ও উষা হরণ এবং বাণ		
লক্ষ্মী তাশি		272
শর্জার দশদশা 🐞 \cdots	- •	252
রাজ্যের প্রবংশা		7,2.5
#ধ্ব ভার্য্যা সহ মিলন		259
क्षमुख्य क्षामाकुक्क (मट्म ग्रमन	4.4	754
লপুন্তের পহিত দুতীর মিলন	****	259
ात्रितं कनाति क्षेत्रं कनाति क्षेत्रं		700
क्षिमाति गर तांकर्युख्यत सान हत्त मर्गन		205
निमी गर गांधुकनारि क्रांशिकथन		700
শিপুজের সাধুকন। সহ বিবাহ		208
ক্ষুত্রের শারী সহ কথোপকথন		
ख्यू ख्वत द्या गह मिलन		
অপুত্রের কান্যকুল্প দেশ হৈতে চিত্রকর্ণে গমন		
अंजिभीत वित्रक् दर्भन	144.0	702
विश्वास गरिष्ठ के कमानि मिलन	****	₹85
अर्थका विवाह	* • *	280
अनुद्राह्मत विचार सन्दर्भत नत्सान	41-44	>8<
क्ष कमात्र पुरत पुरूषित्र कथा खेवन करतम	****	286
ाकादन ब्राचात्र कन्मागादत व्यटनम	* •	À

त्रिकत्रश्रम।

योक दश्य यूनित का कि ।

বাজা চন্দ্রদেশত উপাধ্যান :

চৌপদী। নম: জন্ম নিরাকার, নিজানন্দ নির্ফিকার, সার্চ-ার পরাৎপর, পরম। প্রকৃতি। তেকঃমা মতান্তর, বাক্য । অবেগাচর, বাংগ্র বিশ্ব চরাচর, নিম্প্রর ভিতি।। স্বরভঙ্ক তে হত, বেদ বিধি অবর্ণিত, আ্যাক্রেণ গ্রেছে ভিত, অলপ্ত কৈতি। একে প্ৰক প্ৰকে এক, বিশ্ব বিশ্ব বিনায়ক, চর্চত্র স্তারক চনক আক্রতি।। সুলাধিক সুলাতর, ক্ষীঞাদিক 'ণাকর, অধো উদ্ধ নিরস্কর, চমৎকার গভি। নচকে দুটির র্ঘ্য, নকরে কারণ ধার্য্য, কাংদহে ব্যাপীত রাজ্য, বিশ্বপুঞ্জ ত।। ভাঙ্গিতে ভক্তের খেদ, ভবে মাত্র ভাব ভেদ, অভেন হিক ভেদ, শাকার মূরভি: শাক্তের শক্তির আদ, দৈবে াশিব দাস, শৌরে সুর্যা সু প্রকাশ, ভাবেতে ভক্তি॥ অ-ৰি জৰিত জন্ম, ত্ৰজো জানে ত্ৰজনৰ্গ্য, গানপতো জাৰি ।, কহে গণপতি। সুচাতে, ভবের ভার, বক্তমভ ভারভার, াবারে শক্তিকার, এ সব ভারতী। পঞ্জুত সুবিকাশ, স্বর্গ । জলাকাশ্ধ ৰত্নি বায়ু সূত্ৰকাশ্, ৰূপে প্ৰজাপতি। সঙ্ ः खमजन, हेक्टिक वित्यत नतः, अनात्रादम नृष्टि हतः, अ ात्र विक्रिया मतत्रको भाककती, या ताथा मा क्याकती, মাতা বেদাধারী, দক্ষকন্য দতী। লোকপাল সহস্রাক্ত

मिव नह रक हक, केवाणांत रह माक, एकटका काछ।।
कि वहित हमदकाह, काटकर कहाई, नामि जाह वाह ताह,
कि वहित कि हि। करह एको एक काम, जिल जाह वाह वाह
कि वहित करह कराम, मा शाह मिक्क हि। कि कहित
शून बार, केटल करह कशमान, मा शाह मिक्क हि। कि कहित
शून बार, के कूल उ कूल बाह, ककूटल काकूल काह, उनाह
कि विश्व हि। कि कि समाध स्था हिन्न नवपन, नमीहरत
कि हि नन, नाहि एम गाडि।। सम करत माहकल, कहरह कारिहा मेंडा, कहान शुन भहमाध, हिन्द मिटा वाहि। ना कहरत
कुल, क्वानंदर भारत कूल, कहर है हिला वाहि। ना कहरत
कुल, क्वानंदर भारत कूल, कहर है हिला वाहि । ना कहरत
कि हि।।

গ্রন্থকারের পরিচয়।

প্রার। ভাগীরথী ভীরে ধাম দাঞ্জহাট আম। শিষ্ট জাতি অনেক বৃহতি অনুপাম।। মহারাজা তেজচন্দ্র চন্দ্র কিনি ভেজে। বিরাজিত রাজধানী বুর্তমান মাঝে। তার ধর্মা, কমা যত শাতে এ নংসারে। বর্ণিতে বাতুলা সাড়ে কি কর ৰিস্তাবে । বিপ্ৰ কুলোডৰ রাজ অধিকার বাদী। ধনা মানা পুণ্টে বিনাশিলে পাপ্রাশি॥ এীযুত বৈগুলাধ ঘোষাল নাম খ্যাত। দীন ভিৰে অল্লদানে তোখে অবিরভ।। ভাচার তনর শ্রীগোপালচন্ত্র জোর্ছ। নাকাৎ গোপাল ভুল্য দান্ত শান্ত শিষ্ট।। মধাম জীশিবচন্তা শিব সম সতি। অসংস্থাৰ নাহি রেখি সদাচার লভি।। সর্মগুণে গুণান্থিত লাপ্তেতে বিদান। अमा यन मनानार्थ महं कानवान ।। हेरी निके पिकेवांका मन। े कुंके बन। पत्र। भारन भीन करन रहारव अञ्चल ॥ जात अङ्ग-अके विक मीन दीन कीन। कल दीन कक्षानात्र विन वास भीन।। बाद्रिक्ष कुरमञ्ज बन्ध धर्म शैन अवि। आह्य माज निवशन জ্জারতির গতি।। জগ্রহীপ নবদীপ জমুদ্দীপ মাকে। তার मृद्या मधाकील अधिक विहास्त्र।। छेखेत शूर्ट्स छा भीत्रश्री ्रिमाचा हमरकात। पाजूना कृतना कुना नाहि तिथि जात॥

রাসকরজনা :

গাছীপ মাজিদা নামেতে আছে নার্ড। তথা বাস দ্বিক তার গাই অমুগত।। প্রীবুক্ত জীবরচন্দ্র ছিলপ্রদান। তার ত অকিঞ্চন রাজনারায়ণ।। ভট্টাচার্যা উপাধিছে আছমে কাশ। এই গ্রন্থ প্রকাশিতে ইংল জভিলাব।। শিবচন্দ্র গাধাল দিলেন অনুমতি। ত আদেশে রচিলান ভাবি ধরতী।। অতথ্য এই মাত্র মম নিবেদন। বিবেচনা পুণ্ড বিশ্বা গুণিগণ। স্বীমজ্ঞানে শ্বিবেন যথা প্রাছে ভূল। প্রজানে অকিঞ্চনে তব্ অমুকুল।। গুণিগণ গুণ মাত্র করে। রিশ্রণ। যথা হুণ্ডে নীরে ক্ষার করের ভক্ষণ। এইমাত্র বিদ্রা ব্রিকা প্রিয়া গণিগত। ভাষায় ক্ষিকা নাদ্যি জগতে । দিত।।

असु कुरमा ।

ত্রিপদী। বৃদিদ : জন মাস, আফু রুম ওংবা্দ, চিফটভদ ধুর অধিক। রাদদের রুদে মন্দ্র করে রুদ ইফীপর কারে। क इठेटर दिनक ।। सरदश अपूर्ण ४, ब्याट्स श्रद्ध । अयः ধার্দ্ধ এম যায় দূরে। গ্রন্থকাপ শশবরে, প্রেমচক্ষ্র ছীপ্র तक अक्रमुटके मटनाकृत्य करते ।। तक्रभूत आरका थाम, ताक्षः ।খীবেজ নাম, অনুপ্র অন্যের সংস্থান। পূজ ভাষ্থাক ति, गांखभिक गर्नाहात, मांख भाक क्षणाद्य मां छत्त ॥ धर्षा র্মে সদা মন্দ রাজকার্যো অযতন, দেখি শিহীধান নরপতি। জ বিভাদিতে চায়, পুজ অনুমত তায়, আইলা মার্কণ্ড মহা-ि।। শिथीश्वक छम्खरत, श्रांनरत कानाम करत, कर निक ংব বিবরণ। শুনি মুনি রাজস্কুতে, ডাকি কৃছে আন**েদ্বতে,** াঞ্জুত কহে ততকণ।। নারী বহু দেশ্যবুতা, কহে নারী দেশ্য था। अनि श्रीन कटर भूनकीत । तमगीत छन एक, दहरू াছে অৰণিত, কেন বৃদ্ধি কে দিলে তোমার।। এত নাম मिताक, कहिरह मात्रीत कार, गाविजामि तछी नगम्बी ागांत मध्यांत मारवा, नांती मांत किया कारा, पर विचात माहिः

का जालि।। य जारन नातीत मर्फा राहे ग'रप मर्कावर्क, তবে এক শুন বিবরণ। পুর্বেছিল এই দেশে, কহি শুন নবি-भारत, मारी कार्य। नार्थ ताई छम।। आहित्र। मगरत थाम. রাজা চক্রবেন নাম, রাজ্য ভার অভুসঃ আবীমা: ভার পুত্র দৈৰণতি, বনে গিয়া সহামজি, হোর এক নাবী মনোলা।। ধরিষারে ধার রাজ কন্যা অভিধান হর, ভাব ক্রেপ হয়ে উচা-টন : নিশি অবসান হৈলে, বন্ধুগণে ডাকি বলে, চল সেই कमा। ऋष्ट्वण ॥ देनव देनठा छेन्यान्यं, क्रमा कथः मनिरम्य রাজপুত্র শুনিয়া গোপনে। সখা তিম জন সঙ্গে, কন্যাত গ্র-भटक हर र, मकरमटम जरभ हाति करम ॥ टेम्स कर्म व्यवस्था, পথে সুখা তিন জন, তিন কন্যা বিবাহ করিল। এক মরে বর্পাঘাতে, নিশাদর গন্ধকেতে, আর ছুই কন্দাবে ১ দিল।। मिक निक्र माठी भारक, पितामण चूना स्मर्ल्यका ७ ०: २० ल গমন। রাজপুত্র সুচিল্লিড, ভাবি আত্ম সুবিহিত, কানাবুলাল গেল ততক্ষণ ৷৷ এক মালিনীর মরে, তথা গিয়া বাস করে, ভখা এক কন্যা বিভা করে। মালিনীর রূপ লাব, ধার কুনা-রীর বিস্তার, যে প্রকার বর্ণনা বিস্তারে।। স্থার তার তিন न्द्री, खरम (तथ अका अका,कति निज माही व्याह्य । ज्ञित्स्य चिरञ्ज (नम्, नानी द्रांस्त्र मियाम्ब, मर्माएम् कदिए वर्गन ॥ পুণা বলে ভার্যা। পেয়ে, শশুর স্থালয় গিয়ে। ভার্যা। রাখি রাজপুত্র আবে। একে একে তিনজন, করি বছ অত্থেষণ, মিলিলেন রাজপুত্র পাশে। রাজপুত্র তদন্তরে, আকর্ষনী মন্ত্র क्षाद्र, ऐशनीक विभावत शादन। त्माद श्रीन गविद्यत विक्रकर्भ नाटम रमम, তथा तांका किखरमन देवरम ।। नक्सरक्रत নৃপমণি, তার কন্যা চিত্রাজিনী,সেই কন্যা অভি গোপনেতে। রাজপুত্র করি পতি, উপপতি রূপে হিন্তি, জন্য কেহ না পার व्यक्तिया । व कथा व्यक्तान देशन, सरकोनात करन इतन, विक्रिपुरकं हिन कहिनशास्त्र । क्यांत मरनदक एकरन, कर्ना- वानि करण छरव, महां छरत कालो छव करते।। एक क्रुः १ कथ-द हो, जारक मरव मीखगंकि, लर्घ रमशे रनवर्धिय मरन। माळ-करत कालोकारत, मनि शिशा तां क्षणूरं, भूकिक्या कहिल। गांधरन । छनिम्रा नृशांक छरव, जांलम मरमरक क्रिक्त कना। व मरिक विका किल। किकू मिन छथा तरम, जांलम यूनके गर्य कांनाकुरक नाती नथा निला। धार्म करण गांतकम, लर्ड निक् मादीशन, निक रमरण करिल शमन। मनि क्रिला छेल्सम, कांम्यरक जावन्य, करिरलम तम्मी छाइन।। मानामक हे छि-हान करिराम क्रिक्त क्रिक्त तमत शक्कि। रमांच छछ् हर्य क्षण्य माना सहस्य जांमात गिन्छ।। जां श्रेष्ठ क्षण्य माना सहस्य कांमात गिन्छ।।

ভিপদী। রকুপুর রাজ্যে ধাস, রাখা শিথীধকে নাম, রাখ नम क्षकांत भागरन। नर्स खर्प रूपधाम, अभ स्माजा सम काम, यम नम फुट्फीत ममटन । धटकां धता नव दीह, विकास तर रयन नीत, सूर्शकीत तुरक्ष शिकु गम। यूरक क्वांत्रणी आंत्र, ना ভরে কালের দায়, বছ রাজ্য পণিতে অদীম ।! ক্রি কুলে।-ছব রাজা, রাজ্যে রাজ্যে শুভ এজা, মহাভেস্কা থেন দশানন। शुभाकत्रके धना धना, नल मम कालभग, नाला महावानित गमान ॥ महासिद रमया सङ्क भद्रम देवरध्य छङ, भन्ने छन्युक तिहे जूल। जात तानी लख्डांवकी, जानकी नमान नजी, खन-ৰতী রভী জিনি ৰূপ।। সদা ধংশা মতী সভী, পতি প্রতি মৃতি পতি, রভী ফিনি পতি পরায়না। ছংশী দীন ছিজগানে, ছুবে বদা স্বৰ্ণ দানে, পুণ্যা যেন মলের নলনা ৷৷ ভার গত্ত্বি ভূলক ভির, তিন পুত্র হৈল ধীর, জ্যেষ্ঠ পুত্র নাম তাত্রগ্রহ। বুদ্ধে इरम्म कि प्रमः युष्क्रतक विकीत यम, मना काम विक भारतका। जाम्मानाष्ट्र मिर्श्वनास, बलवत्र खनवस, मना कर पर्यान् टेश्टा एक्स्पन छत् स्थान, मीन चिट्य मन्ना मान, नाकि सम गणाचिनात्वरम् ॥ छेश्रयुक्त सथि बाद्धः विश्वीक्षक स्था-

६४६, कन्य **अ**स्त्रियन[®]कति श्राम् । छे**रमांश कि कव ए**ड्रि, हाइका मिला ममाहात, निमालित विध क्याजिशत ॥ मुश्यत ভদভার, আজা দিল অস্কাপুনে, পুক্রে হবিদ্রাদি মাথাইতে। শুনি বিবাহের কথা, পেয়ে পুজ মর্করাথা, কহে কথা পিতার থাতোতে । শুন শুন মহারাজ, কছিতে শুনিতে লাজ, একি অবিচার ভাষা কর্। অনা চিন্তা নাহি আরে, দিরা চিন্তানি পার, না কবিব দার পরিগ্রহ।। ভানিতা সংসাব ছার, মিছ মামা মাত্ৰ নায়, আখার আমার বলে সবে। অধিক কি ক আৰু, পাপাৰ্ণতে নাহি পার,নিজস্কুত্রে বদ্ধ বুক ভেৱে। শিখ হাক মত ৰংগ, ভাৰাৰৰ নাহি ভূলে, ভূপ নলে হৈল এটি দায়। হিন্তে হৈল বিপ্রীভ, জ্ঞাতিগণ নিমন্তিত, সুনিশিতত ন দেখি উপায় ৷৷ তবে যত মুনিগণ, পায়ে নুপ নিমন্ত্রণ, আগ মন কৈল রাজপুরে। ভাবিয়া না পায় স্থিত, নৃপারত নদক্ষি प्रक्रिक् मिल मेराकारत । इन्हें स्ट्रा विक्ताने, नृश्वित अ জন, কেন হে রাজন ক্রুখ মতি। তবে নৃপ গোড়করে, হুংডা स्टब्र महाकाटदा कार मेर देनवाधीन शक्ति ॥ श्वीन सुनिधन क हिन्छ। रूद कि कानम, आंनश् नन्मन जासमर्छ। हिट्छ (क निभरीक काथा शास इन मोड, मोड मिक निन युः রুজে।। শুনি মুনিগণ বাণী, তদস্তবে নৃপ্যণি, আংজঃ দি আনিতে নন্দনে। আজা পায়ে দাসগ , রাজপুত্রে ততক আনিলেন সভা বিদামানে ৮ ডামুগুল নত শিতে, প্রণমি প্রাকারে, যোজ্করে দাগুরে রহিল। মুনিগণ সম্ভাসিল, দ্ বর আহে। দিল, রাজসুত সভার বসিল।। মার্কণ্ড নামে রুনি, সর্কবেন্ডা অতি জ্ঞানী, যুবরাজে জ্ঞিজাসা করিল। দি গন্ধ আৰু মতে, মুললিত ত্ৰিপদীতে, রাজনারারণ বিরচিত

মার্কণ্ডের প্রশ্নান্তর রাজপুজের নারী নিন্দা বিবরণ।

প্রার। বুবরাজ এক কায় ক্ষেত্তপোধন। পিতৃ ভা

काविका करतह कि काहर ॥ এত छनि के न वासी ठालक কয় । কি আছে৷ হেখন করিয়াভি মহাশ্র । মুনে কিন বৈবরণ कड़े खन खामि। कि कारण औं शहर माहि कर क्षित । रीन-कन्न महाम्य कहे मान एटवा श्रांतका छोडक सूर व्यक्तिक Coca ।। क्ये क्रियाब कायि याहेश मन्मार । कर्म छिन धाना क्या कर्या कानिहात ।। शाकिएक मनम १९८० अना कर्या यम । यथ। त्व केंग्रू स्टान छुन करखुरन ॥ (यम नीत लक्ष) स्थ कांश्वन वरता । ताहे अल खट्या पर व गरीय छटा । जामांत সুনার নতে আমার আমার। ছার। প্রভাগে লয়ে অংনক্ষ জপার।। দেখিয়া বিষয় স্পৃহা পৃথী পুলকিত। সিরেরে শমন খণ। সামকে যোহিত। আমি কার কে আমার মতি কার व्यादमः कोकुक प्रिक्षा कावा किएम वित्र शास्त्र । अनक क्षाहक सुर्छ (धन नाम क्षार्ता) (कोड्क कराम एक ५४) कुइस्टल ॥ जनक गढम (प्रियास अंदर कोता। काह सूर করি কোলে হত কর মার।। মিছা মার সায় মোহে মঙ্গা-ইলে নন ৷ মুখ হৈয়া মায়াপাশে মৈত্র আশে নন ৷৷ তাহাতে ইন্দ্রিধ মত্ত করি রূপ ধরি। বিষম বিষয় বনে বাঞ্চা সদঃ কিরি।। অক্ষুণ প্রবোধ বোধ জাছে মাত্র ভারে। বৈশ্যক্ষা उष्णु जारू वाकिएक ठाहारत ।। विषय विषरत्र दश देहन अक् বার। আর ভার বান্ধিবারে নাধ। আছে কার।। ভাহে আর नाती छात्र कर्ष्य कर्माठाती।। सूद्ध करत मनद्दत कर्षे।एकरक रलंड ।। <न स्टब स्ट्रेंबा क्यो इस रणवा मछ । काम कारन वारल শেৰে মন ভূকৈবৰ্ত্ত।। সেই কালে কাল পেয়ে কালে ধরে क्टम। महाक्टिम कटनय यष्ट्रना स्मन्न स्मारव ।। शाश्रीहानी নারী হৈতে পাপের সূজন। অঘটন ঘটাইতে ঘটনা ভিত্তনাম সর্বাদা কপটবুজা সর্ব মায়াময়। অবিশাদী পভিদাশী পর সক্রের। সমত সভোগ ইন্ছ। নাহি পদাপর। বন্ধুকেন विष्कृत कथान मित्रखत। मात्री देशक कात काथा किंदून एति कहि कर देवछात्रन। जोरनापि ताकन नतः स्म निमान्यानि कहि कर देवछात्रन। जोरनापि ताकन नतः स्म निमान्यानि कहि कर देवछात्रन। जोरनापि ताकन नतः स्म निमान्यान । जिल्लाक छात्रन कर्षा स्मिताम कार्यन। जनकनिमनी स्मिता अने अन्य स्मिता अने अने कार्यन होता । क्यां वित्य होता । क्यां प्रकार कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या क्यां कार्या कार्य

शक्राक्षत्र सुनि देश्य जातीत अन्तरा :

श्रम्ब । युनि बद्ध त्य विकास मुक्ति अभाग। किन्द्र मार्ग दिन जिल्लवरम नाहि द्यान ।। जीवरम् भवरण नाती नाती राज्यकाल না গানিয়া নারী কেন ভাবিত অঞ্জাল।। শক্তি ৰূপে দক করিলা বিভেবন। এতা। বিষ্ণু নিরিঞ্চাদি শক্তি হতে হন।। লক্ষ आंद्य निकीनांथ इन नक्कीरसः। गर्णम समनी जना नि গৌরীকান্ত।। নারী জলে দর সূর রাবে নারায়ণী। নারী জ मदा शक्रा कनुम नानिमी।। य कहिटन तावशामि मदत मा बार्ट्स । शहनाही त्वाल शार्ट्स गरत कर्य त्वार्ट्स ॥ शूर्वंड बांच मनाकरमद नगरत । नौका मठी देशक निम क्षांन दें কৰে।। কহিছে নারীর গুণ কি সাধা আমার। বাংকাশ্ব बोक) प्रात्ताहत सन योत ॥ त्नव त्नव इम्र त्नव कहिरल कथा। शक्ष्मुर्य शक्षानम हजूर्य थाजा ॥ कथाह निक्षि व ৰা হয় বৰ্ণন। শক্তি প্ৰকি ভক্তি জানি মুক্তির কারণ।। সং बुर्भ महाराम नाविजीत खर्ग। तांका खांग खांख देश्न न देवत स्थारन ॥ इत्रांति इरतत त्कारण काविक कौरम । श्रु वीत द्यान शांत्र मजीत कातन ॥ मनताका त्नल बरम बन ः मरकरकः देभवरक्दत्र काटक काटत कतना मरधारकः।। देवधरः 👵 आब मछी देवरदग्रस्थ राज । भूनसीत विका हरण प्रश्

तिविक्तक्षन । 🞖

शहिता हिन शंका नकार्य इग्ड मुश्रीत। अङ्ग्रता राह ভার ভার্মণ ৩৭বটী ৷ ভার গর্ত্তে পুত্র এক হৈল শিক্ষমতি . ভারত ভারত্তমধ্যে থাখিল মুখ্যাতি।। অন্যাপি ভারতবর্ষ পৃথিতীর নাম। পুল পুণে। নরপতি প্রান্ত মোজগাম।। যার্ম অধ্কাম নোক লাভ নাটা হৈছে। ধর্মা ছদ্ধি করে সদ্ থ কি স্ব হেছে। অর্থ চৈতে পুত্র প্রাপ্ত হেওঁ লভা করি। পুজ প্রয়োগৰ পিওদান মাত্র মানি ॥ অহিক পার পারতিক নিভার কারিনী। অহিকেতে সুখ অভে জ্বাধ বিনাদিনী।। साभी दशमारम परि पर्याखालांग्री, मरण: काल्पिया भारत ন্ত প্ৰানী ৰজনাৱে ৷ সামী পুঁজ কুছ মানুহৰ লেই জৰ : প্রায়ে সংখ্য বিকাস ভারে **মু**খাবক্রোকন । প্রতি রুভে স্থাস,কর্ কৰে জানিবত। এই ভাগ পাছে হয় পতি বা বিহত।। সুখে स्थी प्रतास प्राची रहा पाल कारत। स्वीचिक लोकिक लाक यक्षां উद्धारत । अधि। नडे बद्ध बाहि द अन सफारम । सहन भूथ % पु मत्र मही खारा। खारा ।। इहेरन तालाहे एडि कहात धिक्षमः। । ७८६६ मदन <mark>यदमाङ्कश्च व</mark>हित्तक ग्रांदवमः॥ । वहः व्याष्ट्र किया क्यांचा वसूत कांद्रया निज यात्र स्वीत गर्या कर्यय नामम ।। तकू देभटम छूनी वटन दश्य दश्या मीनतः। नातनितः পুনর্বার হরি হরি ক্ষরে।। পৃতি দৈলে লয়ে দেলে ভাগন্ত ভিতার। ভালি জন্ন শতি মধ্যে সূব্যে ভার্নে যার।: পঞ্জ মহা পালে পাপী হয় যদি পাছি। নিজ্ঞাণে শ্বলা নিয়ারে গুণ-वटी।। यामजारि जान कुटनं गस्तः २३(७। ४ठी भिष्ठ मिह মত নিভারে পাপেতে॥ বার্ছ রিকোট লোম মানব দেহেতে।। তত ধর্ষ পতি লয়ে পাক্ষের হর্নেতে।। শেই জন নারী গুণ আহরে বিদিত। সর্ব কর্ম সাধিবারে পারিরে निन्दिष्ठ।। हरक्षरंगम दोखन्त्र् विषय यून्तद । वङ्क द्वार धारा ৰারী নৰার গোটর।। ভাবিয়া ভার্যায় ভাবে এমি দেশে

मा। छेशनी छ देशने भिष शक्त स्वित (मर्गा। छथात्र निष्क नात्री शक्ष सं निष्म नी। ताजभूख स्निवत्त करण अछ छिन। २ हेशा मन्या नुभ कर कि अकारत। विवाध कतिभ शक्त स्वित् जिल्ली है । जिन बरल छन राहे अभूक्त कथन। भन्नात अवस्य वर्ष कस्नोत्। स्वा

-

রাজা চন্দ্র সেনের উপাধ্যান।

পরার! অচন্ডা নামেতে পুর্ব্ধে আছিল নগর। মনো রণ অনুপ্র কিভিচরাচর।। তথায় নিবাদ রাজা চন্দ্রসে নাম। শাস্ত মতি নরপতি গুণে গুণধাম।। সর্বর পুজা ক ताका वीनं।वस धीतः मका वात्का पृष्ठा विमन ध्विकित श्वानिवार्या शतकारमा मना छेशकात । मना देवमा ब्लोटब स्र সম তেজ ভার।। এবং লাজে বিষারণ সর্ব গুণান্বিত লেবিদ্যা থলুবেদ সম্ ন্তুশিক্ষিত।। শিষ্ট জনে মিষ্ট বাবে জুই প্লাগৈ মন! ছুইজনে ক্ষী দিতে যেমন শমন।। পু क्षांटन श्रकांशट शिल नित्रस्त । इर्र्याधन नम मान धर তক্ষেন্র।। অপরপ রূপ ভূপ জিনি রভি পতি। বর্ণি সৌষণ বর্ণ বর্ণের ছুর্গতি।। জীবমুক্ত দেব ভক্ত শা मिरवायनि। मांक भरम एकि नमा एतेना एवानी।। नारि আনিষ্ঠ কার ত্রেষ্ঠ গুণে রাজা। ধন ধান্য পরিপূর্ণ রাজ্যে । প্রজা। দাত শান্ত নিতান্ত কুতান্ত সম রণে। ছঃধীজন ছ হীন অকাতর বানে।। সুচিদাতা উপকারী ক্ষত্রিকুলে কং थर्कं कर्त्या त्रमा इंड छांड १ स मर्का ॥ मान शान यक द्याम স্থানে স্থানে। শ্রেষ্ঠ মতি সর্ব্ব জাভি রাজ্যের শাসনে।। ছ निर्छ असे मान कराय यमि । नारीशाल शक्ति त्यवाम न যতি।। অন্য অন্য সান্যমান্য আছে পরস্পর। দে সমাজ ভুলা স্থান মনোহর।। প্রজাগণ জনুকণ নাহি পাণ हात। अपूना कृता जुना नाहि स्वि आहा। हनाव

নামে সেই রাজার রমণী। রূপে গুণে তিভুক্তন গুন্যা সেই। थनी।। मृतक्षकी मृदकी मृतमन शक्ष ताम। सदार तम भृदत्त क्ष भृताको भून क्षात्र।। भृष्ठ मधु मधु श्रीरंग नाटन अक्षकांत्र। मधु এনে মধ্কুর যন্ত অনিবার।। চাঁচর চিকুর চমণকার স্থা-ভিত। কাদ্যিনী জানি মনে শিখি পুলকিত।। িশিদ ইন্দি-वत जोत सुम्मत नम्रन। द्शतिक्षा कुर्यक्र टेकन अहटा धमन।।।। মনোহর পরেরাধর পীনোল্লত বুকে। প্রাণগত পাধাণ পাধাণ। হৈল ছঃখে।। সুলাবণ্য সৌবৰ্ণ শোভিত সৰ্ব্য মতে। অন্তপ্ৰয়। মনোরমা উত্তমা জগতে।। বিরস্তর নূপবর লইরা নারীয়ে : गांना शर्थ कोजुरक वश्रद्ध अन्तः भूदत्।। वर्शनन प्रूरे अने कतिल वश्यम। देनव १ हारत मृशक्ति मा इल मस्मम। दि कतिव कि इंडेरव किरम भूख इंट्य। विभि निधि नाहि निर्धः অন্য কেবা নিবে।। পুত্র হেভু নরপতি পরম চিশ্তিক। বিধিষত বছবিধ করিল বিহিত।। স্বস্তি সাস্তি স্তান্ণ নদত আর-ভিল। যত হোম যাগ জপ যতনে করিল।। তথাপিত্তাহে ज्**र्ध ना देश्त ऋख्य। निर्दानत्यः निरुख्य थ**्रक नृशदत् ॥

-

রাজার নিকটে সম্যাসীর জাগমন।

পরার। পাত্রমিত্র পুরোহিত গুরবাসীগণ। সর্বজন সর্বক্ষণ সুচিন্তিত মন।। পুল বিনে গৃহি জনে নাহি মনে পুখ। এক দেন নুপরর মহা এক দেব। তার মধ্যে ইদিলেন সিংহাসনোগরে।। দেবগণ মধ্যে যেন শোভে পুরন্দর। তারাগণ মধ্যেতে যেমন নিশাকর।। পাত্রমিত্র সভাসদ আন্দাণ পণ্ডিত। বসিপ্লাহে চারি পাশে পতি সুশোভিত।। হেনকালে তথা এক ভাইল সন্নাসী। রাজার সন্মুখে উপনীত হৈল আদি।। সুর্যা সম্বীর্যক্ত অতি বড় হতলা। দেখি অতি ভক্তি মনে উঠিলেন রাজা।। তহক্ষণে সমাদরে পালা অর্থা দিল। কর্ম হরে ভুক্তি

पत्म राष्ट्राभिने त्वितिले ॥ जानीकी म कित श्रेष्ठ व्यक्त अर्थ अर्थ क्य. কি নাম কি জাতি রাজা দেহ পরি১য়।। কর ভার্মা ক ্বাজ্য আছে অধিকান। শঙান সন্ততি কিবা আছমে ভোষার বলে। বলে গোসাঞি শুনহ বিবরণ। ক্ষতিকুলোভর ভা সাম চক্রেদেন।। এক ভার্যা বল রাজ্য সংখ্যা অপ্রথম। देव करल किस्र भांत्र नाहल नेष्मन।। ७ कथा धर्मि नपार ছাভ্যে নিবাস। এ ঐত্ধ্য পুত্র বিনা সকলি নৈরাশ রাজা বলে ইহাতে নরের সাধ্যাই। অতথ্য নিরুপা क्ष्म । भागांकि ।। ७ इ छनि मन्नामीत मन्ना छेपछिल। इ হাবে গ্রিমহাযে রাজারে কহিল।। শুন শুন নুপারর **আ**নি ফচন: কহিব কিঞ্ছিত আন্দি হইয়া গোপন।। আন্তরাজ: ग दत ब्लाइट इड्डा (काश्रम। जिल्लामिन कह लक्क मि বিবর্গ।: সম্লাণা মলেন রাজা ভূমি পুণাবান। কলেও ভিত্যুবনে না দেৱি মমান।। পুত্র হীন আছে রাজ। ভানি কারণ। শ্রোচিত বিধাদিত হৈক মোর মন।। ইচ্ছা য থাকে রাজা গুজের কারণ। নোর সঙ্গে সংগোপনে কা গমন।। নগরের পুর্কাদকে আছে এক বন। পশু পক্ষে। রুক্ষে করে সুশোভন।। সেই বনে ছুইজনে ঘাইরা গোপত ফল এক সমর্পণ করিব যতনে।। রাণীর ইইবে গরু সে হ জকণে। কিন্তু বাওইৰে ফল ঝুডুমান দিনে।। এত শ্ৰ ভূপতি হইরা হাউমতি। সন্মানীর প্রতি ক্রছে করি স্থ निका। अवस्मित अकि यहि अक मना देहता कांका देशन म बत्त विवास कि कुन ।। महाशि वालम ब्रांका ता रेका का अधिन योहें बतन देवल व्यक्ती भारत थक वर्तन हुई सन करि शत्रका अरविति अत्रा साद्य ब्रामा स्केतना श्रूम्य कुरभाक्त प्रविद्यं द्वमात् । असूशम महन्दित वर् ग्रहित स्वित्रं स्थिक स्था तम्मा । सम्बाह् नाटा कात्र ইরাসমু 🕦 হাবে হাবে নানা বর্ণে প্রাকৃত্ব কুরুম। 👳

কলার ভালি অভি মনোরম।: শত শত কোকনদ বিক্লিট करता कुछे करत मधुकरत समुमान मिट्या। अस् ८ तम सन् हरत मन्त्रवर्ग। धन धन स्टर नीन करत कर्या । कि कर कटलत (लांडा कि समांच भाग। ११० शर्मा प्राप्त सामि ভাহাতে বেলায়।। প্সাবদ সুখোদন মরেরের তীরে। মনাগুন নিবারণ পুষ্পাগণ হেরে ।। বিক্ষিত শত লভ মহিত। টবর ৷ ঘূৰী ভাতী বোলাপ বেঁউতি সালেখর ৷ অংশাফ কিংশুক বঁক বকুল বিভার । চাঁপা অবা চুয়া সেফালিকা মনোতর।। মুচকুন্দ গদাগালি কুন্দ শত শত। মালতী করবী शकः। ल कानि २७॥ करा मूर्ण पूर्विष्ठ काहरस उक्रभन। भाग मण्य तदह शक्ष भत्र श्रवत ॥ १८०१ ५८८ शील करत कूछ স্বলে পানি। ময়ুরেরতে নৃত্য করে বহু ময়নিবী।। নালা রহিল বিহাকে অংপন নকে গাঁছ। খন্তানের নৃত্য েবি নয়ন গুড়ায়।। দেখিয়া বনৈর শোভা মোহিড ভূপতি। বেনকালে সন্নাদী বলিল রাজা প্রভি: বিজুক্লের রহরাজা এই শুপাবনে। আমি যাব জনা স্থানে কন অন্বেষণে।। এ কথা বলিয়া ভূগে চলিল সমানী। পুলিবনে নুপ্তি ৮ হিল এই, বনি।। কড-कर्ण मिश्रवत यन नरा राट्टा छेशनी ह देशन यानि लोखात भाष्मारक।। कम्खरत गृश्रकिरत ममर्शित कन। ८निध कन ৰাড়ে বল ভূপ ঢলাচল।। ফল লয়ে হুঠে হয়ে নুপতি ভগন। সমাদরে সম্রাসীরে করয়ে গুরন।। স্তবে সুফী ভুগভিরে **अगःनि विस्तृ । उन्हा क्रहर्शन देश्ल मिश्रम् ॥ जन्नाभीदर्श** না দেখিয়ে চন্দ্রনেন রায়। বিস্তর বিলাপি রাজা করে খাই ছার।। বর্ণাক্তানে মোক ধনে না পারি চিনিতে। স্থানালেন ফণীনণি কাঁচের লোভেতে।। এই মত অন্তরেতে ভারিয়া विच्छ । निकालर्देश लेक्स कल हेटल जुन्नवत्।।

कन जकरंग तागीत गर्जुं स्थित विनत्ता । किन्द्रित तिन्द्रण । किन्द्रित स्थापित किन्द्रित स्थापित किन्द्रित स्थापित किन्द्रित स्थापित किन्द्रित स्थापित किन्द्रित स्थापित स्थापि

क्षान्त अवतम। श्रंतिकिश क्षान्यूत्व, जाकि निक महियी। दिवत्र १ ५८६ क्षेप्रांच ।। स्तिहा कटनत्र कल, इट्सट्ट लई कम, अन्तर्वक देशन महत्त्र सूची। छेडम्हाम् अनाम करत, प कटत मद्यार्गिद्य, यद्भ कन तात्थ हलामूशी।। दहनकाटन दे कटन, (भन्ने पिन नक्याकाटन, भन्दियो रहेन अञ्चली ! ख ভূল এ সন্থাদ, ভাবে মনে কি আহলান, সুপ্রাধে ছংখ অং হতি।। তার পরে শশীয়খী। অস্করে হইরা সুখী, সময়ে ক थाङ्सान । व्यक्त क्य क्यांचित्र । तकनीटक खनवनी, पुर्वात দিল রতি দান।। নানা রাধ রঙ্গে ভঙ্গে, সুধে ভূপতির সং बनाक विशाद वर सूर्य। अहेदाल किंदू निन, सर्वेषन। कन, इहिर्दान मर्ने देशेषुर्व ।। स्वश्वन देशवश्वि, व হৈল গৰ্ভবিতী, ভূপ অতি ভুঠনতি শুনে। হয়ে পুলক্ষিত क्दर त्राका विख्यनः (भग्न मान हृत्यी विक मीरनः। निका यत्नाङ्गाम, शूर्व देशव प्रनामान, मन्द्रपांक व्यन्द्रव नम्म द्दिवसा श्रू रखत सूच, यू हिल भरसद छू:द, मशमा महिसी अखेमा মুপতি ংবাদ পেয়ে, সন্তঃপুরে আগি ধেয়ে, পুত্র হেরে হ মনানল। কি কুব পুদ্ৰেব ৰূপ। মূলাবণ্য অপৰূপ, হেরি ট ভূপ চলাচল।। চন্দ্ৰ জিনি মুখ শোভা, অতি বড় মনোলো বিনাদীয়ে নাপে তম আলো। সুৰূপের কণ দুর, কন্দ দর্পচুর, চাংদেরণ হেরি চন্দ্রকালো।। মন পুপা বিক্ষিত, ব ভাতি আনন্দিত: নানা দান করে দ্বিদ্ধণে। নানা মহোৎপ্র, বিস্তাবিয়া কভ কব, অসুভ্র কর জানীলে শভীপুজা আদি ২৩, বর্ণনা করিব কভ, নানামত বাং বৰ্ণিতে। রাজা রাণী মনোলাবে, শুভ দিনে ষষ্ঠমাসে, ব **भन्न मिल जानरफरछ।। उड़िय जलकार**ह, **नाकारे**ल व बदर, जादर करत जादन सीखड़ेता। अदक अके सूर्यात्रेस, क व्यक्ष्म चांच्यन, सूर्यांच्य बर्श क्ष्म घडे।। এ क्यार क र्थमः वक्दलत मरनातमः ऋषठेम जिनि काम ठाम। (जा

विश्वास (एटक, ब्र'नि शहनन (नैटर) विश्वहरू कर्त्व किन भाम।। इर इक्षि निन निन, निशाकत कला यन, नकी सन मन কানদিত। হেরিরা পুরোব মুখ- ছুরে যার মনোজ্ঞা সলাই नुशकि शूलकिछ।। निरंप निरंप तिन शंक, अहे मर्ड नुशसूक, अदिनिल शक्ष्य देरमद्त । मृशद् सर्चेयद्य, निक्षी सम् कुक करन, सुभिकारक विराधित करते।। अधरास्क स्थानाः, প্রত্যতে ছাদশ কলা, কলামত রুছ্মি जिल्ला हिट्न। गाँगा कांचा क्रांत्रधान, शाकत्व चांत्रधान, शिष्ट्रिक वानिक सकेगरन॥ नह्वि शतिलारमः विना दक्ति कटम करमः दत्र महा प्रवान व्रष्टम। आश्रमाय कथा कता करना स्थिति जण्याकारण, विशेष बाटका जाग जूके यम ।। गर्क हैं वि धना धना, ८८० छनिशन माना, ख्रावना श्रुना कर्या तह। निका देवन हा बनीए, हिला-ছিত তুর্বিহিত, ভুপতির রীভ নীপ বত।। নিতান্ত সে দায় শান্ত, গুণবন্ত বলবন্ত, লে খ্যা ভুডান্ড গান্ত ভর। ত্রাসিড বিপক্ষালে, বাস্ত্রলে ভূমপ্রলে, করিল অনেক দেশ হয়। এক দিন ভাবি মনে, ডাকি নিজ বন্ধুগণে, সবৈন্যেতে নাজিল नकृत। नदम लद्य निकर्ष, मृग्तर्ग खासूनकः रिभीन तमन ভার পর।। শাধিতে আগন কাম- প্রবেশ অরণা মান্ত- রাজ भूख इत्रविक मन। भिवन्छ जल्माद्य, जिलारी विकास करत, मीन विक वाकनांताहः ॥

-

इक्तिश्रु एक स्था अस्ति ।

श्यात । वक् रेमना द्रांबभ् क जात्या क्षर्यमा । यूग वाख्य मातिया कृतिन द्रामा द्रामा ॥ एक्स्काटन स्थन अक रेमरवत्र यहेन । रहित्र व्याप्त अक द्राकाय मन्द्रमा ॥ यूप के क्ष्याय प्रिम हास्त्रित क्ष्या ना कृति वायायाच्या थाकेन युद्ध ॥ स्थारतारक द्राक्य थाकेन भूग स्थारतारक द्राक्य थाकेन भूग स्थारतारक । रहिन युग स्थारतारक ॥ रमकारन । रहिन स्थारन

্রাসকর প্রদান দৈকদলে নিশা আগমন ॥ ভ্রমিয়া হাজারপ্রত মুগ অন্থেষণে। कृतामध्य ष्यञ्चदय कांच्य सीराम ॥ एत्र चीक महिन्दिक ভাবিরা অভাব। হৃকতলে অশ্ব বাঁবি উঠে রক্ষোপরে।। **রক্ষেতে** বসিপ্তা জাবে ডা্ছার যক্ষ্য। ছেনকালে সেই স্থলে শুদ বিবরণ। আহিখিতে তথা এক আহিল যুবতী। ভাজি রতি রতিপতি তার পাদে মতি : কাম অঞ্জুরঞ্জ শেকুরঞ্জ नश्रमी। मुख्यारन एटनांनांटन महाक्ष रंपनी । कि कर कार्यात ৰূপ কি বৰ্ণিৰ জার। পুণ ইন্ডু বেশং বিন্ডু রূপ হেরি তার।। হেরিয়া কন্যায় কপ গোলায়নকান। মদনে নোহিত জাভ পুল-किंद्र रम् ॥ ४तिवाद्य कम्प्राद्य अधिया मदम मन्। नीखशकि **হুট্রতি নামে তভক্ষ**।। ইপ্রতী গে যুরভী বুরিচার গল। भृष्ट्रहाटन मिक्टिकाटम कृष्टिल रुजन।। है। इं। ५३ (सादत श्राटन प्रिच स्टार्स्स क्रिनाम नाना सूर्य यक्षित प्रकात । अञ् चिनि इतन होने युवही ७५म। ८४ है छोटन जहकर० देशन অদর্ম। রাজমুত চুঃখযুত কন্যারে না ছেরি। কানে তেলে काया (शदल निर्कृता क्रुकाती । हांस्र हास व्याप नाग कि मास भिष्ठत। निका निषि विधि वामी रविदा नहें ना। दानामान ছঃখানলে গিয়া নিজালয়ে। বন্ধুগণে ততক্ষণে কহিল ভাবিয়ে এবি বাখা ওছে সখা মন উচাটন। সখা বলে বল দেখি কি হেছু এমন।। রাজপুল বলে এক হেরিয়া কন্যারে। সুখ সাধে ৰূপ চানে পড়িয়াহি কেরে।। দেবি হানি কুবে ভানি প্রেম-काँनि भरता। अस्विवर्ग भारत रम्या भित्र हेश तरन । घड-এত থাব আমি তার অধ্যেষণ। মে'র সঞ্চেল হও বন্ধু গেই খন।। এত শুনি সম্মত হইল তিন জন। মন্ত্ৰীপুত্ৰ পাত্ৰপুত্ৰ বিজেরনন্দন। চারি মনে ছুলা ৰূপে গুণে গুণবান। জিছু-दरन बना बरन ना (परि जयान।। रताश्रदन काति बन्ध क-तिल नोकन । यस्प्रशांद्र नुप्रक्रित करत्र निरंदमन ॥ स्वताका **स**-মণে যাব দেহ অমুসতি। এত শুনি অনুসতি দিলেন ভূপতি।।

দিন ভির করি হাতা করে চারিলন। শিবচন্দ্রাধেশে চাচ বাজনারীয়ণ।।

विश्विक कमा अवस्य १ शमन।

ত্রিপদী। চলিলেন চারিজন, অতে করি জালোহণ, প্রথ भिषा श्रीकात उत्तरा । भटन व्ट्रेस (ब्राट्स) नामा, काला नाहि। ফুপ্রকাশ্যা, লাক্স্যুথে কনার সন্ধানে।। নিব দেশ কড়াইজ, অন্য প্রাঞ্জে প্রবৈশিল, মনে হয়ে ছবিব বিষ্ণা। ভাবির। এ চন্তায়ণী, পাব আদে নৰে সুখী, মিলনেতে ভাবিক্কা প্ৰমাণ (কিসে ২বে কোথা পাৰ, কার কাছে ফালে যাৰ, ফে যুড়াহৈ মনের অনল। ভাবিয়া কন্যার কপ, অভি বড় রসফুপ, সাংগ্র भूतमूछ व्वावन ।। अया विसा नारि कोर, दिवा निम्न स्राप्त-বার, তাহে আর চক্ষে বহে জল! ময়থে মংকিরা মরে, বাঙা हत्त क्षेत्रा ७कु, कार्छ तक मा दिह्न जरून ॥ समीव 🖘 প্ৰক্লে, কৰে ভৱিৰ অনক্ষে,ভাংহে অক্ষে কাম সু ১২ন।। কলাব চথা প্রসঞ্জে, ভাবে অতি মনরক্লে,মদনে নোহিও স্টাণ বল ।। শ্বত ক্যার কারা, ভাবে ভাবি ভাবি ভাবা, কেম্নে বে ব্য च्छा रहत । अञ्चारम आहर्ज, अशांभक नमा मंज, एस ালা কে মুক্ত করিবে।। জকালে বসস্তকাল, বিশেষত হোবে ণ্ল, ফান হয় যেন অন্তকাল। অশাস্ত রতির পতিঃ নাহি দিয়া সে যুবজী, যোৱে আতি ঘটায় জঞাল।। বসম ছুরস্ক ান, প্রাণে হানে সন্মিপন, তাহে মন হরিণ সভার। প্রাণ াম মরি মরি, বিনে ভরী কিনে ভরি, না হেরে হারাম বুলি গাণ।। দির। নিশি চুংবে ভাষি, তাহে আসি গিশি শশী, দ্রবি য়েন হারিছে আমারে। কোহিল পঞ্চম ভরে, সুমত ালায় যোরে, বিলেষত নিশাকর করে।। যে নিকে বিয়বি র্মান, সেই লিকে চল্লানুখী, কারা হীন ছায়া ক্ষাভিলায়। গ্রেল ন্মা প্রেম্ট্রাস, পলাইল রে ঝপনী, করি মোরে উদাসীন

माध्य ।। कियान शाहेर क्या, कह क्षि अटह मना, कि कति फ, बद्ध छेलात्र । जारतक महत्म हित्र, निल मन চूर्ति कति, এখন না হেরি প্রাণ দায়।। সধা বলে মহারাজ, কহিছে শু-নিতে লাজ, ধৈধা হও পদ্মেৰণ করি। চ্য হেন জালুভব, ঘ-টিবে অবশ্য তব, অন্বেষণে, মিলিবে সুন্দরী ॥ দেখ এই ভুম-'ওলে, বতনে রতন মিলে, কিন্তু তার মূল মাত্র চেফী।। পাতি-ে বুদ্ধির কাঁদ, ধরি আকাশের চাঁদ, পতি ছাড়ি সভী হয अको।। **ऋ**त्युर्ग दम्या करत्र, ध्यमाधा माबिट्ड शास्त्र, कि इन्त রমণী ভূচ্ছ ভার। বাজপুত্র বুদ্ধিমান, আছে সর্কশাস জ্ঞান, कानी रहेश ना रु अर्जात ॥ निवा देश अवनान निवाकत পস্তযাস, যাই চল নগর ভিতরে। এত বাল বিনাইয়া, রাজ-পুত্রে বুকাইয়া, চারি জন চলে ধীরে দীরে॥ প্রবেশিষা নগ-রেতে. দেখে যত চারিভিতে, ইষ্ট ক রচিত কত পুরী। জল-কুস্ত কক্ষে করি,করী কুম্ভ বক্ষে ধরি,কুভূহলে চলে যত নারী।। उन्सहत शति कना मटन करत विरवहनी, छेश्रनीं कक विश्व ছারে। সন্ত্রীপুত্র বিচকণ, সুপণ্ডিত সুলক্ষণ, ডাকে গৃহস্থামী আছ ঘরে।। এত শুনি দিল্বর, আইলেন সসত্ত্র, দেখিলেন প্রসিক অভিথ। পথক্রান্তে ক্লান্তমতি, দেখি দ্বিক দীয়গতি। সমাদরে বসায় থারত।। ডাকি নিজ ভ্তাগণে, আঞা দিল ভতক্ষণে, করাইভে পদং ালন। শুনি বিপ্র দাসগণ, হরে इत्रविक मन, भारधोक क्रिन छथन।। भथवासि पृत्त (भन. চারিবন্ধু বুড়াইন, তদ্স্তর করিল ভোজন। ভোজনাত্তি আচ-মন, পরে ভাষুল ভক্ষণ, অবশেষে করিল শরন।। নিদ্রা आकर्षण देशन, होतिवक् यूगारेन, सूर्य निमि विश्वन छथात्र। निर्मि देश्य अवगान, निक्वा देश्य नमाधान, शक्तर्य आधानांदन পার।। কোকিল কোকিলাগণ, কুঞ্সরে করে গান, দিবাকুর হইল উদয়। শারি হরি শক্ষাম, করিয়া বিপ্রে প্রণাম, চঞ্জি-त्त्रभागक क्षत्र।। विक निक नियमान, निव शह नहा वाने,

इतिकब्रक्षन ।

শভিলাষ শিবের চরণ। ভার আঞা দৃচ করি, জন্য জন পরিহরি, রচে ছিল জন্মনাবান্ধণ।। ভারিবন্ধুর অরণ্যে গ্রমন।

পরার। প্রাক্তকালে কুতুহলে চলে মধ্যে চড়ি। সল-रण निशासक कन्न होता निक्ता श्रीहरीत एवं नगति व्यदि ্রিনাম। দীন ভনে নিজগুণে না হইবে বাম।। জভিপ্রায় রোময় ও।ন নিবেদন। কামিনীর মনতোর কামেনীরঞ্জন।। য়োমর দেহ শীন্ত কামিনী সন্ধান। এত বলি চারিজন কবিল পদ্মাণ।। এই ৰূপে চাবি জন বাইতে খাইতে। উপনীত হৈল ।ক ছুর্ন বনেতে।। ভার মধ্যে এক পথ করি দরশন। পথ ংকুলারে পরে করিন গমন।। হেমকালে সেই প্রেণ গিয়া ভুক্ষণ। পৃথ হত হয়ে সবে ভীত হৈল মন।। অন্ধকার (যার-র রুক্ষের সমতা। স্থরোর কিরণ রুদ্ধে আফ্রাদিত সভা।। দ্বতার গম্য সংখ মনুদ্য কি ছার। শত শত সিংহ ব্যাস্থ হীয় গপ্তার।। উলুক ভলুক কণী প্রবীণ ছবিণ। মন্ত করী-'न 'बंदि तटह निर्मि मिन।। 'बङ्घ' भिवा कड प्रश्ना नाहि प्र। भिनाह नियोग उथा इ**८क गकालग्र।। क**टा कटा वड-নি শব্দ কড়মড়। ক্ষণে ক্ষণে বহে বায়ু প্রলয়ের রড়।। ২ন্তী ত্তী বুল্লে বুল্লে জন্তে জড়াজজি। দক্ষে কম্পে ভূমি কম্পে छ क्ष्मिष्।। पित्रि खरत जीक श्रत यसू गांत्रक्रम। कि तिव किटम इव व नारत्र त्यावन ॥ कीठ इद्या वातिक्रम उद्धे कछाटन। मिथित्नन मियाकत हटन अञ्चाह्न ।। निविष् গমির আদি বনে প্রবেশিল। তমো আগমন তভক্ষ আদি ल।। मश्रेष्टिय हातिरक्षु हिटक नाजावरन। एनवान कत াণ ভয় ভীত অনে।। রাজপুতা বলে শুন পাত্রেরকুমার। ণার বাক্যে **শভঃপর কর অঞ্চীকার** । প্রথম প্রহৃত্তে হুও ।যুক্ত প্রহরী। ভিন জন কিছু কাল নিজা পরিহরি।। বর্তন गमात्र भागा गण्यूर्व इहेरव। जनस्त्र मम निखा जन कहान

িবে।। শুনিরা পারের পুত্র নিযুক্ত হইল। আর তিন্ত্র ृत्क पूर्गाटक क्यों जिला। इस्तकांटल दम्य अक देमद्वत घडेन। उन्नक्षः पर्भ अक रिल फद्रमान ॥ क्षीत प्राप्त पाटल देश्ल বনষয়। কেণিয়া পাত্রের পুত্র হ**ইল বিস্ময়।; মু**ংতে না স্বরে दाका ऋकिछ हरेगा किवल मर्भित मूर्खि स्विटिंग नागिन।। আন নাহি সৃষ্টি হয় মাখার বেষ্ঠিত। দৈবি কণিমণি কণা অভি হুশোভিত।। নাগার নিখাস বৃহে প্রলংগ্রে ক্র। কাট পশ্য धक जिस्क मृत्य कष्रक ॥ भूट्यांत अशास्त्र मृत्यां १व वर्खानन। प्रास्त्रि गह इन्हीं भग कहा म ज़क्या ॥ (इनकाटन - छेशनी है (गई রক্ষপাশে। ঢারি অখ উদঃস্থ হইল নিশালে।। হেননতে क्नकाल करिया अम्। উদর পুরিয়া সর্প করিল গমন।। धन्द्रदादक পाजभूभ हिन्छ छत्रवीन। नर्भशास्य अमाद्रदक রক্ষা কর প্রাণ।। এই মতে নিজ পালা পূর্ণিত হইল। পঞ্জী-কার মত রাজপুরভারে ডাকিল।। নিজা হৈতে রাজপুজ উঠিয়া বসিল। নিজ প্রহরের কর্মে নিবুক্ত হইল।। দর্প কথান। कंश्नि भारत्व रुमय । कि कार्ति गमी भि मधी महन शाम खत्र।। ভ্রমন্তরে পাত্রস্কুত ক্রিল শ**রন।** প্রহীর কর্মেতে রহে রাজার ৰক্ষন। দাঞ্জীহাট বাস ঘিজ দ্বিজ্ঞাণ দাস। অভিলাব এই গ্রন্থ করিতে প্রকাশ ।। শিবচন্দ্র কাকর শিবের ঘরণী। এই ভিকাদেহ খোরে শুনগো জননী। রচিবারে শিব আজা হ**ইল যেমন। গেই নভ রচ্ছেক্ত রাজনা**রারণ।।

দৈতা ক্রী সহ কথোপকথনে রাজসূজের ্ উপদেশ প্রাপ্ত।

লবু-জিপদী। প্রকার নিশি, অপ্রকাশ শ্লী, ভাবে বিশ রাজ্যুত্ত। করিয়া ক্ষেম, হইব মোচন, অঘটন শত শত।। ক্ষিত্র রাজ্যু ভাজি, ভাষ্যা লোভে মজি, বুরি শেবে যার প্রাণ। বাজার কার্যু এত অঘটন, না হৈল ভার সন্ধান।। ভাবিতে ভারতে প্রকেশ্যাচায়তে মন্ত্রোর প্রায় ধনি। হেন আন क्षि हो है। इस का का का का का का का का कि । दिन किकारिया ध तरम दक प्यारक, कर रहिषे निर्माधनः। अनि स्रोत कर्मा চহিত্তে তবল, ভালা অনেরে হাণিয়া।৷ এই রুক্টোপারে» প্লাচ্ছে চারি মরে, ধাজি করে জাগরণ। তথ অভংপর, কণ্ডি रविकात, कार यक विवत्रया एक कामा भूख, यह दोस्रभूकः भट्य अक अवननी। छात्र भट्ययरन, यात्र हातिकदन, भटन হেন জনুসানি।। মিধ্যা আশা ভুকা, রথা তার চেষ্ঠা, অনুষ্ঠা লগমা স্থান। টেবজো যাওয়া ভার, মানব কি ছাব, না পাতে ठाव नकाम । एकि केटल लिया, विनय कविया, शांकि দেভোৱে ক্র**। কোথায় বসন্তি, কাহার যুবতী, হক্ত** প্র<mark>ারকী</mark> श्रं! (मब कि मानव, जाकन मानव, कि देवछव कावछका। গুলি দৈতা কয়, কথা দোগা নয়, তথাত গুল দে কথা।। পেয়ে নিমন্ত্রণ, গেলেম যাশন, প্রামান্ত দৈতে, ভবন। হৈল গড় সভা, নিশি যেৰ দিনা, প্ৰভা মণির কিলুও।। আইল লক্ষ্যকে, নানা মত যক্ষ, স্ব ংগ সভকা প্রাথী। কেহ বা প্রঠাম, কণ अञ्चलम, नाम राम नाहि कानि॥ त्राक्रण शिमाठ, स्वीचे एव होंग, शैन दांग कर नहां आहेल कूट गर, गर्झ निमा नर: गवपूछ रहा गरु ।। दकर वा छनक, लांड नामा छत्र, दर्गंत বন্ধ ভরস্কর। ভূমি কপমান, করে আক্ষালন, উদ্ভে আন নাগে ডর।। কোন জন কম্পে, করি মধ্যে লক্ষে, ভূমি কম্পে भाषादा । मन छभ शोशः धम तुश माश्रः तम लोकः व्हाना-भरत ।। करत छो। छो। भन्न व्हेन्वि, वय माछ कल्लमान । छाकिनो त्यांशनी, चांत्र शिशाहिनी, टेश्डियनीयर शास्त्रीक कोषिएम टेक्टर करत महाद्रक ४७ होन यर कम । पूछ नुस्र ভাল, এলুয়ের কাল, হতত নাহি তাল ভই।। বেই 📆 विका, प्रतक अधि संदेश, किरण कुरल भव गांथा। एक जिल्ला, दक्ष मा कृतुक, मन भित भटन श्रीया॥ श्री (32)

त्र गिक्त अन ।

ুছেন শভ শভ, সংখ্যা মভ অগণনু। কেবা কোন জাভি, কো-খার বস্তি, কেবা জানে বিবরণ।। ওবে ভূত ভূপ, খরি নিজ ৯প, মভা অত্যে উপনীত। হেনই সময়, চরাচরময়, দেখি अहिल धक पूरु।। निर्दिनित एक, अध्यक धारुक, वक कर त्रव कथा। भटेड निरंवमन, क्षिल रत्र सन, अभूक् अक वात्रजा॥ श्मिलंब शारण, जानमा त्म त्मरण, देवरम अक महावाका । धन ধানা বৃত্ত, রাজ অপ্রমিত, বহু শত শুত প্রজা।। আছে এক रूना, करण मही धना, खरना खलूतना जात । विद्याद बत वी, किं त्रोगाथिनी। वर्ष किनि निक्रभात ॥ का विनी किनि। স্থ জিমির বেণী, কণী মণি শোভা করে। টাচর চিকুর, জা্তি চমৎকার বিষ থিনি ওষ্ঠাধর।। দেবি রাজবালা, চপলা ১ঞ্জা, অচলা হইল লিরি। ভার হৃদিমাঝে, আসিয়া বিরাজে, लाटक कुठ क्रभ धाँत ।। दमचि क्रम्यानम, क्रम्य प्राची यम, शयम भगत्भार्यात्र । एदिया वष्टमः कतिहा त्राप्तमः, जानिहा मन्नम নীরে দা নেত্রবুগ মান, হেরিয়া ছরিণ, লাকে গোঁছে গেল दन। छाशात क्यूज, प्रविज्ञा मण्यथ, नित्म निक मतामन।। कि मर्सालांचा, तक एख मांचा, कूम श्रृष्टा शंन वन। নৰ প্রবের, রেখা সুবিস্থার, তার মধ্যে সুশোভন।। জিনিরা ভাকর, দিন্দুর বিন্দুর, মনোলোভা শোভা ভালে। কানেতে कुछन, करत राममन, कर्छ दर्शनात कारण । वाछत गर्रात, जम পেরে মনে মৃণাল পশিল নীরে। সিংহ ব্যাস্ত किनिः कीन माना बानि, धार्ट भाषा हस्त्रहारत ॥ त्रवाचक्र निनि, উক্তুর বলনী, মরাল গামিনী ধনী। কোটি চন্ত্র আতা, ভার ন্ত্ৰ লোড়া, মদোলোড়া দেবে কিনি।। জগতে উত্তমা, রস্কা किट्लाख्या, जात यांनी नम नम्। जात कि करिय, कत जायू-बुद्ध वर बर्गमा। जात यक जानि, अन मृशवनि, जात ক্ষিত্র ক্ষা সংগতে তুগতি, বেব শচীপতি, শুনি রূপের भारता मानि छक्तरण, क्रमात चत्रम, बहिर्फ करिन

ভারে।। ৌরনের ভার, ভুঞ্জু জ্ঞান ভার, নাঁ বরিল হেন বলে 🧓 দেৰি দেবরাজ, পেয়ে বড় লাভ, বিনা ব্যাজে শাল দিব। বে তোমা ইচ্ছিবে, তথনি মরিবে, যৌবন ছবে বিফল।। শুনি রাজবালা, হইয়া ব্যাকুলা, চপ্লো ঘটলা মনে। করেছি कूकार, क्रम रमवताक, मता क्यां मक स्ट्रा ।। दिमत स्निमा, हें क्ष यन देहरा, कहित्सम शूनर्कातः छम कहि सामि, नब-লোকে স্বামী, নিশ্চয় হবে,ভোমার।। পুনং ধনী কয়, কছ जहांगर, द्वता इटव भात शिखा दक्यान धमन, इहेटव बंधेन, কিলে যাবে এ চুর্গতি।। অচিস্কা নামেতে, বিখাভ লগতে। जथा तांका हल्दामन। काशंत सम्मन, खटा खारान, ब्रामिक मनन (यन।। मृशक्रा कांत्रण, आमिर्ट कारम, कृषि पिर्ट ६४-न्त्र। श्रांतरक अतिरत, अस्त्रीम इर्त्त, कर्द्द क्रिट्ट नजीन ।। কিছু দিন পৰে। পাইবে ভাহাবে, ছইবে সুৰে বিবাহ। যাবে मव इ:४, शास्त्र मत्नासूत्र, अ षाणा शस्त्र निर्साशः। এ कथः। कित्यों, व्यवसीन देश्यों, इस्त शत वर्तभूत । अहे नगाणात. শুন সুবিস্তার, ওহে দৈত্য নূপবর।। শুনিরা ভূপতি, স্বিশ্বর মতি। সভা সহ বিচলিত। পরস্পর মনে, ভাবে সর্ক জনে, ।ন কন্যা হয়ে বাঞ্চিত।। রজনী প্রভাতে, আপন দেশেতে, চলি-লেন সর্বজন। কন্যার সমাদ, শুনিবারে সাধ, শুনিলেড বিবরণ।। এ কথা শুনিয়া, বিনয় করিয়া, দৈচপত্নী কংং श्वः। कर व्याननाथ, निमा त्कान शथ, यादन बदा हातिकम ॥ किरम रहना हटन, रक वन मिनाटन, यहेरिय रहन घडेना। छनि देगका करह, खन श्रिदंत्र ७८३, माहि नंत्र हिन कना ॥ ७८५ ध्या जानि, धन सूर्वश्नी, कनार्य नक्षान दर्शा। कानाकुळ नाम, मिन चारुशाम, मश्वाम शाहरत कथा॥ मकरत अकान, स्मा म्मा निवान, करत अर्क नमांगतः। चार्ट अरू जूषा, नर्स क्षेत्र वुषा, अकृता पुराना चाद्र ।। गांधूत कूमात्री, लाद्य कर्मात्री कि कर जारात थन। याहा विकानित, नकन केर्टर, ने

विकित्या ।

्रम विवत्न ।। एकि मिट्टी मंत्री, खलू आह कति, त्वत्र माँकी अहे बद्र । मकल मकल, शहरत मकल, शाहरत वामना भूदतं ।। व्हिट्ड कहिर्ड, त्वर खां विद्यार विकि देहल खर्मान । विवा मिट्टिंड विद्यार हिंचात क्षर्यक्र रेहल हिंग्ट खंडाने ।। वाकात म्लान, खांनिक्छ मन, खांनिक्छ मन, खांनिक्छ मन, खांनिक्ड मरन, खिलानी तहरून, तरह वाक्रमात्रांत्रण ।।

-010

চারি বন্ধুর অরণা হইতে গমন।

शक्षात । रहेन जोरूत मोख गांच ठक्रांग्त । द्रक देर्ट সানব্দেতে নামিল সম্বয়।। সেই পথে কান্যেতে করিল প্রতেশ। সে পছার পুনরার ফানাকুজ দেশ।। কন্যার প্রসঙ্গে त्रक घटन ग्रांतिकने। आद्य ध्यांचन इत्त दश्रम कालपन।। কুভূহলে **গরে চলে আনিদ্দ অন্তর। কতদুরে গিয়া এ**ক দেশিল में नेन ॥ श्राष्ट्रीदेवरं कार्ति जिल्ह आहरत विकित मन्ति हत চারি হার ভাহতে শোভিত।। ছারি কড লভ শত আছে জারে ছারে। সুষ্ণাধন ভক্ষণণ নগর ভিউরে।) দেশিয়া ছারের শোভা হর্ষিত ঘন। তদন্তরে নগরে প্রবেশে চারিজন।। সুশোভন প্তাবন মন উচাটন। সংখ্যা মন্ত পুতা যত না হয় বর্ণন ।। সন্ধিকা মালভি ঘূধী অভি ননোহর। অশোক কিংশুক दक अपूज छेशता। कुले त्य आनिष्तमात्री शक्त महनात्रम। খেত রক্ত জবা মনোলোভা অনুপম।। চল্পক ভিলক বক वानम बकुल। साद भक्ति मनजरमा भाव मनिकूल।। धार्म्स माध्वी जात कक्को ह्रमत। मुहक्दा नक जारमामिक मधु-কর।। হয়েশণি সূর্বাসণি দেধি মণি দোলে। কাঞ্চন অর্জান धन धन हरू (पाटक।। कहती कहा अपूज जूना निथ किया। কৌকনদ গদ্ধাযোদ করে অভি শোভা ii দেকালিকা সেঁউকী मंत्रिका (चंछ दक । केटत वन सूर्त्नार्फन (चंक सूर्व्यक ।) कंक्य कुलूम, बारमातम अ जनारक। अलूभमा नाहि मीमा बांबना

ৰিভি।। তমাৰ হীতাৰ তাল জাল সুশোঁওন। আই সুং नान जान जनश्य वर्गमा। शक्ताय जनका कारस्य स्वर इक्कराक इक्करादी वक वकीनर ॥ देश्ल मूली (पश्चिक ग्रा) सत्र अला। नाना वटर्ग ऋदिन ऋदिन अवुल क्यल।। प्रस्त्र छ कुछ कुछ छाटक शीळगर। भन्म मन्न शुण्ये गस्त वटह नशीत।। বারমাস নিবাস ভথায় রতিপতি ৷ কান্ত সঙ্গে মন রজে সুংং কৰে এতি ।। সদত বসন্ত রতিকান্ত সঙ্গে করি। মদন রক্ষিত रन (क्रांकिल अञ्जी।। दर्शन गांत्र अने मन मेम्रान (१) हिन्छ। কিবা সরোক্ত সনোধর স্থানাতিক। কুতৃহতে রাজপুল ফুল जुनि जिन । मरनाष्ट्रत्थ कोङ्क काडान नादक निन ।। १८११ ছলে ফুল ভূলি লটল আয়াগ। ক্রোধ মনে মদন হানিল ফুল वान।। खनक आहिल- एक र्रेस व्लिकः। कि र्वेद कि ঘটন হিতে বিপরীত।। ওহে স্থা একি লেখা মন উচাটন। শখ। বলে গেলে ফলে যুভ়াবে এখন।। এচবলি গেল চলি সরোবর জীয়ে। ভাবি হনে ভঙকং এংবশিল নীয়ে।। পঞ্ बादि यात व्यादि हात्न फूलभ्यू । श्रीत काल किछन पदन উঠে পুনঃ পুনঃ।। হরি হরি মরি মরি কি করি উপায়। মনা-नल निर्देश कल करु ना निकाश । इन्हीं बन सूथी नन विदाह। देवसूर्य। घटत्र शदत अखदत महाके वाटक हु:सा। दस्य सदत সুরাস্থরে সমূচ মন্থি। করি,বল্ল শুধা রল্প জনেক উঠিল। পারিজাত ঐরাবত নিল পুরন্দর। সর্ব ব্যাপ্ত লক্ষ্মী প্রাপ্ত देश्ला मारमामत ॥ सूथाशात्न क्या शैन देश्ल त्वया । खरित एत शूनकीत किल मध्न ॥ दिथि वटण जीवा त्यारम खर्फ रुवार्ज । सूत्रासून (भव नत्र यास्र त्रनारुज ॥ विष ভয়ে 🖏 ै হরে দেব নিশাকর। নিবারণ হেভু উঠে গমণ উপর।। ক্লেখ্য यनि भिन्त विथि कोनिन अस्टरत । जीवि मदन एक कटन अस्टि। प्र রাছরে।। শশ্বর ছুংখান্তর গেল শিব ভালে। গরক জনান वथा इकालांत्र षटल ॥ कर्मकरन माना हरल घिले इसे ।

াগৰি বিধি বাদী টুৰ্সতি সংপ্ৰতি ॥ খইবপ ভূপস্ত ্ৰত ভ্ৰা মনাঞা ছিন্তা মলে বিশ্বণ বিধাছা।। হেনৰ अप्यत्या बादमा बक्समी। मधीभटक त्रदेशकटक समक्षरमाहि এলা ভবা। দবা। দিহা কাবাধিলাসিমী। সুপ্রকাশ্য আবা गाः १ तमनी ॥ यहां मध्य मध्य मध्य शदकरम् शांत्रिनी । নণি জিনি দীয়া নম্বনে বাখানি।। অবিস্থাম দেখি টাম লায়। সাৰে। কলক মৃশাল্ল হীন দে ছংখ পরোজে।। नान गरा भवदाक उलान करता। मानानक करत खन्द छट জ্মতে। কাদ্যিনী বেণীকণী অকে মণিময়। সুধাতি তাল নাসা ভিল্ফুল প্রায়।। মনোহর ওঠাবের রক্ত শোভা: মুক্তাহারে শোভা কবে স্কন মনোলোভা।। ংম অনুপ্র সম্নাহি ভার। পীন্রিরি দাভি**য় ক্**মর ে इति । (कमती किनि कांद्रांति खिलि नशास्त्र)। दर्न (देशमा मध्ये प्राचि दन सूर्यमा। ष्यमु मद्राचन माडि २ অবুজা সংগ্র বদুশ তার ক্ষিল বিভুজ।। দেখি काषि कारि कार पूरत मरत। यक हरन उठ स्टला ভার ওরে।। রভাতক উক্তর উপনা সম নয়। কবী শুং ুন্ডীম্ম কেই কেই কয়।। পদে পদে পদের বর্ণনা কত ব গাৰিলে ভাৰক জনে মনে উঠে ভাৰ।। তুগঠন আভ অফের ভূষণ । রহে দ্বংখ নিজে মূর্খ না হর বর্ণন ॥ চুল খে অৰ্থাপা করিবত কোলে। ইকাবুত সদত কুওল ব (मांत्य ।। मुख्नांकांत्र फानिवांत्र (मांचिक भवांत्र । भवक सर्वे ব্যালো মুখ শোলা পায়।! হস্তেতে কন্ত্ৰণ ঘন শব্দ নে বিপু त इदद निवदन शीक जिद्दर काला।। अनुनीए वर्गान् क्ष्युटन स्थाजिकः। **চक्ष वानि चन्नकात्र** यानिनी जानिकी कांके खाँकि किकिनीत सनि मदनाइ। मीना भएन भएन छा বাহারে ভূপুর।। হাব ভাব কটাক প্রভাক পঞ্চবা ्निधि तम वर्ग नावना माहि चाँदह व्यान ॥ प्रिथ क्रम क्रमकू

वध्य हाति वाम । क्यांन एक सामाहरू हरेला भेजर ।। अध्यः 🕒 ठाकि करन शारेन मिष्ठ। में कहिनेत हर आहेन महत देण्य जीका। कमस्रदार अधीरत विकास रहेत कहा जाह সূতা বশবুতা কোথা নিজালয়।। কর্বার্তা দ্রো কি আছর। 🛊 সুন্দরী। ভানি হাসি নিউ ়ালি জতদ বহুটো ॥ তহি ওচ চারিজন বিবরণ যত। সাধুর নদিনী ধনী জগ্ন বিধ্যাত। কত নর এলো বর মনোহর এলে। ধন ধান্য গরিপুর্ণ সাবং एम गारिल । दिस्ह स्मटम निवारित काल्य (त्वरम दिस्त । ८०. কারণ বলি ওন এখন বক্ল।। কন্যার ধনক এক খ্যাভ আনে পাৰ। জন্ম করে যে পুরিত্ব লে পাবে এ ঘন।। নীর ধরী জা मानि ना क्षांनि विद्याय। त्य भूवित्व कनाः शादव बाद्य निर तम्य ।। इत्य कामी बहुशानि धनी (थाशा तत्र । दिलास कि कल दल एक भागू घर ।। विकि वामी महि मिन अ मिर्द मि-লাভে। ভবেত নিশ্চিত এম পাণ্ডবে পুরিতে।। এত বলি গেল দলি কেনি ত্রেমকাঁচে। চানিজন মগন ভথন সুধ मोरथ। महाविद्य स्मिक्ट नायुर क्यांी। वर्षात करन अक মনে নিরীক্ষণ করি॥ ভার মধ্যে মন্ত্রীস্কুতে করি দরশন। समितिय अक पृष्ठि इंडेन मधन।। उल्प्रुयी निक स्त्रीत নম্বরিতে নারে। বলে দখী বল একি ঘটিল স্থানারে।। স্থান নমর্পণ বখীগণ সলে করি। নিজ মরে জ্থাস্তরে চলিজ द्धान्यती ॥ कटा यात्र किटत हात्र मिलात्र मटनटल । अखि द्वारी <u> इन्त्रभी त्रिय महीद्रुट्ड ॥ क्लमाना द्यारा चाना चाक्त्रः</u> অন্তরে। ফাটে বুক সনোজ্যে প্রকাশিতে নারে।। এই সভ বচিত্তিত উপনীত দরে। সন্ত্রীস্ত ভাতাধিক হেরির। জাহাঁছে 🗵

कना आर्थ गार्भुद श्रातम ।

দীর্ঘ পরার। না নেবি সে শুণীর্বী মনোচ্থী চারি জন। কি করিব কোথা যাব কিলে পাব এ রভন।। পঞ্চাতে হারে

ार्य महत्र मोर्स इंडॉनन। लाटन करन विख्य परन ना र जाना निवातन।। अब वनि झः दर्श चनि छत्न जांधू निर्केष्ठन भरमाहर तिथि भूद स्यम्त स्राठेन ॥ काराज्ञत्म कना। आर श्रुटा द्वाराम खन्म। जमस्रदा ममोशदा कटा चांचा निरंतमन छत् कमा। क्रश थमा। ष्यामा छात्र ष्राजुनम । छात ष्राटम माम् ब्रोटम अंडे (भटम खांशमन।। खनकर एत्र क्रिय क्रिय तमकुर्व स्रो हेन। महाशत सुर्वास्त्र कृति यह प्रत्मन । विदा वार्ति वार्ति পুরি জানি দিল ভূতাগণ। ততকণে চারি জনে করি পা श्रक्तांत्र । नाग कल महिर्कत जनशाम आरम्बन। देखुः ঘাৰ ক্ষী খন ভাষা করিল ভক্ষণ।। ঘলপান করি পান খার পাম হাটমন। পথআৰ ছিল ক্লান্ত তাহা হইল নিবারণ। হারণরৰ রমাভাস নান। কাব্য আলাপন। তদভর স্থাগ্য हेडल शांश निक्रभन ।। सांता एक वर्न मध्या किल करिएछ इस्रन क्षम्बद्ध स्विधित वास्य विध्यात नक्षम्।। दञ्जवा हवा भरावर क्तिल दिला अस्। जासूल क्लिक देवल क्ति गरव काहमन। उन्हात इहेल भारत तलगीत आश्रमन। मिल गया कति गया पुरुष कृतिल भग्नन ।। विषुष्री यदन प्रःशी निवृधि शांख नन्त्रन् निक घटत C'म करव रम मकल विवत्न।। विक भिवन्स मो क्ष्यश्च अक्षम। माध्यीहाउँ वांग आम जाया क्रिएक उहन श्वाया ब्रहिट्स नकटल दन्न मध्या अयुक्तन । ध कांब्र्टन करांद्रा इटक ब्रांक्श्वाकांत्रण ॥

ख्य कनात वितर (रामिक वर्गना।

मयु-जिलमी। उथा व्याप्ती, शांत शूंख (मर्चि, शींडि मध्य वार्ग। करत होत शंत, करण मुर्छ। यात्र, करण भा रहाजरम ॥ वितर ख्याल, रहेन अवल, कीन वर्ग खत्र कार्य बालाबार शंक, भत्रीत लामांक, मगरम ममन वार्श। करा स्मारीक्षणी करत प्रति, रक्ष क्षि कराज करा खदात जन रुष्टेल अस्त, अ कामल किटन गोत्र।, मति मटमोङ्धंन, टन हुः स क्ष (मर्टर्यः करु चात्र क्षांत क्षांत मन्न । लिका निमान्नेन, क्रिन कि । शन, जारह कि त्योवन तम्र।। ऋषम्र माझारतः भर भरताथितः कात अ्राच कार्क वूक। बिज्ञा मानिम, ताचि त आनिन व्यवम मरम्ब प्रथम ।। कृति जीन वरह, बृष्टकोर्ड विस्त, परव বুকি বাপ **সায়।** হতে ধৰি স্কুৰ, কত পাৰ হুংখ, কেখনে খেঁ-दन तथा। कृथा दाब्र (शत्म, सूचा त्रत्क मिर्ट्स, विच नम क्ष क्कान। जन शोन कूटन, शिंठ दीन बटन, मादि त्यान अरहा-জন। যে স্বালা অন্তরে, প্রকাশিব কারে, সনোদ্ধা মনে রাদি। বোষার স্থপন, চিল্কে মনে মন, তেমন হইর। থাকি। ज गय त्योवन, कुलत्वेत धन, जांत करत करन मिन। आह सक সজ্ঞে ভরিত অনক্ষে, ভাপ প্রাণ যুক্তাইব।। বায়ু সংখাদনে, करह करन करन. अब बागू निरम्भगे। इरह लाक व्यान, रकम নোর প্রাণ, মিছে কর ভালাতন।। চন্দ্রের করণ, করে কাল। कन, **जांदर त्मांत आंटड सूर। नर्क फारन कटन, जा**ना करन चारण, जानिया जानात हु: व ।। क्यानत तम, जानांत्र जानने, करत छत् हु: बी नहे। वान गर्भ मत्म, निष्य खाला कारम, अहे **८९७ छोडी गरे।। बालाय भनन, सक्र घटन धन. निक बाट**न সদা শ্বলে। তার অঞ্চ তাশ, নিরব্ধি ভাশ, তথ্য হর কোপা-নলে।। শরীর ভালিব, প্রাণ ছেয়াগিব, করিব গর্ম পান। मात्र यांना शहर, कहिरल खशहर, शहर करत खशकाना। বিষি দের যদি। পাব সেই নিষি, সুর্নিধি হব পার। বিদে সে কাণ্ডারী, কিনে ভরী ভরি, অন**র ভরক** ভার ।। বনিতে বলিতে, অনক বাণেতে, জনঙ্গ জলনে উদান। মুধে নাহি वानी, छक्क देश्य धर्मी, जटर मधरन निकामना एरेका अधीरत, পত্र बतालात, गर्दी बताबति कति । रिशाका विश्वन, कीशान বাঁশে খুন, বাঁচাই কেমন করি । বন্ধ নিশি শেষ, ভঙ্ক वाटक द्वान, दरदम भागान विषद्य । वितर कालमा, युक् व्यनि-

র শিকরঞ্জন।

क्यां, जोविद्यां निकं **करु**त्ता। स्विष्ठक्त विक्र, स्वित श् कार्वि क्यूपिक क्रिता क्षीत काका शत्म व्रावनीताप्रत्यः इस्क वित्रवित्ता।

-

कथ महाशत अश किकांना करतन।

পরার।রজনী প্রভাষা হৈল ভাতুর উদয়। বন্ধ চারি আদি সদাগর কয়। কুছ ভোমা স্বাকার কার কোন एति करह गर्क मास्त्र गवाङ निश्रुन ॥ क्रमदान खनदान विषामांन। अत मर्था शांदत है। किना एक मान ॥ करव চারি ফনে নিল সঙ্গে করে। উপনীত হৈল এক সরে ভীরে।। অনে ফুলে অনিকুলে বড় শোভা পায়। হংস। সূবে ভাগি ভাগতে ধেলার।। ভার পুর্বদিকে এক ভ উপ্রন। বিক্ষিত ফুল যত অতি সুমোভন।। সেই পদ্ধনে গেল দ্ববা করি। দেবে এক শিলাদেহ ভু উপরি।। দেখিতে সুস্মর স্থাতি স্থীব শরীর। উদ্যান মধে आदि ज्ञान मृश्वित ॥ करण करण शाकिया कत्रत्र अहै। যেন কর্ম তেন কল কার্য্য করে সব।। বুঝিতে না পারে ইহার কারণ। নর সঙ্গে কভু ভার নাহি আলাপন।। (চমৎকার হৈল বসু চারিজন। সদাগর ভভক্ষণ জিল काइन।। रूप तारि तार दिन जूटमत छेला । कि कातन के মুত্রে নিরস্কৃত ।। অধিক কি কব আর তোমা প্রাকারে । ব পাবে বে জন যে কহিবে আদারে।। গুনি পাত্র পুত্র ব শুন সমাধার। অপূর্ব্ব কথন এই কহিছে বিশুর।।

অথ এশ্ল উত্তর।

প্রার। নাজী নামে এই দেশে ছিলেন রাজন। দো জন্তাপে বেমন স্থানন।। সোহিনী নামেতে তার ছিল। স্থানী। নপে গুণে মহী ধন্যা ছিল সেই ধনী।। পতি প্রিরব মনোইলা এ কথাজে। বাজনা বিস্তর তার লাবণা কনিবে

ভার গরে ভিন পুত্র হইল রালরে। বলে মহা বলবন্ত কীর-ভারতার।। পুজারে উপযুক্ত দেরিয়া রাজন। পাঞ্জীগ্রহ ক-र्क्टक कतिल निरम्भावन ॥ अर्थाए यंश्य व्राक्षा भवन कतिरंग। পুজন। অস্ত্র হাতে রক্ষক রহিবে।। এক প্রহরের পর শর্ম क्रियः। अदक् अद्य द्राटा खाद्य सूर्य निर्मा गाँवः। क्षयस्य প্রথমে চৌকী কৈলা সমর্পণ। দিনীয় প্রহরে চৌকী মধাস নন্দন।। অংশিষ্ট প্রহয়েতে ক্রিছের পাল।। আভামাত্র পুত্র शंग रुमा ७ २ है. ला॥ अहे मां ए कि छू भिन क्विला प्रशन्न। यक-तांद्र एन अक रेमरवह घठेन।। सूर्य निजा यात्र हाड़ि পুজ্র ছারে। খেন কালে এক পর্গ প্রয়েশিল ছরে।। সর্প দেখি রাজ পুজ্ঞ ৰক্ষা লয়ে করে। ধাইয়া চালল বধ করিতে ঋহীয়ে।। দেশিয়া ভয়েতে কণী ভীত হরে মন। গ্রাক্ষের আরু সিমা কৈল পলায়ন।। (হনকালে নিজা ভদ হইনা দুপতি। পুত্ৰ হাতে দেখি অসি হৈল ভাত মতি।। ভাত হবে ভয় পেরে ভাবিয়া অন্তরে। শুসি ধরি বুঝিবা বধিতে আইনে মোরে।। निखा ५क पाथि तिहे तालात एनमः थड़त किल तान जीन भारत लख्डा एप्र।। ভाষাতে धारिक गरन मर्प्यक् इंदेल। यगा देश्टक शब्धित्रः मृशकि गांका मिन ॥ **भीज का**नि खेल-नीक वाहित प्रमातन। काथीय प्रद्याम वनि छाक्दम नगान।। काञ्जान वाञ्च जान देश्य छेशबीछ। आहेना अलामश्य मर्ग रहत कीछ।। পাত भित्र क्यांका गरकक भूतकन। रक्रत হালির আমি হৈল ওভক্ষণ।। মেন্'স্ভিগণ আমি করিল তওয়াক। রক্ষা কর মহারাক্ষ গরিব নেওয়াক।। ঘূর্ণিত লো-हम अक काटल शब शब ।। अवरम मनम हाटल काटल अर्था-थत ।। दकाजप्रांत्य भावन मिल गाशादत नवदत । दहाने भूटक ধরে আন আমার গোচনে !৷ শৃঙ্খালে করিয়া বন্ধি স্মানহ বাহিরে। মা আনিলে পজা সমর্পির তোর পিরে।। আঞা নাত্রে কোত্রাল দেন ববভূত। শীরুণতি উপস্থিত বর্থা রাজ-

অবেতে।। সভী সান্ধী পভিত্রতা থাক কোন নারী। अडे वर्छ हुल मृह त्मर विद्या एकि धनी काकाशार्थ मत्न यत्न। कर्कमिक क्रिकशिक भवि करम्पात ॥ र्टश्टर नात्री पृश्चि अक हिटल करता रमस्य भाव भागि क्षत्वत्र উপরে।। শুগালের কথা নতা জানিয়া সুন্দরী। কলে কুভূহলে ভাতি ছরা করি। সাহযে নির্ভর কা ক্তর ধরে। গুরান্থিত **আনন্দেতে ভূলে ন**দী ভীরে ।। ভার সঙ্গে বালা অপুর্ন বসন। ভার মধ্যে পাইল ষা निका ब्रज्य !! श्रेनवात मामि जल कतित्वक साम। फ़्रेटर रुटव धनी आंकटप्र श्रेष्ट्रांगा। इनकारण बुद्ध म कार्षाख्दा नहीं छोटत शहेटल स्मर्ट श्रुट्यत वर् वर्ष्टद पिविषाधनी लिखिका इहेला। वनान वसन कामा भरव शिला॥ एवर्षि इक्स मनाश्व महिक्कि मन! कांबर्र एक चार्र वधु आध्यम।। मरम मरम जारर জ্ঞ কৈই দারী। উপপতি সঙ্গে বুঝি নিজ কার্য্য স ভার পরে কলে করে গাতের শার্কনা। পতির বি यात्र प्रतिष्ट शमना।। कुलकी थ मकी नांत्री क्की तुम्ल বিস্কুন ইহার উচিত দশু হয়। এত চিন্তি সদাগ্র। গার গেল। অমনি যামিনী হুত প্রভাতা হইল।। প্রাভ গেল পুত্ৰ পিডা প্ৰথমিতে। পুত্ৰ মুখ সৰাগর না জোবেতে।। দেখিয়া শিতার ভাব জিজানে কারণ। প্রতি কেন ক্রোধ কহ বিষয়ণ।। শুনিরা সক্রোধ ভাগে क्रमायतः। (य ज्यास्त्र कांत्रव छाट्ट कत्रव सीकातः।। বলে তব আঞা স্বীকার জামার। তব আঞা অবকা नाहि शात ।। जाका बिटन निकश्च कार्णिवादत । অভথব কোন আঞ্চ. কহ ৰূপা করি।। শুনি সদাগর क्षमङ् वन्न । क्षामात्रः जातीति वस्न सम् निगर्कन ত্যত কৰিব জাৰি বৰ সবিশেষ। বস্তাতি পৰেতে

র সিক্রঞ্জন।

দেহ নমবাস।। শুনিয়া ভাসিল পুক্ত বিক্ষেদ গাগরে। লক্ষা ভবে বিসক্ষানে রথ সক্ষা করে।। হেট্রুখে মনোছ্:খে ভাষা। প্রতি কয়। একণে বারেক তুমি চল পিত্রালর। বিলয় দা সহে কর রথে আরোহণ। বুঝিল রমণী সব রা-ক্রের কারণ।। রথে চজে মন ছাজে স্থনে নিশাস। এব দিনে বিধাতা পাঠায় বনবাস।। শিবা আন্দা নতে হৈল অরণ্য গমন। শিবচন্ত্র আন্দার এ পুক্তক রচন।

-

অথ সদাগরের পুক্রবধুর বিলাপ।

ठकुष्मती। कति तथ आद्याश्रद्धः आद्य धनी महम मत्त, बेक नित्त याके यहन, विधि भारत करेल विखन। कांस-ন্দেতে নিয়ানন্দ, মন্দ্র ভাবে ভাবি সন্ধা বিধাতার এ নির্বেক্ত, কে করে বঞ্জন।। প্রতিনোর ভাল বাসে, বেছ দের ক্স-वारमः माँखाईय कांत्र शारमः, धन चारमः शाताकेलान धनः। নমনের মণি আগি, কণীর মণির লাগি, দোঘী কলভের ভাগী, আভাগীর অদুষ্ঠ কেমন।। মিছাধন দিয়া বিধি: श्रुनः ठात्र रुरत्न वामी, इंटर मिल छनमित्रि, मित्रवित अन छेल छेन। थिक दिश्व मृषि इश्वि, मृत समृत्येत्र त्राष्ट्रा, त्रात्रीत কপাল পোড়া, কপালের কপালে আন্তর।। কি কর মনের ছাখ, ছাবের উপবে ছাখ, সে চাব বিদরেরুক, পাত দের সভী बनवारम । मदब त्मरम कई कत्र, अदर्थ आर्थ मान्न हम् आर्थना किलंडीक इस, ब्लारक धन निम धन बादण ।। कि कहि कि कहि দরি, প্রাণ যায় মরি মরি, কিলে বা সম্ভটে ভরি, মিলে প্রান্তী শাবি সোহে বন্ধ। পতি নরনের ভারা, যদি ভারাকর ছারুঃ, ভবে ভারাবিনে ভারা, ভারা হীন ভারা হবে অক্ষ॥ পুর্কৌ কি करते हि भाभः मरह कारत दिन भाभ, बक्तत्र ममस्राधः, साभ थाद्य महारे नदाश। यत्तांश शहन शाहे छत्य किंदू नाहि हारे, यक्त कतिया बारे, विरयटक बुकारे विम्नाल ।। बाकाद्य

াদের পূল, সৃঞ্জিল নারীর নারীর কুল, হয়ে বড় স্থুলে ছুল, বিশি হড় বিলি বলে প্রাণ। পর ধরে ঘর করে, পরের মন্ত্রণ মরে, ডার পরে দেই গরে, জন ধরে করে অপাদান।। অবলা কুলের বালা, প্র্নলা অতি রসলা, নাহি আনে কোন গুলা, পর ক্রেণ নিজ অক স্থলে। একের অস্তরে থাকে, অন্য জন জলে ছুলে, নিছে মরি মনোসুধে, পোড়া সুড়া ছুলেরে কথালে।। সহা অক ছুলের ছারা, লিরে কলন্ত পদ্রা, সে ভারে সদা অথরা, ভাহে আর পুরুষ পাধাণ। ছুদ্দি ভারে কার, হল সন্ত্রানে বেড়ায়, কিছু যদি ছল পার, সেই নায়ে ছলে বধে প্রাণ।। কান্দিলে কি হবে আর, অভ্রের কর মন। ক্রিক কার, নিজ, লাকে করি, লিব আছা, নত, পুন্তক স্কুপ্রকাশিত, মুললিত নির্ভিত, করে বাজনারামণ।।

প্রার। চিন্তার চিন্তিত মন চিন্তিতে চিন্তিতে। উপনীত হৈল এক স্থাম বনেতে।। ভার্যা সহ নামি তথা নাধুর
তলন। গৃহে বাইতে সার্র্বিরে দিলেন বিলায়।। নারী সহ
নাধুত্বত বৃক্তলে হলি। কান্দিতে গালিল দোঁহে ছুঃবনীরে
ভালি।। উত্তরে বিলাপ যত কহিছে বিন্তার। প্রিক বিনে
সভী ছুঃব বৃদ্ধ সরো বি।। চন্দের জনেতে জন্দে ভিজিল
নাম। হেনকালে হৈল জাসি নিশি জাগমন।। ছঃবানল
কুর্বানল হইল প্রবল্ধ। হেন স্থল নাহি তথা পান করে জল।।
লৈব্যোলে সাধুত্বক নিদ্ধা জাক্ষিল। জারী উলে শির দিয়া
নিশ্বিত হইল।।

্ব্যথ অনুশ্যে সাধুবধুর মাণিক প্রাপ্ত।

श्रातः। वृत्रकी काराप्रदर्शन निक्रा लिया श्रीकः। द्व-कार्टम क्रम अक रेमरोपीम श्रक्ति। क्रीक अक वृत्क दनि केर्टकः-

इंगिक्त्रक्षन ।

-

श्रध काक मर्भ निवद्र ।

প্রার। দেব দেহ ধরি কাক কহিছে তথন। শুনহ েদরী মোব পুর্ক্ষ বিবরণ।। পুর্কেতে ছিলান আমি গল্পক ্ষার। ইলামৃত নাম খ্যাত আছিল আমার॥ সলত আ্-ছল মোর কুক্ষেতে মন। এক দিন দৈবাধীন শুন বেব শে।। অরণা নশ্যতে গিয়া মৃগর। করিতে। দৈবে উপ্নীত ।ক মুনি আত্রমেছে।। বিপ্রের সহিত মোর না হুইল (wall) ज़र्विनाम सूनि भन्नो गृटक **चाटक धका** । विनः सीरश दुर्जिद তিমির হীন আলো। দেখিয়া আশ্রহী দেয়ের চমৎকার হৈল वृत्र मध्या अटबिमिल कानिएक कावन । पुष्टे देश्ल म्लाई बाला मनित कित्रण।। आम्हार्या इटेस प्राचि मनित मार्थाकः বলাৎকারে মণি লইণাম আমি হরি॥ ক্লোধ করি মুদ্দি শত্নী দিল মোরে শাপ। হউক তাপ পাপ হেছু 📆 👟 ণাপ।। শাপ শুনে মনে মনে ২য়ে অতি ভীত। স্কৃতি 🐠 ব্ৰাক্ষণীর হই পদাধিত।। তুকর্ম অধর্ম করি হরিচার্টি ছড়ি अभरमत जालहाय कगरणा अन्नी।। । ०७ छमि खाँखेरीह 🔻 **उभिक्ता उभरम्य कथा त्य भागात विक्ता अदिवाह**

वात वाका ना इत श्रंथन। यनि मह कभी खंख के द्र ह खंदगा।
इत बच्च ८ अवर्ण चातन शिक्टिंग। निष्ठा निक्क दिन छानि कि शिक्टिंग। निष्ठा निष्ठा का दिन कि दिन पाति।
वन मध्य मानी गानी कि बिख्य का दिन कि मध्यो शिक्टि खंडा वा ना मोनी शिक्टि खंडा वा ना मोनी हिंदि । छात्र यनि किल्य का स्माहन हहेदि ।
विक्र शिन हंहेलाय खोनियार इन । मर्न दिन खंडा भाग कि स्माहन होता।
शिक्टि शाम स्माहार स्माहन के स्माहन भाग भाग विद्याहन छव प्रदेश माना स्माहन के स्माहन स्माहन

--

অথ ভার্যা প্রতিপত্তির ক্রোধ।

প্রার। এখার সাধুর পুত্র হয়ে নিত্রা ভক। অক কাঁপে থর খর চইয়া আতল।। না জানি রমণী নোর কোথা চলি এলল। ফি জানিব। সিংহ ব্যান্ত ধরিরা থাইল।। ভীত মনে সাধুসুত ভাবিতে ভাবিতে। দেখিল বমণী আইল আ-নদা সনেভে । বজ হরে সাধস্থত ভাবে মনে খনে ! এই ক্ষন্যে পিত। এরে পাঠাইল বনে।। পতি ছাড়ি উপপতি ক-द्वर्ट्छ निम्ह्य । अक्षकाद्य वस्त द्यान ना इहेन अग्राः। अहे यस्त উপথতি নিশ্চয় এগেছে। সনভাছে একারণ গেল ভার কাছে হাসার্থে মনাবেশে নিজ কার্য্য সারি। হাসামুখে মনোস্কুথে व्यानिष्ट पंनाती।। वनवादम ताथि (गटन छेननिष्ट नद्य। ভাক্তেজার দেশে দেশে কলম্ভ রটিবে।। উচিত বিহিত শাস্তি হাম এয়প্রাণ। আমি একা নিত্র দেলে করিব প্রান।। এই मकः मानुद्रु जादिए जादिए। छेननीय देश्न धनी मन जानत्मरक ।। क्यांव करत नाथु कारत कतिन विकाना । जा-মণ্যে ছাভিয়া গেলি করি কার আশা।। ঘলালি অর্টেন্ডে स्मित्र देश ने जा जाया। ने जुवा रहे (व क्यांत्र हिम कर्व गांगा।।।

ছেন সিদারণ বাক্য শুনিয়া সহ্যা। ভাচে ধনী স कार्बि कि पहिल इकिना॥ मूल् श्रद्ध धीटत बीटत शिक्त अिं क्या जाम जब इंडांस जनह महोन्ह । यांत करा क রণ্যে পাঠার ভব পিছা। প্রবিধান কবি প্রাণ শুন দেই কথা।। এত বলি পুর্ব ক্রা করে বিভারিক। যে একার মনি क्षण हिल्ल विभवील ॥ रेमर कार्य काशावरण हेवल ,दनदास । ত্তনে আনি ছঃখে ভাষি হইয়া উদান ॥ নিজাগেলে ডেলানলে ত্রিয়া অন্তবে। কারু বাকো মণি লভা অরণ্য ভিতরে। अकर्राज पिन मध मापिया इचन । याहा हेन्छा देग्धामह कार् এथन। प्रतिशा भनित ल्यांचा गांधुतममन। जानत्य रहेका मद्य करूला घटनघन ॥ प्रथपृषि क्लाटन लट्ड छ।र्वत व्यक्ति वटः । বার হার ইবরের কি আশর্যে লীলে।। ३ ভন রভনে বিনে पारमा नाहि निरम। कर छान भूर्व्स हैश किन ना कहिला। গুনি ধনী গ্ৰুখ মনে লংগিল কহিছে। স্বিল্যে থাই ভূমি পিতৃ আলয়েতে।। কেন আর পুনর্কার আনার এরাশ। ভব পিতা আমারে দিলেন ধনবাস।। সাধ্যুত বলে প্রাণ এ (=मन कथा। छात्र। विस्त लिक्ट्रिस माँकाहेर दर्शया।। ড়নি মোর ধন মন ভুমিই জীবন। মারিব ছাভিতে ভোষা না हत्त मत्रा। एव स्थलम् छाटर जामि नयुक्त। त्कन्दन বাঁচিব প্রাণে হইলে অন্তর।। তাহে তুমি মনোরমা ভার্যা श्चित्रक्रमा। बदल ७८१ जिक्रूयस्य साहि क्य मना।। द्वार विधि ৰেদাস্ত সকল শাস্ত্রে বলে। প্রিয়তনা সতী ভার্যা। ক্তি ছুংকে भित्न।। अभव गांविजी जांधा हाजिया कानदन। वन स्थि ওরে প্রাণ যাই কোন প্রাংগ। বন্ধহতা। মুরাপান পদ্ধি দৃষ্ করে। সভী ভার্যা হৈতে ভাহা নিক্ষর নিস্তারে ।। अञ्चल হইলে কাল পতির মরণ। সাধ্বী দারী পাবে ভাহা अस्टिट वात-।।।

রবিকরঞ্জন।

দাবিত্রীর বিষরণ।

প্রার। সভীর লক্ষণ তবে শুন গুণবভী। সভাবুগে? ব।বিত্রী নাবেতে ছিল সভী।। তার পতি ধর্মে মাত নাম मकावान । करण खर्व बिक्नरम मा एक वि नमाम ॥ এक मिन পতি প্রে গেলেন কান্দে: দৈবাধীন ভার পতি মরে সেই शास ए मानिको पाधिन वरम देश्य दम शिक्ष। পতि काहर রহে সভী অভি দুংখ মতি।। হেনকালে উপনীত বমদুজগণ। সভী তাজে পৃতি অভ না করে স্পর্নন।। দুত যত হরে ভীত यटम निर्देशित । दिना बार्ष्य वर्षशंख जार्शन जाहेल।। লয়ে তার পতি গ্রাণ পিতৃণাঙি যায়। দেখি সভী হুঃৰ মতি পিছে পিছে ধার।। দেবি ধর্ম তার মর্মা জানিতে পারিল। কিন্দ্রাসিল যোগ পিছে কোথ। যাও বল।। শুনি সূবদনী ধনী ধেচে কেলে কয়। পতি বিনা সতী ভানে জীবন সংশয়। क्किन वर्लंड क्ष्म कानि **विकाग। ऋत छत्र** स्वार्गार्गः শাস্ত্রের নিথম।। স্ত্রীলোকের গুরুপতি গতি অবলার। ভাহার বিহনে প্রাণে নিখ্যা আশা পার।। ছিল ইউদেব তুঠ পতির সেরনে। পরিভত্তি অরলার মৃক্তির কারণে।। রমণীর পতি গতি বিনা কেবা ভাছে। এ কারণে চিভি ননে যাই তব পাছে।। ছতি নতি মিনতি যমের হইল ছংখ। আমি কি করি-ৰ ভোৱে বিখাভা বৈমুখ।। জন্য কোন থাকে ইচ্ছা চাহ মোর স্থান। যাহা ঢাবে ভাহা পাৰে বিনা পতি প্ৰাণ।। শুনি সভী ৰ্কীৰ্মতি হুইল আনন্দ। শ্বন্তর শাশুড়ী আছে চিরদিন অন্ধ।। अहे बद्ध-(पर क्ष्मू शाव इरिक्सा यम वटल शांद क्ष्मू मात्र नंत्र श्रोदन ॥ भूनकीत यमत्राच कतिल भन्नान। छेपाणि अर्थायको स्वरी शिष्ट शिष्ट मान॥ कछ पूरत शिश्र शहुत किरियां ग्रांट्स । भणाय गारिकी साहित्य मिथिटल भाहेसकी बिद्धारिक रव काथा या भूनकी । श्रनिया गाविजी बहुन শুন সারোদ্ধার। যে সর দেখিতে নিতা প্রনিতা শুন । 👫

त्रगिकत्रञ्जन ।

जग जिल्लाम परस्क देवस्य । इति द्वा द्वा स्था क्षा का গ্ৰণ। বুলান্তর শেষ মৰ হইবে পতন।। তেবা হল ছিল্ল জীবী भुका भीन नम्र । वह निन तटर आण हितकी हैं अन्तर १ ४००। লগা পিতা যাতা কেবা কার পতি। আমার আমার বলে त्रकरता वि**भृष्टि ॥ । कम दिन कीर्न इस इस्ट बदत श**ङ्गी ॥ ७३ यन छेत्राहिम छेशा विकट्ट किए।। दक्षम महम महम करनक किमान। शिक्षो घटत क**ट**त भटत बाना भतिकान। प्रकारण কিঞ্ছিৎ মনে অ**শ্বৰে উদান।** দে প্ৰকান হৈলে মতি ভ্ৰজেকে বিশাস।। **অনারানে মোহ পালে** গায় দিবা গতি। কুত্হণে যায় চলে দে<mark>বিয়া সক্তি ।। যখন যে</mark> জন ভ্ৰফা কররে সুজন : ारे जाकः। अविकाना कत नात्रात्रगा धन एव नार्वः आहम করিয়া সংহতি। মর্ভালোকে মোহ শোকে সকল বিশ্বভি।। খীন কছ হয় মত্ত বিষয়েতে বন্ধ। ভাবে নাকো বারেক দেখিতে ব্রহ্মানন্দ।। অভএব এই ভাষ আমার মনেতে। তব **छेभाग्य निम स्ट्रेन खब्बार्छ।। एम नत्न सूधा जूना रखामा**ह স্থভাষা। পতি জাৰ হাড়ি কর অনা ধরে আশা । প্রিয়া সাবিত্রী পুনঃ করে নিবেদন। রাজাচ্যুত শশুর আছবে চিফ निम।। १७ के भूकी थांछ ब्राष्ण कर पूर्वास्त्र । यह बदल दर करण शाहेरब बिण्डिस ।। वत्र निमा रुखे एटम छटल श्रूनमाह । সাধিতী না ছাড়ে তবু পশ্চাৎ ভাছার।। কল ছুরে দিরু। পরে नम किरत हात्र। शूर्वमञ्ज गारिकीरत स्विचारत लाग्र॥ विकारित कर रकन भूमः जाशमन। नानिकी क्रिन हे यरमञ्ज्ञ वन ॥ क्केमन यम भूनः नाविजीरत नम् । शक्ति आहे विना यकि बदत हैका हम ।। छार बत नमचन बिक अपूर्ण ভোৱে। শুনি স্তৃতি প্রণতি করমে যেত্করে।। নিজেক ক ষান লামা এতি কর। শত তত পৰিলাভ ক্টকে আল্লা श्रात क्या मन्त्र पूर्व व्वादिक नाविक। इवेदन क्या के लेक চলিন : সাৰিত্ৰী ৰণিণ কোলা যাও মতিৰাৰ_{ি শাৰ} জিলে

কেদনে বা ইইবে সন্ধান।। বুজি কর্ম মর্ম ধর্ম লভিছত ইইল।
প্রতিশ্রুত কি করিব ভাবিতে লাগিল।। বছুত্রত एম ক্ত করি
পার্সান। সাবিত্রীর পতি প্রাণ দিল তবে দান।। পেনে প্রাণ সভাবান উঠিরা বলিল। নিজ্ঞাৎক মত অক জলস চইল।
প্রতিল সাবিত্রী দেবী স্বাবিধরণ। সে রক্ষনী তথা ধনী
করিয়া বঞ্চন। লয়ে পাত ক্তমতি প্রভাতে চলিল। চকু
দীপ্ত রাজ্য প্রাপ্ত শ্রুত্রে দেখিলো। জীশিবচন্ত্র ঘোষাল
দাইহাট বাস। ভার আ্ঞানত প্রশ্ন হইল প্রকাশ।।

-000

नमां भरतत भूक जाया। नइ दांकी भमन।

পরাব। অতএব শুন প্রিরে সর্বলোকে বলে। পতি হয় ধনবান নারী ভাগাফলে।। ভার্যার সমান নাহি শরীর ভূমিকে। বিলার সমান নাহি শরীর ভূমিকে।। নাভার নমান নাহি পরীর পুবিকে: ঋপুর সমান নাহি শরীর नांगिक।। धामात नदान नाहि नरक्षाव मानिस्क। नहीत नमान माहि छेखना नाम्रिक ॥ कन रिना भीनगर। नाहि वाँहर क्षारत । भूज्य विमा गरहांदर ना इस त्यांखरम ॥ श्रम दिना बदन घटन इस्त्री मधुकता। हक्क विना नाहि ब्यादन वाहरत চকোর। বৰ্ষন বিনা যেন চাতকের ছংখ। কাটে বুক মনো-इ:च भारी दिना एक ॥ दूर्या हीन निया त्यन हुछ विना निमा। তারাগণ হারা ফেন হয় পূর্ণশশী।। সাধন বিহীন ধেন ভন্ত रीन भक्षा पञ्ची विना राजन विदीत दम्र यञ्च ॥ विना विना कान स्वतं नरह इरलाजन। वर्षु स्वन निवर्षक विहीन मन्नन।। आण होन अधीक प्रायम मिन्नायक । नकी विमा शक्ति बहेनश कुनिक्तक्षाः प्रकश्य गृहरु यक्ति मा याद्य सूक्तदी। जानादत व्यर करें वर्ष किया कृति ।। युक्ति वनी श्रीष्ठ यन नवाडा र्देन । यदमाञ्चर्य-रमञ्जूषनी **एथात रक्षिम ॥ त्रमनी** श्रामाञ्च হৈল ভাত্তর উদয়। ভাষা। সহ সাধুহুত চলিল ভালরা।

তির নিকটে পরে হরে উপনীত। মনেমনে দাঁধুকুত ভাবিশাহিত।। পিতৃ আক্রা ভার্যারে করিছে নিগকনে পুনর্কার প্রিলাম করিয়া গ্রহণ।। অব্রে কহি সব ক্যা করিছে। নাতি। আক্রার্টির মারিয়া কিল ছারে। পিতারে করিছে গোল বার্টির রাখিয়া নিল ছারে। পিতারে করিছে গোল বার্টির রাখিয়া নিল ছারে। পিতারে করিছে গোল বার্টির জারে লালি বার্টির ছারেছে।। দেখিলেক পুত্রবধু আছে লালি বার্টীর ছারেছে।। দেখিলেক পুত্রবধু আছে ভারিয়া। ক্রোবে বায় উপরোধ দেখহ ভাবিয়া।। ক্রোব বের করিয়া গ্রহণ। নিলহুতে বধু মুক্ত করিল হানা। দেখি যত ছারীলাণ করে হাহাকার। হার হার বিল একি ক্রেমার। প্রতিবাদীলাণ জানি করের রোদন। শক্রেমারিল গ্রহি আনিয়া নক্ষন।। দেখিল সকল তার পিতার। ভার। পুনে পতি গভাগতি করে হাহাকার।। শিবতমা বাঘালের জাদেশ যেমন। দেইমত রচে ছিল রাজনারায়ণ্যা

ভাষ্যাশোকে পহিত্র বিলাপ।

जिलको। हाम लिका कि कहिएल, मर्लिका मकाहेएल क्या प्लाप्त कार्या विधित्व। माहि क्यांन क्रणहान, फिन्ना क्या क्रणबान, नाल हरम क वाम मादित्व।। क्यांन प्लाप्त द्र क्षांची, हर्षेता क्रक मनी, प्लाप क्यांनेगाद वर क्यांन । बरवा क्रव्यंत्र वाला, ह्रक्ता क्रांक महान, माहि नामी क्यांन व्यांन ।। यह ब्रास्त नहीं कीर्द्र, क्रिन स्टार्क हिट्ल कार्द्र, या एक्ट्र क्रम विवत्रंत । क्रियाम्याम क्रिम कार्यं, मिन्ना धनी क्यांन हर्षेत्र, लाहेल वर्क मानिका प्रकृत ।। भिन्ना श्राह्म वर्ष मानिका आत्राह्म वर्षा, याचा क्रम प्रकृत शाहिता। क्षेत्र वर्षा क्रियांन क्रियांन । ब्राह्म क्रम्मान, विना स्टार क्यांचांक, क्यांचांक मानिका स्टाह्म क्रम्मान, विना स्टाह्म क्यांचांक, क्यांचांक मानिका

व्याध्यात । काभारत त्राचित्रा व्याप्त. त्काथा जातन शताहरमः ফেননে বাঁচিৰ ভৰ লোকে। কার কাছে দাখাইব, কোথা গেলে তোমা পাব, কেমনে রহিব ইগলোকে।। কি নোবে काकित्व त्यांत्य, त्यम्बन बृहित थ्रातः विस्कृत्मत त्यव हात्म इटका (जामात ७ व्यानम, ना क्टन मांतरि भाग, स्वि क्ष कार्ड दूक मुश्य ॥ दुमि खान खानि स्मृह, कर्नन बिक्ति भन, खान दिस्म रिम्ह किश्म तह । खन हीन मीन राम, नाहि वाद्य क्षांत्रम, मात्र आप आर्प मादि नत्र ॥ दक्याम दीविद ব্যার, ডোমা বিনা অক্তকার, কি ছার সংসার সার হীন। বয়নে সমন তারা, সে ভাগা হইল হার', মর পর নিনি নিশি रिम ।। भुद्रके द्वम नादि चानिः ष्रदक्ष शलारेद्व धनी, बानिटल ছালিতে নাহি হৈছ। তাজিয়া ভোনারে প্রাণ, ভাগে তাজি-काम आन, आन बित्न आर्त महरू कर ।। वीकारेट महना-नुःबः, त्याल मृत्य नित्त नृत्यः, त्मर्थ पृत्य मृत्यं त्क काछि। पूर्व निहा कार्ल स्मारतः, ताबिम्न। मृत्यंत घरतः, निर्मा विल নুঃরের কণাটে।। কোপানলে মনানলে, যদি ভানিতাম অলৈ, নেডো ৰালা ও চৰ কন্তা। আগে যে যুড়াতে ৰাগা, এখন লে দিরা খালা, খালার উপরে খালা খলে।। হার হায় দরি সরি, কি করি কি কৃষি করি, মনকরী হৈল জানিবার। विराय दक्षन मिक, अटम श्राटन भटक कति, अटवार अम्बद्धम লাহি আর ।। সামারে দদর হও, বারেক আর কথা कडे, নতে মোহর লও সভে করি ৷ যুচে লোকের গঞ্জনা, বার বিরহ यांच्या, नरहमा नरहमा প्रार्थ मति ॥ वाश्यिक कार्यात स्मारक, क्लिन वृद्ध मरमामुक्टच, भट्डा गर लाटक छाकि कहा। छान জতি উৎক্ষিত, মৃত্যুকাল উপস্থিত, অভত্তব এই দে বিনয়।। वारत आण जनकरण, छार्या गर बुरेक्टन, भक्र दारन कत अधिकार्ग । एस्य नाजी ना छाछिक वितरण देशास्त्र शाद, जब का को देन माराया॥ जियहन्त्र कर कर, देनवुद्ध हेश रह,

खाँदी। लाइक आंक्टक कीवन। विलक्ष नोहिक कार, कीव कति आप काक, कटह विक ब्राधनावाहन ॥

मार्ट्र एउना खर मान कार्य

্চীপদী। এতবলি নাধুমুক, হয়ে চিত্ত ওচগভ, স্থাপনাও काम मक, अवन स्टब्स माताम्यी। अम्र माठा अलामकिः মুক্তির হইছ মুক্তি, শক্তি বৃক্তি লাহি ভক্তি, ডাই ছাবা প্রছ गमाकनी ॥ भित्रीम प्रिटमम क्रमा, श्रदाम भूज्य (भद्र, इत मात পাপ বেশ, কর শেষ নিভার কারিণী। অর্পণা অপরাবিভা, নিৰ ৰমা বিষ্ণু মাছা, পাপ লাভা বিশ্বমাছা, ভাৱোগাপ जिङाश नाभिनो। विष्ठ काम अस काल, असेन पहत्रक কাল, ৰক্ষা কৰ প্ৰকাল, কানছুৱা কানেৰ ঘৰণী : ভিতৰ ধারণী ভারা,ব্রহ্মসুমী পরাৎপ্রা,ধাবাৎসালা নিরাকারা, জন্ম पृक्षा (यात्र विनामिली।। छठ नेभी छन्न छन, (हरिश्रा मात्र एह **छत, मत्रामत्री मत्रा कद, धाता नाम छत्र १० १० । छत्राहिट्छ** পার যেই, ভারা নাম-ধর ভেঁই, দুয় ব্রণে ধরি ভেঁই, ব্রাচি নোমে ত্রিলোক ভারিণী।। ছেদে গো জননী শুন, আছি আৰ निरंदमन, काकिलाम स्मामि ध्यान, भारे स्वन तम निधुवननी । এই ভিকা আমি চাই, মরে বেন ভারে পাই, ভোম। বিলে निक मारे, मिद्दा सिहाई (ना निवानी ॥ भवनिद्ध मिट मांडा, भवतर्भ भिरव द्रजा, निरं भिरव ग्रंडा नंडा, अधुधाकि मञ्जू टेलविन्नी। भिव भिरंद अञ्चलक, भिवत्य आक्रा वक, পরার স্প্রকাশিত, হৃংবে শাধু মরিল ওবনি। কচে ভাত্তি **इ**ध्य मन, विक ताक्नांतांत्रगः नाती ल्लाक विवत्नगः वृक्क পণ্ডিছগণ स्थानी॥

नमान्त्र नवर्त्ण व्यान काला।

পরার। এইবপে সাধুসুত তাজিল জীবন। সর্বজন জনু-কণ করয়ে জন্মন। পুজের মরণ দেখি রন্ধ সদাধর। কাজি লভাগভি যাত্র ভূষের উপর। লাধুর রমণী শুনি পু
নাল। বিষপান করি প্রাণ ভাবে ভহকা।। পুতহভা
হতা। ভার্যা হতা। ইছল। এই পোকে রক্ষ লাধু হ
ওাজল। দুফান্ডের শেনে কহে রাজার নানন। জ
বিবেচনা কর সর্কজন।। জবিচারে সদাগর সবংশ না
ভিতাহিত সর্ক কর্মে বিবেচনা ভাল।। জবিত্রি কর্মা করে
করে বিচার। সদাগর নভ দশা হইবে তাহার।। শুনিঃ
শুনে প্রাজা পুত্রের বচন। কোটাল উপরে করে দ
পর্কেন । তালিবাহে বধ এরে বিলম্ব না সহে। এত শুনিঃ
ভানহ ভবে ক্রেণা শুন মহারাজ এক নোর নিদেলন। ১
লাপ কর্মা ভাল নছে ক্লাচন।। জবিচারে নফ্ট হৈর
লগানন। শ্ববিচারে সবংশে মরিল ছর্মোধন।। জবি
মহাপাপ শুন মহারাজ। লোকান্ত নরক স্কার আ

রাজার মধ্যম পুজের উপদেশ।

পরার। পরেতে দুইাস্ত এক করছ প্রবণ। এক
ছিল এক ধনি মহাজন।। ধন ধানা পরিপূর্ণ ঐপর্যা সত
তক্ষা নালে জায়া তার অতি রপরতী।। বছ দিন ছ
আনশ্যে রহিল। দায়ে দোরে কিন্তু ভার পুত্র না জা
ক কারণ নেই জন ছার্থিত অন্তর। যাগ অপ যতে হোয়।
বিশ্বর।। এক দিন সেই জামে বাাধ এক অন। জাল
গেল বল পক্ষী অস্বেধণ।। বনে পিরা এক স্থানে আল ও
দিল। জার মধ্যে বছ থানা যতনে রাধিল।। হেনকালে
শুক্র সক্ষে সহস্র পাথী। হাইমন স্বক্ষিন খাদ্যন্তব্য দে
দিল কলে নেই জালে সকলে পভিল। সন্তরে আসিরা
আল কুজ্বলা। এক স্থানে বান্ধি জালে সহস্রেক প্
গুক্তে চনিল ভিত্র স্থে মনে স্থী।। পরে শুক্র দেশি
গাণের বন্ধন। ভাবিতে লাগিল কিন্তে স্ট্রেব মোচন।।

রাশকরঞ্জন । চুকু ভাষি বাাধ প্রতি করিল শিক্ষাণা। বহু ভাই ক্রাণা পাণিতে যেন আশা।। সে বলিল পাখী ধনি কনিয়া বহন। रिकाम कवित्रा इत्र पूरवात भी जन 🕸 अन्याय अगकरण कर য়ন্তা পাৰে। গুনি কহে সৰ্ব মূল্য সহত্ৰ ভক্ষা হবে।। ভাৰ कथा स्थान सक छेड्रव कतिन। अछ शाशी नहरू निया कि १३ दि বল ৫ খোও সাকো এ সকলে কেছত ছাভিন্ন কেবল স্থানাবে সুনি চলহ লইয়া।। স্থানাবে বিজন্ম করি সহত্য তথ্য পাবে। ভাষাতে ভোমার শ্রম স্থল হইবে।। বাবি বলে বছ ইহা কেমনে হইবে। এক পাথী গত যুদ্রা বিয়া কেব লতে।। শুক বনে জ্ঞাত তুমি নহ গোর গুন। সর্কাশাস্থ জানি আমি বিদ্যায় নিপুণ।। তিত বিবরণ অংগি পারি কহিবারে। অন্ধ্য দাধন পাৰি দাধিতে দংদাবে । শুনিয়া শুকের বাকঃ দৃঢ়তা করিয়া। ভতক্ষণে পাখিগণে দিলেক ছাড়িয়া।। শুঞ লযে হুফ হয়ে নগবেজে গেল। ভদস্তরে লয়ে জাব বেচিডে চলিস। পুর্বেদ সমাগর কথা করিসা অবন : ভাহার নাটীতে रा"४ श्रद्धराम उथन ।। (मधि श्रुक मनावत्र भूजिक देश्य। ক্ষমন তভক্ষণ মূলা জিঞাসিল।। বাগে বলে মহাশ্র আহি নাহি জানি। পাৰিৱে পাৰির মূল্য ছিক্তাস প্রাপনি।। ভার পর সদাগর শুক অভি কয়: কং শুক কভ মূল্য হইবে ভৌমায়।। শুক বলে মুলা মন কি কহিল আবি। এনমেটভ व्यापन छन स्ट्रेरच क्षाता। माधु बरन किल्वनिटन ब्याइड कोन रुग। एक बला मर्स माख इंहे या निर्मा। जगाधा আছমে বাহা পৃথিবী ভিতরে। ভাহা সাধিবারে পারি কণ চিন্তা করে।। ভূত ভবিষাৎ জার কর্ম বর্ত্তমান। ভাষ্। জহি-বারে পারি শুনহ প্রীথান।। বহু মন্ত বিদ্যা যভ আইরে আমার। ক্রমেতে সকল ভাছা হইবে প্রচার।। কহিলে মূলোর কথা অন জভাপর। সহত্র ভন্তা দিছে ব্যাধে করেছি ত্বীকার।। ধ্যার বাকো সংশ্র পাথিয়ে ছাড়ি নিল। ঠাড়ু

হরে গোরে লয়ে কিবল আইল।। ছতএব নিবেদন লম এন। বিক্রীতারে সহস্র ভঙ্কা দিতে পাক্তা হয়। শুন उनि माधु विश्वय रहेल। मूला निम्ना शर्छ १८६ छ। कराउल পৰে সাধু শুক লয়ে **আনন্দিভ মনে। অন্তঃপু**রে যমর্কিন ভার্মা স্থানে।। গারে গুরু ক্রমুভা নাধুর রমণী। शिक्षदर कांदर होटथ सूचननी ॥ इने कदन वह यक् करत वहा। जारांटक जटकत देशन हतिन काखन ॥ वस मक ना खनाम क्रमान। चाटर छाता शहिटकार धाटक निकार ্ট মতে ভাক সেধা আদিকে এছিল। দৈবাধানী স শীজিত ইইল।। কন্ত শত বৈদ্য যত হৈল নিয়েছিল।। পিছ একান্য রহিব গীড়িত /৷ মনে **ফু:খী** করে **ওক** : শীভাষ। কদন্তবে ভূতি করে ভার **প্রতি ক**র।। যদি ৫ धक निज चोहेटक त्रह राम। किश्रिक खर्शिय कानि कवि प वर ॥ तम उपित विना दारन श्रीका माखि श्रवः। এ গুনিরা নাধু মনেন ভালে।। বিখ্যা হলে যাবে চলে পুন कांशिया । चकारन यक यम मच मिथा। इस्त ।। तक्तीरत গুরৈ ডাকি সদাগর। তুই জনে পরামর্শ করিয়া বিভ ইব্য 'অষ্টেবণে ভবে দিলেন বিষায়। কচিলেন খেন वर्ष खर जम् ।। राज एक क्यांन प्रत्य ना चार्विक मान । मिन विकास सामिय अहे छात्य।। ज्ञा बांदका वादि মিখ্যা যেৰা কয়। নিশ্চয় নরক ভার নাহিক সংশয়।। সাধু न्द्रल बाणु कृषि गांदव बदन। वन दन्धि कि क्यानिद्रव जो क्षेत्ररा ॥ खक वल मांडा चामि अथा कि कहित। जारि मिनिटक शांदि यथम आनित ।। **कदव कुक कथा** टेइटक वि इंदेल। खाउडीएक निविद्य खात्रण बाद्य जिला। छेल्मी छ एक। নিজ পরিবার। পর্বজন হার্ডীমম জানকা ভাপার।। ভ क्टिंड किंक कांग ज्याप्न तरिल। शहर ज्या रेशक एक वि क्षेत्र ॥ भेटब्र**क अंधि टेलन क**डि **फारम्प**र । फाटर मरम

वाहैर मार्कार कोन्या। तस्य रस्त्र रहक्षा करिया समा। कर अक शाहेन कात्र सभ विवयन।। सुद्ध सन्द त्यस्तर्ग इंडाकार टारें। क्रमा आकात रात इस नक सारे पार्क कर करमत গুণ কি শুনাৰ ধাৰ। চিএজীৰী বুবা হয় যেই জন খাই।। क्षावस छप्यस बोर्यावस सकि। मृत्य श्रीम विश्वास्य सहस् करा क्षिण । পুত इकि यन इकि गर्स करका स्था। पुरह बाग करह नक्षी हरत्र कांत्र बना। जिहे कन नहा उ.४ छक विष्क्रभः ममांबर यात्रांत अस्टरम एकका।। ध्यान गांची देश सूची নাধুর অন্তর। পরে শুক উর্বি নিজেন ভার শ্রা। উপ্রি गिवत्व नांधू **भा**रतांधा हरेता। एत्व गारे क्व खक हां शेर्ह कार्भन ॥ भिर्व कन वास्त्र उस कन बिक्शानिन । नस्त्र स कन करक विकास करिया। अनि भरी सूचमनी चादव विकासस्य। हिन हमस्कांत कन (सर्वे कान ज्ञान ॥ এक छादि रूक बाह्र মাৰু কাছে গেল। বিস্তারিত গুণ বত তাহাঁরে কহিল।। জ্যাট্র র্দ্ধি ধন হৃদ্ধি যাত । কমলা অচলা তার গৃহে পরে चिकि।। माधु करह छन शिद्ध कांगांत नहन। कहेकरा करें क्ल क्द्र रहार्थन ॥ क्रमस्टा द्राक्तिक कलिएन वस् कल । स्क् बार अक्टा १हैरव सूगरुत।। कृषि वनी ताहे कहा अधिन ह्यालन। निष्ठा निष्ठा करने डांट्स् प्रेमक निक्षम ।। विद्वा निहन म्हिक्ट करन क्षा करेंग। पिटन पिटन शिल्म निर्मेश का किएक वाणिन।। नगरेम कुछम युक्ता शहर भद्र कव। जांदन नाही भन्न मित्र रहेन मक्त्रा । जोत्र ग्रदश शक्त कल सूभक रहेन । वाबुदनरम रेषदव खांश खूखरन शक्ति॥ किस् क्रांत त्राय जुड़ कत अभिशान । मृजिका न्यार्थरन एक बिरमत समान । प्रा স্পর্শ কল যেবা করমে ভক্ষা। নিশ্চিত তাহার মৃত্যু ন थर्षन ॥ किन्तु भ इहान्त्र छात्र एक ना कान्छि। कान्तिक পূর্নেকে ভবে বিশেষ কহিছ।। ভদন্তর সাধুপত্নী মেই ফল रवर्ष। जानत्क लहेब्रा काचा मरदलांशरम ब्राइके।।

वागक्र अन ।

অনুত ফল ভক্ষণে উপপত্তির মৃত্য।

প্রার। বিগ্রার্ডান্ড এক শুনহ্ সম্প্রতি। সাধু তীব এক হিল উন্থাতি।। ভারে সাপিব কল स মনেতে। সেই কল রাখে ধনী ছাভি যতনেতে। भारत करन करन होरह 'सूबहती। होरव मरन का হইতে বজনী।। উপপ্তি দিলনেতে বিলয় না সয়। মৰে এখন যে জান্ত নাহি হয়।। এমত চিন্তায় দিয়। हटन भिन । उटया प्रभा हछ पूर्व कमिलम देवन।। म আনিতে দুতী হরে প্রসারণ। কিয়া দুভী উলপতি ওওঁকণ।। সাধুর যুবকী পরে বসন ভূষণ। নির্ভেট क्रान सूर्थ इडेन मिलन।। माना वाश तक गांप करि লন। সহদ্বী প্রতি ভাতে। করিল তথন।। জলপাতি আন করি আয়োজন। ছরা করি সহচরী আনে তত क्क्रमक थोना यक काकि पटलाइत। धटवर मालाहेन ए हुक्सर्गः भाषात किका इत अकानित्व माम। দেয় মিডাই সামগ্রী অমুপ্র।। উপপ্তি প্রতি ধরী । क्थन। क्लभानकति आंग पृश्व कत मन।। हवा पूष শের বিবিধ বিধান। স্বর্তমতি উপশতি করি এলা পত্নে ধনী সেই কল আনি তজকণ ৷ উপপতি হস্তে इंदर्ज ममर्भव॥ या कहिल इन कल कोण। लिल শুনিরা হাসিয়া বলে সাধুর রমণী।। ভোমাব সমান माहि शिव्रक्ता छेवम स्रोतात खरा निकास छेखन। वीन बनिन करनत खग्छन। विनय कि कन वन करें।। एरे मांबु तारे कन शारेन रम बन। ल देश कात यम याणाजन।। इंडे क्डे क्टर अम उ ক্রি। ক্রে ক্রে গাত্র শর্ম হরি কম্প্রমান। বি প্রিয়াত ভারিল কথন। সাধু পদ্মী প্রতি কছে করিয় सम । धिक विक तथम देखांत किक देखांत मन । धिक

কাবিশালি ওছার জীবন।। অধিক কি কর বিক আন,তে এখন। কর থেরে হৈল মোর মৃত্যু সংঘটন। তে এই র করে কর করে সমর্পণ। ভাতে নই করা বুলি নাতে ওলাতে ।। কা হিতে কহিতে তার ২ইক মরণ। উপপতি নেল পিতৃ পাত্র ভবন। উপপতিত এ ছুরাভি নেথিয়া বুবতী। হাছ কি হইল বলি ডিটে শীল্রণতি।। উত্তম উদক আনি মুগেতে নিফিল। ঘাঁচাইতে বলু চেক্টা অনেক করিল।। নিশ্ব নারেছে জান হলৈ তান। ভূমেতে পতিরাধনী করুরে রোগে।। শিব্যক্স ঘোণালের আজা অনুসারে। ভিল রাজনারায়ণ বিল্ প্রারো।

উপপতি লোকে নাধু জীর বিলাগ।

दप्-जिनमो। रेमन छनन्छि, बाङ्ता गुनमो काफि नश्री क्षांच कथ। कि इस्त कि इस्त, श्रीत कि पूर्णास, बीवादन भवन पात्र ॥ कर्के श्टब विधि, विद्रा अविधि, भूनः यनि निका হরি। আমি কুলবালা, প্রেমেতে আকুলা, বাঁচিব কেমন করি।। করিবানে হিভ, হিলে বিপরীক, ইইল রুপাল লেখে। घोटल शांतांकि, साल बानि मारे, मैं ज़िर कात शार्भ !! इहेटर मझल, शांखबाहिलांत्र कल, यम घटत किट्ड के छै।। ल लाँहे। खेना, मात शारत क्लि, महिल शहत वहा।। शंत्र হার হার, প্রাণ হার যার, এ দার ভাগ্যের ফলে। কপালে আন্তন, বিধাতা বিগুণ, বিধ অমৃতের কলে।। হরি হরি হরিঃ মরি মরি মরি, উক্ত উহ্ব উত্ত আছা আহা। কণালের কেরে পড़िलाम कटर, स्थात स्माद्य देशल हेशा। रून वा युवछोत्ने त्निव उपाक, पूर्व छात भए मत्न। करह नाना रेग्डक नानाक्ष्रांत्म कारम, तब बन्धांक दक्ष्यत्न ॥ कार्या मान्ना सक রহিতে সদত,কথন লা ভাষ ভিনা মিছা প্রেমে কেন্দ্র, আর্ফ্রে शाल करन, ध्वमकारन गाँथि भीत !! नारहक कोन्यान ভাক প্রিরে বলে, মুচাও মনের খুল। ভোনার বিহাস, নাহি

नै। हि आदन, रहेग्रांकि युर्ग जून हा अ हात बीनम, बीनः बन, त्यांत्रा दिना नगेरि जाना । जाहरू त्यत्रा शकि, तर ६ ব্দক্তি, না করে খোল ক্রিয়ার ।। আমার বঞ্জণা- কর্মন জ্য নে বেংর যদে বঞ্জিত। ভাজিয়া তাহাতের ভক্তিয়া ছেই सूर्ध हिलाम किकिए।। इत्य क्षिम नाफ हिल जहकातः ट्यामा यरमागरः। ना एकेटक स्मरः करि विधि त्वमः, फेर क्रयांत्र करता जिस्य क्लवाया, कार्टर करे बाला, य করিতে গারি। যেমন দর্শন, সোমার ওপন, ওমরে। मति॥ भरमत यादमाः जनात जारममाः कहित्स शक्षमाः रम शक्कमा मृद्ध, उस सूच रहरह, कुक्ती हि**ला**म **अस्ट**द ॥ न लतान, लोगान गर्याल, ७३ मृक्तु ८६४४ महै। इसना मदन, कीवन, बहुद हटक खोला अहै।। इःश्रीपांत श्लान, तमगीत क्रांची क्षारन महत्र क्रांच। (यह छोल पहत्र, जाटम क्र्य বিধাতা যাত্র বিশ্বর্থ । কহে সহচরী, গুনশো স্থান্তরি, सिरंग छेशात्र नाहे। काश्मिक इडेटर, काश्मिदा कि **रकत काम्य का ऋथाहै।। (शाहाहेटन निनि, दिवा**दत क समहश्च भूबाटर कूल। इहेरद शक्षमा, लाटक बाक्षमावा क्ट्रमह मृत ! छेश्रवूक नत्र, विश्व गमत्र, वाक्षाहिटक हटक देसदयत भक्ति, भौदिक भटक शांकि स्म धटत विख्य वस बात वरुष, समह अथन, इक्तांस वृक वटरा। प्रकृ छे कारेबा मध्यकि, याहे हम सभी कूटन । छनिया युक्डि, दुर्तक, क्रेडि वर्गित छथन। यद्ध माम्हामित्र, छेशश्रक लीख कहिन अमन। व्यक्ति बना कहन, निमा नती छीटा त्त्रक्ष काराविता। महत्वज्ञ वाहि, वहत्व विवाहि, शूनः निव आदला ।। मरनाइः दर्श सनी, त्शाशंत्र यामिनी- छः दर्श निर्देश स्रामः। मटनाष्ट्रांच प्राप्त, त्कृत वाहि चाटन, फाटर कि क्यान्। त् बाह्य जास्ट्र, श्राम्भित्न भटत, भटत कट्र नाता । भटनत नितदह, छाटचे छाचे मदह, श्राचे कत नमांधा

3 7 7 7 7 7

रत उक्रान जिल्लाकु व प्रकार

दिल्ही। विकासनी (शाकावेस, स्वद्भन वेस्स देवार एक खाल एम जिल्ला। आएक फेठि तथागर भारत शंतम अब्दा. আন্তঃপুরে করিল গমন।। দেখনে রুক্তের ক্রেড়া, আজি বড় মনোলোভা- শোভিত হরেছে কর খালে। আছে সাধু কুত্ क्रात. अक क्रक क्ष्मकारमा, नामुस्याहन लिख्या खुक्टम । दर्गीव সাধু জুট হয়ে। দল নিল কুড়াইফে,বজে রালে কবিদা মডনো। भारत नाषु भरत यस. चटला माहत कारहासका दर्भ तत हिराक লৈগ্ৰমে।। ২ত বিবেচনা করি, শিষা অভি ছব। করি, উপান্তী काराज ज्यानेक। राति शांति करा भति, करा रागर्नः रुखि, ভাৰত পাৰ্যে **ভাৰ বিভাগিত ৷৷ দেখি আমি খাও কল**৷ বিভাগে কি আছে কল, কৰে বা কেমন শক কলে। উপ্পতি কথা र्णाने, कत लक्ष त्म इष्मी, उद्भन कतिल कुठूरूतन। रमनन गृहिन कल, (कमनि कलिल कल, सूश्वदण विस्तर साहित। वाका प्रना कान हड. हहेल चूट्य शक्डि, माधु यदल वि इटना কি হলো। জুডলে পাছিল। কেন, কং দেখি বিবরণ, এছ বলি জলে দিল হাত। মুখেতে নাহিক খাস, দেখিয়া ১ইজ ত্রাদ, করে সাখু শিরে করা<mark>খাত</mark>।।

मनागरतत विलाभ वर्गम।

जिल्ली। शंत्र शंत्र कि घष्टिन, कि कतिए कि श्रेन, करन कर्नात्त्र बच्च करना कार्यम नागु नानाकारम, क्रम वान नाहि वास्त्र, श्रामचात्र व्यक्ष वर्ष क्षम ॥ कहिए व्यक्षित विश्वत काम विश्वति । कहिए व्यक्षित विश्वत निवस्त । कहिए व्यक्षित स्थान, क्षमुख्य भाग क्षमचान, वृश्व यात्र अन व्यक्षित । क्षमचान व्यक्षित व्यक्षित । व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित । व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित । व्यक्षित व्यक्ष व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष

না প্রেরিলে প্রাণে মরি ভোমা বিমা এ সংসার মিছে ।। সুঙা ার লাভি স্থান, কোষায় মুদ্ধার প্রোণ, জার কেবা যুড়ানে জালারে। দার্গ্য শে প্রব্য় বড়, গালি দিতে সহা দভ, বুভ বলে মড়েংখাঁটা ধরে ৷৷ মন্ত মদন্তে করে নোরে না সভা कटड़, खाद्द विभ गई कथा,लहन। अटक कालकनी आहे, पुन शक्त (शत्न काम्र-मिटन आन। तम विन वण्टन ॥ भारे यमि था ৰিষ, পৃথিবী বিদার দিস, যাই তবে ভাছার মধ্যেতে। পুরে मिर्देश (अधानत्तर आनिकास कुरिक किर्ता, अधन ना तर कि সাবে। বেষ দশা कश्रदीन कथात्र ना ভাব हिन, खुरिया ब्यानक (कोन्युका। तुष्टा श्रद्ध तुष्टा नहें, खब द्रारा हिल एवं দমত যুড়াতে বুকে মুখে। দারী বিনা এ সংগ্রেড জান হ অন্ধ্রকার, নারী সার অসার সংলারে। আপন যোবন ধঃ अनोब्रोटन नमर्भन, कटब अना भूकटध्त कटब ॥ बमनी नवर व्यक्ति, नोहि दक्तान शतमकि,महा माह्या **कारह क**न। अदन। गह मतल काल, शदत करत ऋषामान, यदत पूर्व मधुत वहरन নাহি প্রাপর বোধ, করে েবা অনুরোধ, ভাইারে হুড়া কান্যনলে। প্রথমেতে বেধি বিন্দু, পরেতে সুধার সিন্ধু, উ (इब निलान উथाल !! शूक्स बकात (एकू, शरफ विधि नी সেভু, মুধানহ পাঠালে কুবনে। করে মুধা বিভরণ, ভোট भुद्भरवंद्र अन, निक धन राम्य पामा करने ।। किन्तु यक वस्यकः। খন্য কে বুকিবে খার, আমি ভার না পাই সন্ধান। জ बिधि यस्तरकात्तवधन मकरमण्डा कूना श्रीम स्था कहि शाः বুবতী সমূদ্র রনে, মড়িলে সুধার জাগে, শেষ রসে কত সু थात्र। शक्त राव अकि नात्र, द्वा थित्त कूषा यात्र, व अमृ कूबाह पालाब।। रम स्था वक्षिक रहा वाँवि चांत यारेटक रित्र रित रागाणिक रागाणिक। व्यावेक्षा म इका बुका बाका काँछे कूछा, अलाना करमत पुत्रा नाहे (मद्भ मधुर शांति, क्छ इन मिना निर्मित द्वात्रनी विशे**ना** र

वक्षा अ.त वम वण १७. जुमि (यादा नीश व.७. कांक्षात मा-तक (यादा १५ था। भदन तथ छेडामाडा, १००० १८० १८० भवा १८८, १७ प्रत्ये व्यम्दन वादा ध्वात । महस्र भटा १८५० स्था १८८ थादा, महाहे भटा करता वादा ध्वात खाटह सुदा नोडि १ १८८ थादा, महाहे भटा करता, यादा घटा खाटह सुदा नोडि १ १९०० युवक नहे, शक्त खाडू हहे, तुष्टा ४८० १८ हमादा किछ । खामांच कशांल श्लासा, खांड वाद सुदि हाप्ट । खांचा । एएए १३ लाम (बदन ।। यादि बादंग भारत १९८५) मादीया १९६ विद्या, मादीया

विना (नाटव शुक रथ :

जिल्ही। एक जन र्रंत मून, वाष्ट्रांट महनत र्नः क्रिश् इक्ष करा जानि निया। मठा गिषा। ना लाहिनः, त्रिके क्रिन श्रुकेश, जालनात श्रिक्षी मितिया। प्रिट दल प्रते एक, हिल के भरनत हुःश, वृज्ञादय जागांत भूच नाथ। रेमल भावित श्रित्रस्म, लाखिएस कि खाद्माजन, स्टूट विशि माधित के वाम। १४ विल कर्मण, इरह नाथु रकांच मन, निक्त श्रुट्त व्यवनित्र उथन। उथ्लेश श्रुक्त करत, भीस्तिस्थित स्टूट स्टूट स्टूटिन गांधित कीवन।। विक माक्षीत्रिक्त स्वाम, मदम स्टूट स्टूटिनावित आका क्रिल करिक इन्न।। स्वित्रस्थ बाला मक, क्रिक विस्

भंतात। छेन्। विमा गांतु नमा क्वांश्वि। छेन्। विभा क्वांशि गांतुत सुदर्शे।। छेन्द्रप्तत छात द्वार स्विद्ध मा भादा। सुनिष्ठ व्याभन छात हाति देश निद्य।। छेन्द्रप्तत ल्वा भीका देश मा क्या। नम्ड विश्विष्ठ क्वांशि हिन्द्र निद्य।। छेन्द्रप्तत ल्वा भीका देश मा क्या। नम्ड विश्विष्ठ क्वांशि क्वांशि क्वांशि क्वांशि क्वांशि क्वांशि क्वांशि मांति।। धेर मेच भाक्तीद्र छेन्द्रप्त मधन। धेर मेच भावाशित स्वांशि क्वांशित स्वांशि क्वांशित स्वांशित स्व

ধ্র পতি জড়ি বুদ্ধি হীম-। দকা দ্রারা নাহি ভার অধর अधिम ॥ धक विन तमाहसी माधुत बाजि देशक। क्यां माति নিকাবারে আইল রলনীতে। তত্ত্বরে নিজ ময়ে পাক অত্যন্তির। হেনকালে পতি তার মুহেতে আইল। দেশিল ्राक्षम जना नाहि चारशकत्।। ज्यापन्यत्र ध्यादिनीरत कत्रंप स्त्रित । एर्फ्टना त्याहिनी पूरे लाया निर्दाहिन । कांत াছে রঙ্গে ভজে কোখা যদেছিল।। ফুখার ছব্দিছে পেট ত্তে প্ৰাণ যায়। মাহিলে বাটার বান্ধি তবে লোগ পায়।। .याहिमी तकार्य बरल कि बील करणारत। नाहि सब स्यात नृहर् हर्ष्कत माया (बरहा) थिक खीवरन कालामुथ अस्त শ্বাহুছ। কোথার দেখিলি মোরে ওবে আঁটকুছ।। লাহিস मोजिएक फॅल्मे। এक मान मरम। कब ठी है थानि वीकी मकरस া জালে। রামু বলে নোহিনী ধরেছে ভোর দন।। জানারে ষ্মৰ কথা শহিশ বাদ্যা। আমি বদি মারি ভোৱে কোন াপেরাবে। স্বার কি ভয়ের দিন স্বাহে মোব তোকে।। -छ श्रीन त्याहियों क्यारमटक खेले **पर**ण। स्कृतिय क्षकारत शरादा करूँ गरम।। कि बनिय महि मन दनिया छाछात्र। প্রনা ছলে মাক কান কাটিভাষ ভার।। পেই মাত্র গই কথা ्राञ्जी कविता तकांव राष्ट्र केंछि। नरम शक्तिमा फेठिन ক্রোগভরে চুলে ধরে পান্তিস ভূতলে। ক্রোধেতে চপ্টাখাত খারে ভার গালে।। রক্তণাত হৈল অঙ্গে মাবে বাঁটার বাছি। াদাবাতে ভাকিলেক রন্ধনের হাঁছি।। এইবলে মোহিনীরে ाजिल विक्रत। क्रांध्यम् त्राम् कृत्य शिल क्षांमाखत्।। मू-विदी ध्याहिनी कठि शटित आधारक। वक् मुक्त्य निक लाटिक লাগিল কান্ধিতে।। নরদের যারি দুবে নরদে নিবারি। গিবক্স খাইব অন্তরে নির করি।। অভি ক্লেশে সে রজনী र्रात आश्रद्ध । श्रष्ट्राट्य नांधुत्र राणि कड़िया नगन ।। त्रक २८क तन अक् स्टेट्स च्यन । चक्के क्रिय मन व्यक्तिया प्रदेश ॥ स्टेट

াতে সেই কল মোহিন্দী খাইল। জপ্তথা তার করা ইকাল হইল।।

कल अन्तर मानीस लाखन अवन्तर প্রাধ। দেশিয়া সুবর্গ বর্ণ ধনিতে ভুললা। কংগ্রাজ পাব। निक शक्त भक्त धनना ।। शहर शाम कि प्रतित कि शहर । র্থনা ব্যাহর ভিন্নি উক্ত সুচাক সুগঠনা ৮ লেখন দোলায়। रु**ष्ठ वर्गनेवाट**क दलका । किरियाटक उपकर्णाद्य प्रकास कारेस माक्स्मा । दरम्भी साक्षावि जिनि मना त्रम ह सीता । सांच তি রতিপঞ্জি করে ভারে বাসনা।। নিজ বালে হানি লাভ ।বৈষিয়া আপনা। কুচ হৈবি আছে লিটা উত্তথ্য করেন। 🖰 ছে করে কেনীয়র শুভাকরে লোভনা। মুগান্ত বিশীন যাবে . नारक रुक्ट रामना । अधु गटक सन्तरणान करे गटन नारण सर কৰা লোভা মৰোলোভা সে হস্ত নয়ন।। অসুসান হসা विभिन्न क्षार्थ। अनुना । अभूगक शांध नांक मानिका करणा म्या ।। करी किया रहणीं श्रेटर्ड मरके लिली भएला । युल उन्हार शदय नादी क्केल अकि घढेना।। अल काबि देशल द्वी राज হেশ যাভনা। কৃতিবারে সমাগরে করে মনে ভাবনা।। ১৩ ालि टाल कीन करत क्रिक शंभना । नभावदा द्वीं करा १८६ हके रममा। करह मानुकात नमु अधा दक्त कर हा। दहन मनी अभवी वा इहेरव काम अमा। अ नावक प्रशेषणः সুমেন নাহি জুলনা। মিফীভাষী কহে দাসী জাদাবে ব हनमा।। धाक लाडे थक शेष्ठे त्यांत मत्त्र करता माः भागु एक कि विजया ६ कथा आन वल मा।। राज भागी शांव ালি কেন কর ছলনা। কিবা নাম কোথা খাম নতা তথা বল ।।। নাহি জাৰি নাহি চিনি ভূনি কার ললনা। পুনঃ দানী हटक कार्य राज राज वार्षे मा । जी से स्टब्स अन्यानदेशक क्रदेश वक त्रमा !!

नांतीत शां.हरस मणानारतः सुद्रा ।

लिहा । खन कृत्याम माद नाम ए साकिनी। निका आति एव नामी अ लामनाति ।। गक ताल शक्ति ।। मादि बात्त शक्ते। अश्वादित्र। कामादि (न कर्ति विश्वक्रित्र।) मादि बादक कृति। इस कावित्र। अश्वादेत्र। त्य विष्कृतक मदन। त्यदम कावि खन्ति। अश्वादेत्र विश्वकृत क्षेत्र। मश्काद्ध आहेत। मृद्धुत हैद्धान्।। तिर्वे भांत तमे कल कवित्र क्ष्मा। बद्धान्। बनावित्र ध्वम्मि एवेन ।। प्रिवित्र। ब्यान्त कल कित्र। बद्धान्। बनावित्र ध्वमि एवेन ।। प्रिवित्र। ब्यान्त कल कित्र। ब्यान्त्र । करिकाद्य स्थानित ब्यादेशा कर्त्य खन हहेन कृत्य श्वित्र। द्वा ब्याधि एवेन क्ष्मी द्वान वा कृति।। अक्षादित्य विना एक्षी खरकद्य स्थित्र।। कृद्धित स्थान क्षित्र।।

2040\$04m

ক্ৰিচারে রাজাব বরণ ।

পাহার। দৃষ্ঠীন্তের শোষে করে রাজার তনর। বিচার বিচিত্র নার্য্য কর মহাশার।। অবিচারে নার্য্য নার্য পারে অনুচাপ। কুম্বশ ঘোষণা আনু জলা করের পাপ।। এত যদি বলিলা
নো রাজার নার্য্য। তথাপিং না শুনিলা কুরন্ত রাজার।।
বংক্তে জানি এক করিয়া গ্রহণ। সভা মপ্যে ছোট পুজে
বধে তভজ্জণ।। ব্যতিক উন্যুক্ত ভারে দেখিরা ভনর।
লাভাত্রেছে কাভরেতে শাপ দিয়া কর।। যেমত ব্যিলে ভূমি
মাবে জালিচারে। শিলা দেহ হবে তব কর্ম জনুসারে।। যভ
দিন চক্র মুর্যা উদার হইবে। প্রাণ রাবে পাপে জাণ নিশ্চর
না হবে।। এক বলি রাজাপুক্ত তাজিল জীবন। পাধাণ হইসা
রাজা পতে কভক্ষণ।। দেখিরা গিভার রীত জার ছই জন।
রাজা ভাজি জারণে প্রবৈশে, ততক্ষণ।। পাত্র মিত্র সভাসদ
নক্ষ ভর্মণণ। স্তরিচারে রাজ্য ছাজি কৈল পলায়ন।। পভি

ফিনি (ুলাণেতে মুখননে সান্ত) সাঁচটি খনি ভণ্ড श्रामक क्षेत्रक रणानी कहा। निवन विकास समार् भूख हराई कुन (अर्थ हर अन्न रहांभांत्र ; कान जाती) शहराङ हत्व लाह ॥ विन्द्रियादक स्मान्त्वरक क्लिके नदान । ाके घटन स्थाम शहर कविष (भोक्स । कविटर ३ छन ए.सर তাৰ ৰা বহিতে। ভবেত নি-ভিছ মোর তেয়কন ১ইবে।। বছা-वह इत्थरित अके कथा छटन। कुल्लाकी युनको वा दासिन (क्षपटन)। कुटै खटन निर्ण्डिटन इहिटन अक घटते । अन्य क्रम धन्त ভ্ৰপাছে বাকি করে।। খিছাহিত বিপরীত চর ভূট নতে। अवीकात स्रक्षोकात कृतिम शास्त्रदकः। मा कतिस्य मास्य हरू कृषिता भन्नाती। जेशकुक व सङ्क बदन बादन कृषि॥ ह रिसिट्ट मा हहेर्ड नधुत आंटवाटक। आपि रक्त भक्ति हान দুষ্কর পালেতে।। এত ভাবি কর্মে ভাবি গালোধিয়া মন। গ্রাসীরে সন্দিতে বসায় তথন !৷ আরোজন ওডকণ ক্রি भिन घटत । इदम प्रि नमारंगी विभिन्न ७ नस्ट हा नाभू भटक অভঃপুরে করিয়া প্রবেশ। বধুরে বিনয় করি বাহিল বিনেয়।। र्खाम धनी हत्त्वाननी हर्षका भस्ततः। विना बाहक ७८३ वर्षक প্রেমির **যরে।। দুঃর মনে ভতক**ে। জারুত্তে রন্ধন। জপ্রাধ **टिश्वि अश महाामी शबन ॥**

> অথ সন্নাসীর বৃষ্ঠীর সহিত ক্রোপক্ষন ও রুতিদান চিকা নিবয়ণ।

भराव। श्रुष्ठि निक्ष भिनिष्ठि युवकी श्रीक्ष कहा। श्रेन सूचननी धनी भाषात्र विनत्र ॥ कर ज्ञुभ त्रश्कुभ काल्पप्रच ११८त । सूच नार्थ (श्रुष्टा) स्वत्र भिन्न । कर ज्ञुभ त्रश्कुभ काल्पप्रच ११८त । सूच नार्थ (श्रुष्टा) स्वत्र भिन्न । स्वाप्ति । राज्य । स्वाप्ति । स्वाप्त

्रेश वर्ग कारल वर्ग मुठा अवश्वा । प्राण्डक राजा मा ांक्रीय भारत भाग । काहित्य माखाय काव कर्म वर्ग पाम । अभागाम मेठ एवं शोजन मान सम्र । नाहि क्या काल्य माहि वर्ग क्षेत्र । पृद्ध स्वित्त मन स्वित्व केल्या गरकाय । (भग्न माम लाई क्षेत्र १४ कारन के ग्रम ।

ध्यम सुबरी भन्मानीत्र छाछि छिद्ध ।

भवाः । छनि स्वतनी धनी नक्षामीय कथा । कथा नहत नहत । १० छ का स्वत वह स्वत व्यक्त स्वत । १० छन् । १० छन

অথ সন্ধানীৰ প্ৰভাৱনাম্ভৰ চাতুৰ্যা ছান। যুবভীর ধর্ম ককা।

 ব্যি পাছে বা শুলাৰ করে মোহে য়া কাছবন ভাৰান্তভ কৰ क्षेत्र **शिक्षत्र । इरव वर्रम वाक्षा क्राइन कराहि** (छोक्स्_{र)} (छोक्_{र) प} ाईन उत्त जानि परन भना खक्ता इतिमा वर्गे स्कृत त्यम ॥ विद्युभी ४२ छाति अर्धान कामिद्यः। मक्षाःमीदव कराः ার কহিছে বিনয়ে। কুমহ মাগর প্রেম সম্পার সম্পানী। ादन कोनता त्यादर वनादन छ काना। कार्निनांच सूर्यन जान सम सनमान । यह दक्त पुनः युनः करित आर्थान । এলের সংগত ভূমি জেগিক <mark>সন্ধাসী। তব আ</mark>জে। অবিজ্ঞা না করেরে এ নামী।। তরহ ভোজন পান ভাস্ব ভক্ষণ । তর-कत व्यमन्द्र पिर चानिक्रम । दक्त काले एक युक्त क धन धन । धन्य द्रान अन्। शाहर कृषित अवन । कमा प्रान ाके गरम मन्नामी कथन। शामाधूर्य मरमासूर्य फाउन एउ बम । यमन प्रतिस कर भारेन प्रचम । एक मल सरीवर नवागीत सम।। ভোকনাতে আনন্দেতে আন্মন কান त्रक खन निरंदनन प्रमिक। स्माती । नारिक दिसार कर-গীতল কর্ছ।। প্রেমরূপে শীন্ত এনে খালিক্সম পেচ। বাল-বাত অন্তর হতেছে আলাভন।। হকু আলা নরি পরা লেছ ल्पालिकन। कटर पनी अयमनी शाहिक समग्र। श्रीत रा ्नों नित्र माहि एस एस ।। सादि गडी कूत्रवडी मुंबरी कारिनी। निर्मिक्की अधी कृष्ठी कुन्छ। रिनिदरी ॥ शक्ति द्वर् जना পতে কেন দিব রতি। ভানি হও পানও সন্যাসী জ্বোধ নহি।। দীৰ্ঘাৰ ছাড়ি আৰু গহলে নিশান। অবিযাসি দৰ্কৰালী गटर मर्खनामा। এত विश ब्लाब्य यति । क्र्यूत नरेन । सह नांग डाश किल मादीरत भावित ॥ देवनवर्श डेक्स्टम्टम ल्रा গিল আঘাত। কাতরা বুবতা অভিটেল ইকপার !! বুজাই। कता करम भूटक व्यवनिकः कृत्वनीटः कृत्वास्टरः नकतंनी मिन्सा। दलदा बाला महत्ता द्रमम् देशम स्थान व्यवस्था व्यवस्था

ন্দ্ৰন্তিল ভতকুংখ।। ভক্তপারে নিকান্তবে চিন্তরে উপায়। নান চলে কি কোনলে লইব ইহার।। দাঞাইটি বাস বিজ নানাণ নাম। ভার আন্ধানতে এন্ন হইল প্রকান।।

-

সাধুপুত্তের অকমাৎ মুক্তী বিবরণ।

পরার। অভপের সদাগর শুন বিষরণ। ভুটী মন্ত্র নানা ्र क्वाबिस इंब्र्बिस ॥ अटमाहर मञ्ज मान कति स्टेरियक। मञ्ज তল পাধুপুত্র হানে স্থান কৈছে॥ বাধুপুত্র মন্ট ছিন্ত ছিল यक्षःभूदत्त । । इसकोटल वक्षश्रद्धल वांग विश्व करत् । अकि देशल প্ৰাণ এবং ৰজে সাধুস্ক ও **আচমিতে ভূচলেতে** হইল মুক্তি ाब करेन कि चणिन शत गांदीशन। सूनीकन कम करत भूरथ-क रिक्षम।। भाग युरक छेनरक कि इंडेवारत शादत। तामानन बस्कर काटन केटेक: एरत । इशा नवाकीत काटस नाटस সহাগর। সদালাপ মাতি তাপ হরিষাত্র॥ ধ্রেকালে .कार्कारदेव वास सक्तापुत । क्षेत्र मस देश्व कक्त गांद्र कका শীরগতি ক্লথমতি গেল অভ্যপুরে। বজাঘাত সমাঘাত প্রাপ্ত ्राटक रहति।। इत्रभानम (भारकेत मिलटन यश्र टेहन। शादय जन (माक्निम अधिक प्रतिन।। इति इति भवि भवि कि कवि जिलाहा जनकार रखांचार जामात भाषात्र । गांगाकारक तानुकात्म क्रेंग्रा वियोगे। ता कम्मन श्रमि क्न शामान दि-নীৰ্ণ। পুজ্ঞােকে মনোত্তে জানহত হলো। বিদ্যাবান देश्याभण पारमक आहेल ।। दम मकत विकल रहेल अञ्चलदर । শক্তি শাধ হায় হায় সর্বজন ভাবে।। হেনকালে সেইস্থলে পাষ্ট এলাদী। খাতে বাজে ইল হস্তে উপদ্বিত সাদি।। किक्शीनल कि इंड्रेम बल विवेदन । मटच उटन टेम्बरूटन ध क्र घंछेन । विनादशंदर्श देशवरमादश अ कंश व्हेल । मति मति भन्न कति खूरुटल পिछल ॥ अति इसे दुक्ति नसे अतिसे यात्रक। নারাবেশি পরভেষি ছোর প্রভারক। সাধুর কুমারে প 🦠

क्षित्री **प्रकृत । उपचटत जनाश्वट**त क्रिक रहन १० रहाकात ३ हेश सन वैदाय देशाता हत्व सुक्ष मर बाल जिल्ला दिए । भारत । भारत कुछ मन कुछ कुरकेर वहरत । एलकार इन्हें अन्त b'लल (गोश्टम ।। साहेश द्वारभट्स मुद्रकट्स के र कहा। र भवेन विकास सम प्रशासित । सामुजर्गन एएकि ११ एक है अहर र घरता एखरवरम यहा देवरव वार्कित विका ः सीक्षीः গমাচার না জান আগনি। নরবক্ত অভিনিক্ত লক্ষিতা রমণী ्त्रहें कर होटन थीं। ८ड१मांव सम्बद्धन । व्टहाइबंदि उद्यानांवी নে রক্ত ভক্ষণে।। স্বিশেষ দৈরুদেশ কই শুন সামি। 🖈 कर्ष विमर्कन एक काट्ड कृषि । हमध्यांत मुन्तिर अके ५८ স্তবন। প্রণতি সন্ন্যামী প্রতি করে ২৩ করে। এল কাই বে माध्यि दक्षमदम गादन काना। बाहि छात्रि हा करी पन र्तान बना ॥ कर शाव महोशत्त कटर भूनर्काव । सन्द्र ११४ **डेक्टबरण सूलावण खांत्र ॥ छाजिमी मिम्ह्य यार्गर 🚉 २**०० नीरत । अवस्था विभार्कन त्मर कृषि कारत ॥ दर्गनीर सू वार भार रहन क्षत्राकः। हत्त छाल सुरुष्टम मुहित्त विलक শীস্ত যাহ দেখি কছ আনিয়া আমারে। হিতাহিত নিত্র নিত ৰুব তার পারে।। সদাগর এত শুনি ছুটের বর্চন। স্বস্থবে अञ्चल्टा कर्नित शमन।। भविषामी धक मामी छाकिया (११) পৰে। খালে অন্ত তদন্ত কহিল ততকলে।। এতে জন নারী। গণ করি বিবসনা। কং খাসি উক্লেশে চিত্র কাজে কিনা। गांदू कथा छनि शंव यथा नांत्रीगः। अन्क बर्ल संस्थ नानी করি তিবসন।। তার পরে বধুরে করিয়া দুট্টিশাতঃ নেথে ভার উরুপর আছরে আঘাত।। তবে দ্রী শীত্ত লাগি না-ধুরে কহিল। নিভ ব্যু শুনি সাধু বিদর্থ হুইল।। ভাবে মনে কোন প্রাণে দিয় বিশক্ষন। এমত হটলে হও হটবে মক্ষন :: थक विन क्षित हिंत महानित कारह। करह छ। दे यात छेन-পরে চিছ আছে।। হিতাহিত কি বিহিত করি মহাশ্র। ভূমি

ं अवत महोश्र व्यक्ति वह ॥ श्रीष्ठ एवं महोश्र कोबाँद वहन ।

निश् तेष्ट्रक नेक कार्ट्सिक गठेन ॥ सूमाश्र कार्शी मध्या ना
शत्व मोदीद्व ॥ कांत्रकथ कविवेद्ध तक नती कीद्र ॥ मह्माश्रद में

श्व मान्न कांक क्रांचर्य । नामाहित्य में मध्य भूदो सूक
श्व ॥ मानु कांक क्रांचर्यालं कहें स्था स्ट्रांच । द्वांच मद्रम कर्या
श्व ॥ मानु कांक क्रांचर्यालं कहें स्था स्ट्रांच । द्वांच मद्रम कर्या
शिक्षा मह्मानी किल भूतांक्क मन ॥ भ्रांकीश्र गत्न विक्र ।

स्व भाग । कांव स्राक्तियद अष्ट हरेंग क्रमान ॥

পোৰ হীলা পুতৰধুকে কলে বিলক্ষ্য

শারার। শাধু অতি ছুঃখনতি দিতে বিস্কার। তথাপতে
ক্রেপুরি করিয়া গ্রমন। করে ধরি বধুরে তাহার বসাইল।
করে ব্রহ্ম ঘার কল জাপনি করিল।। ততকাণে ভ্রাগণে ক্রিল ভাকিরা। শিল্পক লইরা জলে দেহ ভানাইনা। লাজ্যপ্রে করে ধারে শিল্পক লইব। ত্রোভ জলে কুভূহনে ভাগাইরা দিল।। দিগমর ভনরত সাধুর নন্ধনে। অতি ব্রস্ত করে
দুল্ম হস্ত পরসদে।। হরিব বিবাদে নাশু অভিভ হইল। স্নাাবিরে ছতি করে প্রশান করিল।। স্নাানী ভাবিল ভাল হৈল
স্করণাধা স্থানাপ্রে রমণীরে করিব স্ভোগা। এখানে
পাইলে পাছে সানে নর্মজন। স্থানাস্বরে গিরা পরে করিব
এহন।। এত বলি আইল চলি সেই নদী তীরে। ভাবে সনে
ব্যানে স্থানিরে বাঁকস্বে।।

রমণীর জাতার সহিত দর্শন।

প্রার। তক্তপরে দৈব কেরে শুন বিবরণ। সেই রমণীর প্রায়া বীর বারারণ। গিরাহিল অন্য হল বাণিজ্য করিতে। নিজ কার্নো বহু রাজ্যে জমি আনক্ষেচে।। বহু তরী নতে করি সেই সদানব। বহু োক সঙ্গে বার প্রাপানার ঘর।। আসিতে প্রাসিতে পথে নদীর ভীরেছে। দেখ এক সর্প দর্প করে নাচনিত্রে।। বিকট জাকার ভর্মানক ভার কণা। ইতান্তেত হরে हरकात धूष्टिम् गर्क, कन्मरर्गत गर्क गर्क, मेर्क जोरा पहायह का विमी ।। और बालतन नारक, नारकरक मुश्हेर नारक, रमांच नारक दशना व्यवीरतः। शतः यशै विमा बार्लः अत्यक्षि मन ष्मित्र भारतः, मृष्ठ भारत्म शक्ति शीरत शीरतः॥। करतः भरत सम्ब राक, अकीरभट अभिशास, अञ्चलांच मजल २६नी। छान्न বার্ষ্টের আনে, স্তুতি নতি মৃত্তাবে, সূত্র পালে পাতাতে मिनिशा कर महा महावाना, एक बाटा अमहाका मह জারা শুষ্ঠ বিশেশি। যুৱার মনেঃ পান্ত বীতল হত্ত তাপ, প্রাণে তাপ হট সুদ্ধি ভাপিনী।। এই মতে ছানি নতি করে দেই গুণবহী, নলে অভি ছার্ভা গ্রমনে। দেবিলা ক নার কান্তি,অন্তরে হইল আন্তি,২৬ কান্তি নিজের নকলে : ভাকি বলে সঙাগণে, কবিত হটয়া মনে, প্রাণে জ্যানা-रिक भागांद्र। वर्षि वह कन्। शाहे, ए वर्षा वाहित छाने, नदर राहे कारजंद कामात् ।। এकि स्मिथ कहु है लागि आह रमपूर, भाष्ट्र तक्कूट गाकि वादर। जीवास रिट्यूम क्रमं, भारत क्रम्मे रेशन ध्रमः, श्राकृतन श्राकृष्टि वक्र क्रम्सः। শুনিশ্বা কাহাৰ কথা, রাজপুত্র মনে ব্যথ্য, ভাবে এখা ঘটিল প্রসার। করিলাম বার সাধ, করে বিধি ভার বাদ, কি এ-मान रविद्य वियोग ।। कृति पात श्रद्धियन, माहि जात नद्रकार, अध्देन रह कुछ मूक । कामात क्यांन ल्यांक, बांक व्याद সৃষ্টি ছাড়া, মূল গোড়া বিধাতা বিরত।। এত দাবি দভক্ষ রাজপুত্র বিচক্ষণ, প্রাক্ষণ নক্ষন এতি কর। কোন কার্যা নং ব্ৰহ্ম, নহে বন্ধ দায় গ্ৰন্থ, কেন ব্যস্ত হক মধ্যানায় 🖽 ব্ৰেষি এক বুৰতীরে, এক চিস্কিত অভনে, আমি ভারে করাব মিলম। अब श्विन विद्यासूक, शहरतन क्यी यूक, शूर्वमण शहेन ध्यन । ভবে वक् हातिकान, छाकि এक लाकारण, विकास करिक सर कथा। (य त्रभनी कटनेव्हिल, क्ष्यित्रा इति (गन. टल क्षर् কাহার হহিতা ৷৷ কিজাতি কি নামধরে, বিশেষ দুলাস্ ক্লেড্রের

धन्नत्व कटर विश्ववतः। **सन सन ता तृष्टांख, ब्रभुगोत्र** प्र शत्रा निकास कहित सुविकात ॥ त्रृत्येत अने आर्यी अथा देर छन्धाम- इष्ट्रांकत नाटम नुश्यमि । निद्धां कृष्णाह्य छिनि, । उदर कानी कानि, बहुमर्गि नाटम छ। ब बानी ॥ बदल वः मही बना। ७८५ अनि धन योगा, छोत गाउँ शेक पना है। ংত্রেখর পুঞ্জনাম, কন্যা দেখি অনুপাম, রত্নাবভী নাম দি পিল। বাজারাণী সোঁহে বছু, তাম বিধি করি বছু, আর র্ভু শ্র**প্রিল । ধনে রুদ্ধি করে ধন, রভা**নে মিলে রুড্না দ্টিন বি**ধালা কৰিল।। অবিবাহ রত্বাবতী, এ কা**রণ নর্প ভিক্তা অভি বিবাহ কারণ। দেশেতে ঘোষণা দিল, বছ র थुळ काहेन, स्नार (शन मिक्स विशेषमा जाका अल् इ करत, त्य भौतित्व कशिवाद्य, कन्।। काद्य मित्व मूश्वत । स এই বিধরণ, এত কহিল তামিণ, চারি জন আনন্দ অভবে চারিস্থন ওবস্তরে, প্রসাধ তক্ষা করে, জানদা অকরে রং তথা ৷ নানা বাক্য আলাপনে, নিজা গেল চারি জনে, কং कर्ग गामिनी अलाला॥ स्ट्रस्य निखा देशस सन सनम प *४१ अभ- माना उन् विरुक्त नकता। कूछ्रदर छाट्क भी काल तरन छाटक कांक, व्यक्तांक तक कालाव्याः छिटित व्हर्डि हर्डि, कालीट्र अशाम काँडा,आंडाक्ट्रा गांति नमी छोटा वाककना अरम्रस्टन, इहेश आनरण मटन, ठाति अटन हर ीरत भीरत ।। काम टीम खिनि जल जनक महरू नक कना প্রক্রে কুটুছলে। গলফল্প মন্দ গতি, অধন মধুন ভতি, ক ाहि दुखे मत्म हत्ता !!

-

ব্দথ চাতি ধন্ধুর কপ দর্শনে দুগর বাসী জ্রীর খেলোকি।

ত্রিপদী। হেনকালে দৈবকালে, কল আদিবার হতে ভালে হড পুর দারীগণ। দেখি বপ চলাচন, অঞ্চতে জ

नक बन, क्रीमा रल श्रेन मनन।। ভাবে नकि प्राचि अलः অপরণ রবীকুপ, রপের বিরূপ রুগ হলে । বৃদ্ধি শ্রন্থে শৰী, পুড়বে পড়িয়া খনি, অংশমিণ জনম ১ইল। তেই বলৈ अला नहे, मत्नाद्वः च लात्त कहे, हैका (मात्र करे करकाहिनी। हरें, हंस बर्श शास्त्र, मन त्य शरहर है।तम, जना कारक दूधः शिश्रीमी।। क्ट राज भारता मधी, वांक केशकुल सिंब, আঁথি কেন করিছে রোদন। নরনে নৃত্ত্র ভারা, চাদ্দ দেখি टेश्य श्रातात्वदश्याद्या अर्थे (सकाद्रम ।। हेन्द्रा दर्शन हेश्य धञ्चानमून क्रेन खन्न, मितानमा हार्ट्स मगना। अक्रक्षम कंडका, मन्दन दर्शाहरू मन, निर्देशन करत करा करें।। अने खेटक সহারী, এই **অনুমান ক**রি। ৰূপ হেরি পঞ্চিয়ালি কোৰে। ১৯১ की हस्य देशक निर्माण किसने किस, (कम श्रक क्रांस्ट्रिस मन्द्रित ভবে এক অনুযানি, শুন সূত্র স্থানী, কি আনি কেমদ দশা थरहे। निकास करें के बारन, भविष्क रामनी भटन, बारन आहत মদন এ বটে ।। নারী অবলা অখলা, গরসা কুলের নালা, এছ था। फिल धरे थाति। सूर्य मृद्ध मन्त्र स्थान, अवन रहे। क व्यामि, छोटन शत्ल पित्रा त्थ्रम कीमि ॥ तहान कम का काल महान पूर्विका नायण करने, तरन गयी ना श्रात निनिष्ठ । नाम खाँन ভাতকিনী, হয় অভি পিপাবিনী, তবু বিষ নহীর জলেতে :-দে জল না করে পান, হবে ভাবে অপ্যান, খেলে প্রান नौरव जागञ्चारम । तम बाग ध काम किर्ता, कूटन कालि १८६ यान, भवि खाल भरमव छड़ारम ।। पूरत भाकि बरह जाक, गर्म रम् अञ्चनक, जनक निवादत अनाम्नाटम । दशम (मधि । श्रमानन्त्र, ल्लाहरू कारमद्रथस्त्र, नाहि मन्न वस्त्र (अपकीरन । सन्बद्ध मन्द कन,कात्रथक निरवसन,मनांखन श्रद्धाद्धवन । देश्टन नेश्व नावा-नन, छेक किया विश्व सन, निर्दा द्य उथनि नी इन ॥ मनासन इःथीनल, अमीनन कामनल, सुधारल इहेल महत्व। यक्ति भारा तम देशके निरम क्ल पाना याहेक, अ अनम प्रदा महम क्रा म

श्रुत भाष्टि यटम निर्देन, खाटर भन्न इकान, निश्वान क्यानित्र, ज्राता। जिल्हान क्षेत्रस कार्य, काल महि दात्रमीय, ल लांके तरए मुख्य ।। जाकित्य त्योवन यमः क्यतं यम केला शके (त्ये ४८२) क्लात्य। कल्ल एवं छलाब्धं व. त्यरा कार वस वह जोडोफीडि आहर कूटन। देशता महत्र कांका निराहित उन्दूर नाउनक मा खादन तरह कुरन।। इ পিশানা নাকি, খোলেতে ভাষতে স্থী, নল দেখি একি इक्ष्णी विरम्भन कुरल श्रीरन, कृष्ट र, क्रांक्च सूरन, भूष आहे तथन माञ्चा । तम्यम अब यक अब कृत्म मित्र दिन গদন কবিয়ে হয়ে দাবী। ভাতারের মুখে ছাই, **আ**রি माणि लाई, २८स दाई सूचात लियानी । जाकतिनी त्यान दहा डार्ट्स नवसर्गे, मन्छ मुख्येत्व चार्वि मारम । डार्ट्स : क्ट्रायरम, क्ष पुत्र सूत्रा लाजि, कार्यावट अस्त आंतिय करत करत हुँहै करहा, शांन चरत श्रह्मांचरत, क्रिनियत मनाएक्टम । उपरान उपन श्रीन, भूटच ब्रांच पूर्यायान. कड सूर्थ इस (मार ॥ जाकिता केलाम माहे, गरम एडरव अपहें, अन आना कवि निवातन। निवधस आद्या गटन, ।तक कालद्यात, द्य स्थ वियानिक भनः।।

बद ठाडियक् इक्षिका है। त नमन ।

लह-सिल्मि । उटच वाशांत्रणानिक मन,वृद्ध कडिल बन । लाई हा हाइन शतांदल स्थम, त्राष्ट्रिक मुक्कम ।। म रिक्षांत्र, मा द्रावि छेगांत्र, शृक्ष्यामदल लाग यात्र । भूम वि लाइ, वट उलि यात्र, विक्रिश ममन माह्य ।। स्थम नाथ छटक्र) और कहि, मूर्वाक्षी यात्र स्वद्ध । क्दत स्थाह्मम, नट्ड व्हिल क्यू लाइड (मटन छटन ।। अद्य कडक्यम, व्यू छात्रिकम, मा क्दत रामन। द्रमित स्थाहम, जाक्षांत्र छन्न, देशल भूकविक मन विक्रा छन्नद्र । सिन स्थाहम, जाक्षांत्र छन्न, देशल भूकविक मन

थरत भट्ड, बार्जी स्रांद्र सारत, निर्द प्रमर्कीत एक्ट ।। दर्गकारक দেখিতে, স্থানক নমেতে, **প্রবো**ন্য ভিতরেতে। স্থান্ত শো ভিত্তের নালা মতন করা কভাবিভাবেতে লা আনে ভাবে শোভা, আঁত মনোজোজা, দেখে পরে হাজ সভা। াম ইন্দ্র मना, १५ रगरण (भाषा, कर्ष्ट्राविक मर्टर याचा ।। बखुराव यह, ব্রাজন পশ্চিত, বনিয়াছে এড শঙ্ । সকল প্রীভ, বিচার বিহিত, বিস্তাবিষ্ঠ কৰ কন্ত ৷৷ ভাবিষ্ঠা ভ্ৰমন বন্ধ চারিষ্কন मछात्र हिल्पिके रमा करमरमाध्या जुल स्वाप्ता छात छून क्षरे गम ।। हिटल माम यन, द्वरा हातिकान, मिल कारि দর্শন। পরে**তে চিন্তন, করি**য়া বাজ্য, জিলালেন প্রেট क्षम ।। तथ हार्विक्रमः एकाथा जानकामः कि मिनिएड काम्मान । শুনি ভতক্ষণ, আনেশ্বিত মন, কহে বিপ্ৰেয় নন্দন !! শুন नवर्तिः, निर्दापि मर्ख्यकि अधिक्षमगरत् विक्षिः। वक्ष विभाग রুতি, ক্রিয়া প্রমিতি, ২ই মোর। চারি জাতি। ভাজিন ৰস্তি, বহু দেশে গতি, বৰুত্ত বস্তা ক্ষতি । এ প্ৰাচে ন-स्थेटि, टेम्ट्व टेक्ट शिक्ट, खन उट्ट नग्नशीक ॥ ज्यागित्र। नगाय, ন্ধনিয়া বিস্তারে, পড়েছি বিষম কেরে। করু সারে। ক্রান अध्य मुनवत, अश्च कर्ष किव भूतत ।। खिनश्चा ताळन, कांचा निष्क मनः वामः निल कठकाः। नमान मिलन, जिल्ला राइन करव दाकसादाम्य।

しまです

তাথ রাজ। বিপ্রসূতে প্রশ্ন জিঞাসা।

পরার। পর দিন প্রান্তকালে উঠি নূপবর। বন্ধুবর্গ গণ সঙ্গে হর্মিতান্তর।। পাতি চারিকনে তবে গইয়া সক্তেতে সর্বাধন চলিলেন নগর জমিতে।। ক্রমেতে নগর বব করিয়া জমণ। প্রাম প্রান্তভাগে সবে করিল গমন।। তথার দেখিল এক কাছরে মন্দির। তার মধ্যে এক স্থানে আছে চারি

वानकहस्रम !

িব। সৌহনলাবদ্ধ আছে বুল মুখ ভার। তাহা থানি বহু হৈল চমৎকার।। হেনকালে নূপতি হইন নার। বিজ্ঞানিল প্রশ্ন তবে চারিজন প্রতি।। কণ জানবান হও এই জন। নারি মুখ্র এক ছানে আ কারণ।। ছই ছই লির ছাছে সংযোগ রয়েছে। কচ কার মুখ্র কি কারণে আছে।। এত শুনি বিপ্রস্তু আন নব। নুপতিরে কার্ডের শুন বিবরণ।। পার্জ মি রাজা কথার বসিল। বিপ্রস্তুক সামন্তিত কথা আরম্ভি

一

নাম ক্রন্ত উত্তর ও লাবি মুগু বিদরণ ;

শামার ৷ এই নগরেছে পুনের্মাছল এক রাজা ৷ শুনে গুণাছিত রাজের শুভ প্রকা।। হরিদাস নামে সেই জার মাত্রিনী । বাক্য মিষ্টা ইন্টা নিষ্ঠ শাংখ্র দৃঢ় জানী।। अधि निवं परि क्ष हम्दक्षि । असा घटन विश्व पटन নাহি আরে। ধর্ম কর মশা জাত ফুডর্ম না করে। ধনে मारम माम जना अवश्मारकः। लेकि इकि युक्ति गर्द আপে আশ। ব্যুৱক দেব ভক্ত অগ্যক্ত ভিলাব। কল্প গভি মাদ স্থানক অস্তর। সুবিহিত্রীতি নীতি স্বাকার 🗠 মন্দাবতী নামেতে ব্ৰহী তার নারী। 🛪 धात क्ष वर्षिटक मा भाति॥ विवर्ष यू वर्ष दर्ग दर्ग दर्ग द ্ণ। ऋषर्भ वर्ণिटङ दर्न জুবর্ণ লাষণ্য ।। হাতভান প্রভাব প্র त्म (मोन्फर्न) । तृक्षादृष्टि जून वाटन (मसिटन करेथर्ग)। क्षर प्रशांत स्थालन बंदण। सूत्रकित मीश कदत बंदणः मीर्ल । क्षे मन पूरे बन कद्रत्य दक्षन । व्यमि ल्ला कर्म रुट्छ सूर्यक्रम ॥ मरमात्रम असूर्यम छेड्म सूर्य **७० ७७ अमस्त्र मिदांद्ध मिणि पिवा।। धार्या कार्व।** मही भार्च। ७।८० कुरत। तरक ७८क कात नरक तरह हुत्स ।। व्यायम् दन जार्गः। बद्धः वन नित्रसन् । जिटलद ভাবে মন্ত্রী ভার্মারে অন্তর । নিশ্চম এলর্ম বোর আঁপির পলকে। পদ মন সমর্পণ করিল ভার্মাকে। এই কংগ মন্ত্রী-বর আছে সন্তর্নতি। তংকর মুপবর শুন চন্ত্রাভিন

一世 (中国の

धार नहीं ब्रांनर्स मधारीत धांत्रधाः

পরার। আইল সন্থাসী এক মন্ত্রীর নাটাতে। ভুতাগারী कामाहेल महोदत कहित्छ।। এত दर्भन मान गर महोत्व क-ছিল। শুনি মন্ত্ৰী ভতকৰে আপনি খাইল।। পাদা অর্থ্য पिग्ना टेक्स हत्र वन्स्म । अञ्चीवव न्यद्व हिल्याद क्रुके इम ॥ स्तु। अंदा मना अवः थीना खदा निजा। कृषी गम एकक्त मनाही হটল।। ভোকনাতে দিগমর করি ছাচমন। মন্ত্রী প্রতি তুষ্ট ছাতি হৈল ভার মন ।। মন্ত্রী প্রতিঃ কহিতে লাগিলা দিগমব। দেখিয়া ভোমার ভক্তি পুলকিভান্তন । ২ন জুণা ওৰ ৰূপ েখি চমৎকার। আামি কিছু তব ৰূপে দিব জ্ঞান श्राद्र।। अन निल जक कल लाख करे। देनरक। सानदन्तरक সমর্গিল মন্ত্রীয় হাতে।। আমার সাক্ষাতে নল কর্ম ভক্ষ। जनस्रात कहित कालाब धिवत्।। स्थान मही भावे कल छन्नन করিল। প্রতদক্ষ কলের ফল তথনি ফলিল।। তার পর দিশের করিল জিঞালা। কেমন তোমার ভার্যা র্নিক यूरवर्गा।। এত শুনি महीयत क्षेप्य हानिमा। एन एए। मूर्य পুস্প বিকশিত হৈল। ভূতলে পজিল পুস্প গম্বে জামোদিত চমৎকার মন্ত্রীবর অভি পুলকিত।। বতু মতে ন্র্যাশীরে खनन क्रिल। खटन जूके मिशबत विमात रहेगा। क्रियन कक्क पञ्जी इतिमान। तांकांत्र निकटि श्रेम इट्य म्टनास्नाम আদা অন্ত বৃদ্ধান্ত কহিল ভভক্ষণ। শুনিয়া ভূপতি ক্ষতি পুন-किত मन।। जन्छत्त केदत्र तोका, भकात गानन। दन्धु यत्री व्यामारका विनश मर्कक्त ॥ जन्नामरका मकरकरण देवरम कूल्-रत। मही मदन हरू सुभ देवरम रश्नकारण ॥ माना कांश्व

বাদ্য ভাগু গাইছে গাইক। নানারকে উল্লে নাচে নৃত্ নাইক। বহু নাচ শত শত কাব্য আলাপন। শুনিরা হ গাড়ি পুর্বিক মন। গান বাদা বাকা হলে হাসিচে গিল। মুখে হৈতে বহু পুষ্প নিগত হইল। সভা সহ গ্রিভ দেখি চমৎকার। ভাবেমনে ক্রিমুখনে নাহি হেন আ তন্তলে নৃথতি লইয়া বহু ধন। পুর্বার কপে ভাবে সম্পণ। পুর্হার লয়ে মন্ত্রী নিজালয়ে গোল। এই নেশে নেশে প্রচার হইল। ছিল্পণ দাস ছিল দাঙ্গী বাদী। এই ব্যন্ত প্রকাশিতে মনে অভিনাবি। শি খোথানের আন্দেশ বেমন। সেই মন্ত রচে ছিল নারারব।।

ष्मध भिवित (मरभव वाषा अष्ट्रश्रुटत मञ्जी (अवर्)। পরার। শিবিব বাজ্যের থাজা সুক্সেন নাম। मुख्य नज़राबि छार छन्त्रांस । এक मिन अहे कथा ? द्रास्त्रन । मङ्कीदरत राविदाधत है क्या देश्ल मन ।। कमछरत मद्वी छाकि थक छन। इष्ट्रभूद वाहेट खाळा नित्नन इ পে রাজনে জানাইবে মের নমকার। রাজ্যের মঞ্জ । যভ আহে আর ।। এত বলি এক পত্র লিখি ভতক।। यही राष्ट्राक कहिन नमर्भग।। गमार रहेन मन्नी व बाखांत्र। रक्ष लोक नद्य गांजा कतिल खरात्र।। किंदू সেরে মন্ত্রী এখানে আইল। নৃপ্তির সহ নিমা সাকাৎ ব जिल्लानिक मुभवत हालाह मक्ता छिमित्र क्रिक मञ्जी मक्ता उपरक्ष शाकत निर्मि देवन ममर्भगा भाव भार রামা পুলফিত মন।। শীষ্কাতি নরপতি বাসভান । নেবার্থে আপন দাখ নিবুক করিল।। রাজিযোগে उन्हा गर्कात मास्त्र । महोबद्ध स्थानिक कतिहा स्थाप्त नर्जिक्ट सर्धे यम गणांत्र विमिन्न । निक मञ्जी जाकिवादत र পাঠাইল।। শীশ্রগতি মন্ত্রীবরে কহিন মধান। সম্মান গাল ইয়া মন্ত্রী হরিষ বিহাদ।। মনে মনে মনাঞ্চল লাগিল ভাবিছে নারী হাজি কেমন যাইব রজনীতে। হিভাহিত বিপরীত হয় দুই মতে। এত বলি গেল চলি ভার্নারে কহিতে।।

कथ प्रष्ठी जारी। निक्छे इष्टें क विणावत्रहेश श्वर्भ इहाँ शहराम खेललकि वर्गतन (४०)

ত্রিগানী। মন্ত্রী স্তুতি নতি করে, যুবতীর করে ধরে, ক-হিতে লাগিল মৃত্যুরে। শুন শুন প্রাণ প্রিরে, বাণতে বি-ষ্ঠে হিংহ, কোন প্রাণে বলিব ভোমারে॥ রাজা ছাজি নিদা-রুণ, করিল দারুণ পণ্য র**জনীতে ডাকিল আ**খাঙে। ঘটেতে উচিত নর: না গেলে কি লানি খর, কেমনে রাখিয়া যাব ভোরে।। এ কথা ভানর। ধনী, বলে খন জবন্দি, আমি একা নারিব রহিতে: ভূমি নয়নের ভারা, রঞ্জীতে হৈতে হারা, সারা নিশি মরিষ ছাবেতে।। সংপেছি তোমাতে প্রাণ, वीय वा द्य वा धार, भाम भाषभाम एवं ठीहि। मा छट्ड स्टी त्रास्त महा, जान पता मक्तिहा, जिथिनीत जमा गणि नाहि।। দত্তে শতবার হেরি, তিলে না ছেরিলে মরি, চ্ই শ্রা আঁণ খিব প্লকে। বল শুনি গুণমণি, তালে নিজ প্রেমাবিনী, नाहि महा णात्न कता (तरथ ॥ त्थमाधिनी हरकातिनी, शिशा-निमी वित्रहिणी, इश्रंबिमी तमणी त्रममा। वाटतक इट्य एट्या-मत्र, भूनः यमि अस इत्र, हरकावी कि दाँटर महागत । अदंत त्मादत वित्रहिनी, यक्ति शादद शुनमनि, बाळाडेका भटनानिक याला । ভाताहैका प्राथ नीत्त, यात्य जूनि शानाखत्त. अकृत्व चाकूना व इस्ता। धन वृदक वक्काचार, यत्रि यादव व्यान नाथ, क्रदर এक खन निरंदमन। क्लामात्र त्य बन बन, त्मद्रान লিখিয়া ৰূপ, দেহ মোরে করিয়া মতন।। ভাবেতে নির্ভন करत, त्म कुल नक्रटन एएरत, अ ब्रज्यनी कृतिव दक्षम । अन्द्रिश

भारीत छेन्द्रि, तुर्विमा भटनव युक्तिः मिक मूर्छि लिश्विल एः करण्य विनय करतः व्रमनीत करव धरव, छात शाह धरेट अभा भाग तिवासिक समा द्विमान प्राच्यान, इक्तितम লার আলর।। যাইতে যাইতে পথে, ইচ্ছা হৈল পদ্ধত প্রাক্তি নারী সভাবিতে। এত করে কিবেচনা, মনে ক্রিশা, প্রবেশ করিল জালয়েতে। বিশ্বানিক অভুল स्टिश निक इमगीटा, चाहर करा छेशशकि महम ॥ भागा त्राक फाक, सूरण फेलशिक गरक, निर्वाद अपन कुरामा তদম্বরে উপপতি, রতি অত্যোগ্রমতি, নারী এতি জিড ত্থন। খল প্রাণ একি একি, কার প্রতিমূর্ত্তি দেখি, র রাছ করিয়া শতন।। শুনি ধনী হেসে ছেসে, উপপতি বে বলে, বলে শুন শুন ব্ৰষ্ট্ৰ। এতা কৃষ্টি ভভক্ষণ, কৃত্ বিবরণ, শুনি তার ক্রোধ অভিশয় ।। দারুণ ক্রোবেংতে । तक रिष करूँ दला, वाल कर छत्र अश्वात । श्वित भनी । भरत, मुर्खि लम्बद्दल एकटल, अभारत हत्। मधुबात म লোপনেতে থাকি, এ সব রুজান্ত দোধ, আজি ছুংখে দ भटेंस महत्र । आधि जानवानि यहत, हम जान मा बाहन ह এ সংসারে রহি লোম প্রাণে। সম্ভ গোগাই মন, ভবু लंदन भन- रास किन आन नारि यात्र। किन्स शितिक है मा भागेत्व इय बाँका, द्रम घत्त्र थाका घात्र माह ॥ कारह माहि वन, सामि कति आनशन, धन मन नवर्शन छ। कामा। भागांत बहुत, धारत त्कारंच चांका प्रत्य, करल ক্রেম খ্যা পরে।। মুখে ভক্তি পদিরতা, সভী সাধ্যী গ ব্রভা, শিথীবাকো ভৃষ্ট করে খোরে। লেবে নোরে অপ্রয় 🎋 वहाटन गर्सनाभी, त्यस्य द्वाय सामि भ्रायनीहरू ॥ अ क्लीके बाद, सूर्य सार स्थापनाहरू, तक्लील प्रसाद विद्वारत। नद्भ श्रीत्रांना, दावि त्यात मत्यापांना, वित्ययञ् छूशः ক্ষা। ধিক বিক এ পিরীভি, বিক সেই রভিপতি, বিং

्वको निक त्यांदर। पिक पुरुष्पत खोरिन विक वाको आही।
तिन, उत्तर्शक विक क नातादा।। एकि मरक काम वद्दा,
उत्तर्शक मरू दका, मन्त्रादि।। एकि मरक काम वद्दा,
वित्रशक मरू काम कर होता, वनस्त्रात कादि केरादृष्ट ।।
कान पुरुष पानि, कास्ति काम शहर पारि, मा हार्ग कि सूध
कर गांका। आमार अधिक धन, भारत नार विष्यत, विकास
वास पुलि सुकी होस्त, । यदर बार्गनांवणका यादा पार मरक
वास कुन्दा सुन्त काम काद। कम्म कम्म द्वान हुन्द कर।
वास कुन्दा सुन्त काम काद। कम्म कम्म द्वान हुन्द कर।

-

ক্ষথ নদ্রীর হাজসভাষ্ট্র গমন এবং নার্ডিং চে খড় : भवाद। इहिनान यत्नानाम तमनी हो.स. इ.स्टब्स য়াজবুরে চলিল শ্বনেত ॥ উপদীক হৈল নিষ্ বংক্ত মুল্ডি । মন্ত্রী দেখি নূপাবর আনন্দিত অভিনা সন্দেতে করে ধরে বনায় সভার। গীত বাল আর্ডিছে আ্রুড় দিল ভার 🤉 पञ्च मदम् पञ्चीशन नामा आजिष्ठिम । यटकक नर्खन्यशन नाहिएछ লাগিল।। মুদ্রমরে গান্দ করে মতেক মান্নক। রঞ্জ প্রকে। রঞ্জ ভাগে ভাবেতে ভাবক ৷ ১য় লাগ ছত্তিশ লাখিলী আলি: পিরে। ভাল মান বুনি গান করে মহা হয়ে।। ওদক্র নুপ্রর इटर अधीमन । इडियान अधि नव देवन विवडन 🕆 श्रीवर्गन म्दनावान मदत्रत नियारमः। कार्छे दुक भरनाष्ट्रःथ कि स्ट्र सारमारम्॥ वस्त्रण्ड १५ क्य कावा बालाशन्। वादन्य महीत् कार्ट्सिट इह मन ।। मर्नानीका आद्य मही निकास विदेख। ৰানা **কাব্য জালা**পনে মন বিৰাদিত ।। লা হয় হুবেভে হাস্য রহে যৌনব্রতি। দেখিবা সক্রোধনাত হইল ভূপতি: মরপতি क्लार्थ चाका निम अभागाता श्रीमारम चिन्न कति नव কারাগারে।। শুনিরা রাজার আজা ধত রজপুত। বৃদ্ধি করে। मञ्जीवत्त दयत समकूल।। मीछशकि नहेन घषात्र कांत्राशातः।

মন্ত্রণ ভাবেরে মন্ত্রী লা দেখি নিজার।। বিধাতা ঘর্ষন যাত্রে হয় নিমারণ। ঘরে পরে অন্তরে বদাই মনাঞ্চণ। থেদেতে (धॅक्लि मही करह रूपामारत। समामात এ आरतर कश कत मारत ! इत्येद्य णानित यान एक क्लानवान । एका कति कृषि মোর রক্ষা কর মান।। রহিতে নারিব আমি ভক্ষরের সমে। क्रिया केवि एका स्थारत उत्तर्थश निकारमा। श्रीनेशा महित कथा महा देशिक्स । ताथांत दाजित भूटर्क मत्य फार कार मध्य । एकि করি রাখে এক শিবের মন্দিরে। স্থার বন্ধ করি পরে পেল त्राक्षभूद्रतः। मस्मिद्र वितिष्ठा भही कांद्रव मरनाष्ट्रच । रहनकारण त्तरथ कर चानुक (भोज्य ।। **चमल्डा चारि**न नहत द्यांच्यांन । ভয়ত্তর মু'ষ্ঠ ভার প্রদায়ের কাল।। ভারমুক্ত কবি গারে বসিল কথার। ভাষাবে চিনিল মন্ত্রী করি অভিপার।। ভালার উপরে ছালা ভয়ে ভীত মন। একদুর্ফে কোত্যালে করে নিবীক্ষণ।। দৈবকলে হেনকালে রাজার মহিধী। কোত্রাল নিকটেছে উপনীত সাসি।। তারে দেখি কোছয়াল ফোদে উঠে ছলে। বছবিং প্রকারে ভাহারে মন্দ বলে।। কোডয়াল বলে ভাল জঞ্চাল আমার। হেন প্রেম রাথিতে বাসনা নাচি আর । তোর আশে আছি ববে পেরে এত কুশ। মশাব कायरक रमात्र व्यान देशन (कदा कार्यत माभाव नाक नाकि ্মার লাখা। ভোর সলে প্রেম করি করেছি কুকাষ।। এই মভ কোভয়াল নহানিধ বলো। ক্লোধেতে চপেটাঘাত করে ভার भारत ॥ कान्ता यूवणी देश रुख्य अ चारक। नकान्द्र কুমে প্রতি লাগিল কান্দিতে।। কান্দিরা কান্দিরা ধরে উপ-लंकि शरम। छेन्। केन् वाका माहि करह महास्कारम।। वृश्वित। বৃহতী ভার উপপ্রতি মন। লকাভরে পারে ধরে কর্তর জন্মন काथकरव दक्त भारत नाहि कह कथा। **कें करन** श्राधनार्थ খাও মোর মাধা।। ভোমাবিনে অধিনীর অন্য নাহি গতি। क्मरम कारित क्षांन ना युवारन भक्ति। साहि बार्म जिर्दि-

ित दर्शनिक क्षीन । शीकल कत्रम आन कनि वातीमाम ॥ कुमि াদি অধিনীৰ স্থালা না মুড়াবে। বল জাগ ভৰলাৰ কি গতি। ইনে।। এত বলে উঠি কোলে কিন আসিলন। পেলে মধু গাল ভাগে না কৰে কৰন। উপ্পতি হথীমতি যুৱ**টা লইছে**। চতং বৰে পৰোধৰে **লইল** ক্লৰে। স্থানা নুবতী অভি আ ল্ফ অপার। স্থ্যন আগিতেন নিজয় প্রহার।। নানা রক্তে बन्ध्य निर्दाद धुरै कन । वर्गा क्षकान कारा करिया दर्ग ।। वभीवत उमध्कांत (मिश्रा कातः। এ० व्हिन् क्रे अध्य करत নিরীক্ষণ ।। র**ভিজন্তে শান্ত হয়ে ব**র্ণিত ভ্*কা*নে : ভ্রতিনিয়া এসং वर्छ। बृष्टिलनगरम ।। जनग्रदा करत (माँहर छात्र लागक्त । सूर्य মুখে মুশ্যন রসনা বিতরণ ৷৷ স্বাইমান্ত উপপাসি জিল্লামে ক্ৰ বণ। কৰাছাতে জাণ আয়ে অভি দ্বাৰ মন । কোনে জলি একবার কবেছি প্রহার। জাগো আমি জাপ্তেমা কার আর বার। এত শুনি বলে ধনী শুন প্রাণনাম , একবার ছে প্রকার করেছ আঘাত।। সে আঘাতে দেখিয়াছি ও ৌল পুৰন মারিলে **ভিতীয়বা**র নিশ্চয় মরণ।। ইতমধ্যে কর্মন্ত্রের রুক্ত ८६ छन। (गरे भाग गारे छिल्ल भागे पास्त्राः। यह रूपः তার কর্নে প্রবেশ করিন। সক্তিরে অস্থতে পার্কিয়া জিঞ্জ: मिल ॥ नल **डाहे** कि स्वि**रल अ** कोम्मूचन । वहा कड़ क्व-८मटा कर् विवत्न।। आभाव भावीत अना ना भाष्ट्रे मक्तान। বল দেখি ইডিমধ্যে আছে কোন ভান।। শুনিয়া হইল মন্ত্ৰী পুলকিত মন। মুখে হৈতে ভূমে পূজা ছইল পতম।। রাজার महियो अनि क्रुवत्कत कथा। कथरत मधरत मुर्थ (२३ कति माथा।। ऋग भटत करत रह दशक जानाभम। निधि स्थरव निषयात्म (शल छुड़े बन्।। बाबनावाम् १ ४६ दृह्व छो् ४३। ষশূ সন্ধ পিরিভের আনন্দ ক্রমক।।

পরার। তগন্তর নৃপ্রব উঠিয়া প্রভাতে। কারাগারে বছ মন্ত্রী ভাবিয়া মনেতে !৷ হায় কি করেছি সামি কুকর্ম স্বাচার

क्म एम एतियास निर्देत विनात ।। ज्यान भाव डेमद्राध विशेष गरम। भागाद क्रांचे वेष्ट्रेस कारमाप्ता। अत्र जारि ভাকিল্ল ত পদ ৰুগদানে। ভাষাতে লটকা নঙ্গে গেল কাবা-धारतः। काताशास्त्र इतिमात्र मस्मामात्र चिति। स्मानास्त উপনীত হটল ভূপতি।। খাপনি কবিলা বাজা বজন ফোচন। इतियान क्षांकि करत जिल्लाक तरल ।। कुलका करतकि आणि ना জ্বাহি বিশেষ। অকা: ১৭ শিক্ষকদে দিয়ু এত ব্লেশ।। মোর শেষ ব্রিদাস করছ মার্ক্স। জামি কি করিব ভাই দৈবের ষ্ট্ৰ। প্ৰসোধ নিৰ্কোধ লোধ বিপদ সময়। যেহ লোহ দেছি किम हिन्द नांश्रामक।। दक अखिट शादा गांक। अनुरके लि-देश । ब्रांका काश्वि ब्रामहस्य खात्रण नमन । व्याननाटम कर्ण हिर्देश होत्वर वस्त्र । डेव्यरम कर्यकरम विक् गोहोत्रण ॥ खव क्षेत्र क्वानंदर क्वेश काखारी। ताथ वाटन व्यादन कन महिला বিছায় । মন্ত্রী কলে বছারাজ ভিব কর মন। ভূতা প্রতি এত (इंब निमग्न वण्म ।। विधित लिथम क्वा विश्वारत शास्त्र । জীছিল বন্ধন ভোগ ঘটিল আমারে।। অফবসু বলির্ছের क्षेत्रको एडिया। सिनिया मान्यत मृती जीवाम कृतिन।। शकि নিজা শুনি সভী ভাজিলশঙীর। পাশা থেলি অরণ্যে গেলেন ব্ৰিটির।। পঞ্পতি পাঞালী গেলেন স্বৰ্গবাসে। ভদ্মদরী बैंका बढ़ी भागात अरवरन ॥ श्रृशास्त्राक खळागा धना नन ত্রণ। রজিপতি জিনি রূপ অভি রস্কুপ।। ভাগাবশে কর্ম ब्बाह्य वनवान देश्ल । पूर्वकान्त्री वमत्रन्त्री जादी नटक राजा।। मोजी यान नटक विधि छाटर वामी रटला। नकी नाध्यो बाधा মারী ভাবি প্লাইল।। বলি ছলি ত্রিপাদ মৃত্তিক। চাহি দান त्मार इसि तमाञ्च कतिन क्षत्राम ॥ यदिश्व मनत्माविधि শুনৈছ স্থাজন। তাহার কারণ ভবে করছ আবণ।।

वातकाकम्

अय विश्वाकात सिबदन शह मही पीर्य विवर्तन ।

भवाद : अक भिव लाग विधि हेट्स्ट खबरन । स्मि नमा भट्ट विकास्त्र स्थाप स्थापत्त ।। क्याप्टर भूत्यप्र विकास किलिया । आमा विधि काल दिलि। निधिनः कि उन ॥ करह शोटा तिहे क्या कि अने करते। एवं कमा। मन शुट्छ कमा विज्ञ शुस्त्र ।। इस रटन वर्क व्यक्ति प्रांथ सकातन। एउ निश्नि बक्र निर्देग .हेन अखन ।। अहेकाश यक्षविष तथात इहेरा । विभाव करेहा विवि मिष्णानाम लगा। हिन्तिन रहेम। हेन विविध नज्याः শ্বির কৈল নিজ কন্যা রাখিতে গোপানে দ বিশ্বকশ্য জ্যাক্ষ্য क्ट्न रम**बद्रामः। (हरमद निक्ष्**क कन्न **कारह** रमांव काय : चिना बादम हैन कार्य चिनाहे एकन। कृतिन निस्तृत बर अञ्चल अर्थन ।। द्यहे अन् जिल्लाकत मद्यादक विगटन । ८७६ এন ভার ভার খুলিতে পারিবে।। ভদত্তর পুরন্দর আপন कन्मारतः । मन्द्रशांभदम तान्धिद्यम मिकूक (इन्डर्स ॥ कान्न भदम उपाक्टर व्यवन कविन। वैटक्टर ब्याटम्टम गिथु इत्राय व्यक्ति। ালে ইন্দ্র জলনিধি কহিবারে লাজ। তোমার নিকটে মোর शास्त्र अक वर्गम ।। यक विनि विनिना भूटर्कत निवद्रभ । कम्म শং নিস্মৃক করিল সমর্পণ।। বিধি কথা জলনিধি অবণ করিছে विदाय नेरेश थिकू भाग मिशानस्य ॥ आश्रमात २कः छारि या वैक **कत। कता गर मिनुक** कविक ममन्।।

অধ বিধাতার পুন্তের বিবাহ বর্ব প্রণানের ছুর্গতি।
প্রার। ওথার যাইরা বিধি আপন তবনে নিমন্তিরা
নিমন্তিরগণে ভাকি আনে ।। নানা হাপ্ত বার্যভাপ্ত লক্ষ্যপ্র
ব্যাপিত। বর সক্ষে রক্ষে ভক্ষে গলিগ গুরিভা। সংখার পাইর্মা
ইক্ষ ভাকিলা প্রনে। আলা নিল স্থাপ্ত। বারি বর্ষারা কর
বিদির ভুর্গতি। চারি নেছ ভারতিলা সংঘার গর্জন। উল্লা

تې:س

गाङ वलादाक मक धन धन ।। वृतादखत कांद्रन त्यन चालनि कुर्धात्र । विभावतम् विमानिटल घटन गनकन्त्र ।। भटक नघीत्। হন তাহে যেয় ব্যা। ভয় রুক্তি ঘোর দৃষ্টি দৃষ্টিতে ভবেঁখা।। कुन ल्य एक मध्य १ वर्ष । एवं कुछ । एव कृष्ण । एक महस्य কম্পে বসুমতী।। ভয়স্কর ছে।এতর গভীয় গর্জনে । লাগে ডাই ধর্ষর বর ভীত প্রাণে।। লখ্ড ভণ্ড বাদাভাক্ত গণ্ড থণ্ড হলো। ভীত ধাতা মনোব্যথা পুত্ত কোথা পেলো।। কম্পে পাত্র বর পাত্র বাস্ত পাত্র নিয়ে। কেছ বলে প্রাণে মেলে ভাল দিলে विदया इतक दानि शतक धूली करक श्रीत मास्य। धन दक्षि क्ष पृष्ठि मुद्धि कार्य श्रवता जारण स्वास्ट कार्य अस्य लराष्ट्र मध्यक्षमा । । दम जिल्ला क्रिक कर्न देवशीनं नममा ॥ । । । । बक्र नामा ७४ ऐग्रंभ गङ्गला। होन् रत गंजा पत पत जुनना कृटन ।। हिम्राकिन खना (यम द्वान यक रनाय। मिथ कवा রিপুদল ধন ধন হাসে।। ইতস্তত ভয়ে ভীত এথ হত হলে!। रकार्या राजा भूछ रवाया स्था ज्या श्राता। अकि कार इरक्ष अक्षि (स्वद्राष्ट्र वानि। लार्श्य थर मरन मश्च निवानम विधि।। ৰীন্ধ থাবি ছব ভূবি ভাবি শোক।ভঃ। বিধি পেৰে ৰূলে क्रिंग्स शहर भूद-वड ।। मगीतर पत्र बहा धार रण द्वार প্ৰায়তি সভীবহি ভাবিলেক শেষ।। প্ৰাপ্থ নাহি মহ ই ছক্ত চলে। বিধিব নন্দ্রন পড়ে সমুক্তের কুলে।।

অথ অপত্ৰপ ঘটনা বিবরণ।

পরার। অতঃপর দশুধ্ব করছ অবণ। লয়ে সেই সিকুক সিজুর ভূতাগণ।। সিজুতীরে সিজুক রাধিরা সর্ব জনে।
কর্মীরে অমণ সবে খাদা অন্মেয়ণে।। সিজুক খুলিরা সেই
ইক্ষের কুমারী। দেখিতেছে সিজুতীর মিরীকণ করি।। তেনকালে সেই স্থলে বিধির নন্দম। দৈবধোনে সিজুকে প্রবেশে
ভূতকণ।। দেখে তার মধ্যে বৈত্তে উদ্ভানা কামিনী। ভার

রসিকরঞ্জন। দুবু পে করে আনে: ভিমির ঘামিনী। ইটয়া সাক্ষ্যা দেই গৰিৱ নক্ষম। কাই ছাতি কৰা। প্ৰতি ডিজামে কায়ণ।। ভাষেত্র পরিসমূহইল উত্রে। ভাষেত্র ভাষাহয়ে ওয় 1০ল দেখে। বৃত্তকুত্ত সম। নার্রা শুনেত্র গেমন। বুককেছে ক্ৰিব) শ্ৰান্ত ভূতাশ্ৰ । এই গ্ৰেড ৭৩ জাবে পাঁজ এক ভাল । । ব্যব্দির রাখিলে প্রমান বিদাম দান কান্তে বিস্তার বছ নুৱা আলপেন। আব্যাঞ্জা মনবের ল'ল ভারক্ষা। এই চপ ছুই জন তথ্যম রাধ্যা। বিজ্ব নার্ত্ত ববরতী গার্ত্ত বিচা হৈল শ্বে মাঝে সৈন্ধকেতে ব্যস্তেরের সিদ্ধ পাইলে চকোর रत क्या याचा हेन्छु ।। भूनः भग दिन विशेष शाल हेन्सालाह्य । র্গিন্তে দেখিয়। উত্ত কিজানে স্থাস্থে । । ই বিশ্ব পুক্ত वेडा कि क्षित्रण कर। विधि कदर कार्र नद्ध क्षाट निवाह 🗈 क्षांभर स्थानन न्यात त्यांध्या किट्ट गर्व बहु यद्ध ট্র যে কনারে। শুনি চম্ৎকার ইন্স সন্দেহ জ্ঞিল। থ্ৰাকরে বিশ্বুক আনিতে ক্ৰাজ্ঞা দিল। ইন্ত্ৰ আজ্ঞানতে াপু নিজুক আদিন। সুর তি শীএগতি নিজুক খুলিন।। ात भरका *(मरम कक न्यांग्डर्ग) घडेन*। इन्ह्य कमाः विभि श्रुद्ध राम क्रे अमा। (पश्चित भागकी आव आकरी नासिन। ট্রাকরে ভদষ্টে হেলু জিলাবিল। বিশ্ব বলে মণাবাঞ্চ ামিত না জানি। সারিকেলে জল যেন সংগত্যে জাপুনি।: ধোয়ুৰ হৈল ইন্দু হুইয়া লজ্জিত: বিধাতার লিপি সভা শনিল নিশ্চিত।। অতথ্য খহারাক্স কহি শুন ছলে। গুড়া-ত কর্মের যে ফুল ভাহাফলে।। ভূডার লাঘ্য কর্ডা বেই বারণ। কেনছ ভূজক ভূক ভাহার বাহন।। সৃষ্ট কর্জা कति वोहन ए महाल। एकन टेहल और बाहा खशीहा छ-🕮 । আদা হীন অনাদ্য দেবের মহাদেব। ভার রুব খায় াৰ খাষ্য কি শভাব।। যত কিছু দেখ রাজা কর্মের নাহাআ।

র্ষিকরঞ্জন :

শুক্ত কল বত ভাষার স্থায়তা।। নাহি শক্তি বিরিঞ্চাদি মঙ্জেন দেবভা। শুভাশুভ কর্মেকে সদত ক্ষান্ত ধাতা।। রাজা বলে হরিদাল বিনারে পাঁওত। শতংপর আমি আর জি-জানি কিঞ্চিন।। সদয়ে বিধান করি জিঞ্জেচরণ। রদিকরঞ্জন রচে রাজনারারণ।।

4

क्षण मञ्जी अधि तांका दुखे ध्रेता (६७ किमाना। ্র জিপদী। তবে নৃপবর, হরিষিতান্তর, হরিদানে জিলা-क्रिम । केर मित्राय, गण ब्रास्त किरम, मन छेडानि रेर्न ॥ के बद नाम्यादम, किटनत विधारम, हिथा छव मरामानामा ! क्षांद्र देनवटल्ट्ड, अटन क्रांताशाद्ध, किटन वा शहेल शना॥ জ্বামোদে মোহিত, পুলপবিকদিত, দেখি মোর চমৎকার। मरमात खनिका, जानि हेहा कथा, कर मला गाँदाकात।। क्षेत्रिया बिक्षी, कहिएहन वानी, धन नृश खनम्य। जय कि বিক্ষা করি মহাশয়, সাভা দিলে সূচ জানি।। বৃপতি হাবিরা, मही जांचानित्रा, करह किटम अब कर। अध्य लामात, कर नंद्राह्मात्र, युहाद्व मन मस्प्रह । त्रांक जाता छनि, यांक कुंद्रि भागी, नृशक्ति अधि कहा। इहेबा भागन, नव विवत्तन, क्षेत्रिकादत काळा हत ॥ जूल हेश छटन, याहेता त्यालटन, किलानिन महीचरत । छनि उठक्य, मही विष्क्य, कश्टिन বুছুম্বরে॥ থেমত ব্যাভার, আপন ভার্যায়, পতি উপপতি दुर्स । हरेबा अकान, जलत खेनान, ता छाउ जारिका मदन ॥ शास रेमबरकटन, वान्त्र कात्राशास्त्र, महिन्द्रित द्वति छथा। र्ट्साक्रमाल महत्र,मामा कार्या महत्र,देशव क्लाइ मन नाथा।। देलदर क्रक्नार, व्यारिटक चांघाड, रेकन छननिक छाउ। बिटान जारबारक, भूनः व्यमनार्द्ध, जाद शारत तानी बद्ध ॥ पृष्टिक रम क्या, मरनटक जानका, जिल्लानिक उन्निक । देवटबड रकस्त्र टक, হজ্যের আঘাতে, হরেছ কাতরা অভিয়া এবি মুদ্রহানি, ক-

हेल घड़ियो, खम श्रांग निरुद्धन । श्रेट्स मेहिन, टाइट्स्वमन, हंइन कोल कुरुन।। ब्रानी देश चटन, देशद दननातन, शैन বৃদ্ধি এক জন। গুনিয়া সচনা, করিল ভিত্তানা, নিজ গাঁতী ब्राध्यम ।। मति भनाखरमः कार्ट्स हैश खरन, सूर्य सीना भकामिल। **स्थार शासन, कहे (म का**द्रभ, भूग्य बर्तिसन **देहस**।। ্রনি চমৎকার, হইল বান্ধার, সংবার অস্থার বৌধ : অবিজ্ঞা অন্তরে, রখণী উপরে, কোভয়ালে ছভি জোব।। পুনঃ হরি-नारम, नुश्रक्ति जिल्लारम, कि कृति जैशाय वन । एटर इतिमांग ছাভিয়া নিশাস, বিহিত বিনাশ ভাল।। জাজি নিশপ্তি. উপপতি মতি, শদকী দৈরিণী কয়। হীন বৰ ওক্তা, স্বীচ क्यूडका, उभारका वर्ध इया। डांका मिल भाव, मिना मर् ধার উপনীত হৈল নিশি: পুর্বি গ্রাত্তি মত, কর কাষ্য কভ, মন্দিরে আদি নহিন। বোভয়াল সংগ্রানা রাগারকে। व्यनत्त्र निवादत विषया भटन श्रीकान, कांद्र नाश्चित्रन, ব্যনে নিশ্বাদ কছে। জাপন বুৰতী পত্র দের রকি, তা লৈখে कि आदि गरह।। उर्कन शक्तिन, कतिहा हायन, अरस्टन भ-ন্দির মাঝে। ভীক্ল অসি ধারে,বধিয়া দোঁহারে,ভুন্ট অভি নিত: কাবে।। তবে ধ্রিদাস, অন্তরে উল্লাস, ভূপাতর প্রতি কয়; कायात तमनी, इन्हें। त्म देनदिनी, जाह कि कर्सवादम ।। असिहा इक्ति, करह करका, यांके हल उन भूरत। डेलर्लाइ महा, পাকে এক স্থানে, বধিব নিশ্চয় তারে।। এতবলি রায়, মনী र्पूरत यात्र, त्मरथ खादत खात वन्न । देश्य श्रतिमान, व्यक्दत वि-त्रक नुभवत्र नित्रानका। एटद हुई बन, कतिल अभन, यथा 🎉 . कीप्र कातः। यादेपा नकतः, त्यक्ति कात्रयातः, देश्त कानम अन भारत्या बारविष अस्तरहा, स्मर्ट्य हार्यनीहरू चाट्ट जेमलाक गरक। करन व्यक्तिकत, करन वा हुएन, त्यम आमानन ब्रह्म।। ब्रांथ सूर्थ ब्र्थ, वृदक ताथि दूक, कि कोकुक कर करा। मन्दन मनमा, तगरन प्रमना, विकास कामाहक ॥ करत कति कर, बर्द

াহেদির, কদয উপতে চাপে। জানভ্য হেরে, নিতম প্রারে, কামের কুছরে কাঁপে। বিশরীত রভি, দেখি রভি
গতি, রাছ লয়ে পলাইল। মদন আগারে, নিতম প্রহারে,
নিতম উবলিল। মন্ত্রী-ছনকালে, গিরা সেই কলে, বলে
মরি প্রাণপ্রিয়ে। কছ শুনিশ্চয়, কত সুখোদ্য, উপপতি
কালে নিয়ে। যেন অক্সাৎ, মণ্ডে বঞ্জায়াৎ, স্তর্গাধক
রুখ হয়ে। হয়ে যফারভি, না হলে আছভি, থেদে পেদে
শক্ষেত্র। হাটেয়ে বিহাদ, বিষয় প্রমাদ, পতি হয়ে বাদ
সান্ত্র। হাটেয়ে বিহাদ, বিষয় প্রমাদ, পতি হয়ে বাদ
সান্ত্র। ফেরছে আদি, বুখেছে নির্মাদ, প্রাস্তরত প্রেম
বিদে। করিছে এ কায়, না হইল লাজ, নেখে কায়
লান বিদে। রাজনারায়ণ, কহিছে তথ্ন, পড়েছে বিষম
বিদে।

कथ मही खोत विलाश।

क्रिकी। शृंद्ध धनी थना, विर्म्ह क लक्षता, नित्र क्रिता थना। लिया स्वा स्वा स्व क्रिता हिंदी, स्व क्रिता क्

इ.स्ट्रेन्ट्रिक्

मूक्ति हांजूबि, यह छातिकृषि, स्मात दम हुन्। करद्य यदन छट नहल्कि, खाकि मीस निक्कि स्व क्याय में अदनरा। मदन । जीयन मध्न, तर्ला घटन धनः मूर्निक स्वन्य मध्य १८८६ । स्व है। मुख्की कर्णन, स्मितिका हांजन, निविधा कर्णन वनन जोटक । साधान क्रमन सूट्ल एष्ट क्या. छात कि कावन लाज कान दक ।। खार्था (स्ट्रिंग बाटक, मटक्रक ए काट्य (क्टर किट्स काटक, कि कान करता। कुटक भिन्ना (से कि), वाकार्य स्व महिल्ल स्थान है। जात कि नाइस ।।

অধ মন্ত্রী স্কীর উপপ্ততির ধাহত মৃত্যু।

শ্যার্থ। রাজ্য ব্রে হ'লেস শুন্নর প্রন্থ না নাইল্যাপ্র মনজাপ মুলাও প্রন্থা। হান বর্লে জন্মরকা হর বের্ন্থী। তেজ্যা ব্যা পতি শালে পাছে কই শুনি । বিদ্যুত আত ভাষী ব্যে নাহি পাপ। তাল্ল জানি ঘারে বরি মূতাও সন্তাপ।। বিষ কিছা জানি বিষা নাধ্যত উদ্যুত প্রায়াতে নবিছে আনাকাকা জানিতে। সন গর্জ ভূমি হুরা ভাষা উপ্রক্ষা এই বর্ত আতভাষী শালেতে নামহ। সূত জানি হরিদাশ নাজার বহনে। তীক্ষ জাসি ধারেতে ব্যিয়া তুই জনে। তুই করে হুই গুণ্ড ক্রই জনে নিয়া। পুন নার পুনের মান্তির প্রবিশ্বা। চুই মুণ্ড ক্রই জনে নিয়া। পুন নার পুনের মান্তির প্রবিশ্বা। চুই মুণ্ড ভার ভবে করে নিমে জিত। লোহল লাবন্ধ করি হয় পুল্লিত। ভারি মুণ্ড নালিলেতে রাখি ছুই জন। রাজ্য তালি জর্গা গেলেন তছকা।। হার্মেগ্রিট বাদা ভিন্ন ভিন্ন বাল্য তালি জর্গা গেলেন তছকা।। হার্মেগ্রিট বাদা ভিন্ন ভিন্ন বাল্য নাম্য ভার জ্যাজ্যমতে প্রন্থ হুইল গ্রেশা।। জ্যাজ্যন্ত নাম্য বিশ্বাহ স্কলা।

পরার। শুসহ জুগতি এই পুর্বের কারণ। চারি নুপ্ত ক্রী ভাবে আছে নিরোজন। অধীনতি নরপতি প্রায় অর্থ প্রতেত কন্য, দিতে বিপ্রস্থাতে দিব কৈল মনে।। সভা ভারি সংস্করেও উঠিয়া ভূপতি। নিজ পুরে গেল পরে হয়ে ক্রীক্ষিত্র। শিল্পা

পরে সহিধীরে কহিল সম্ভাদ। **গুণ শুনে মনের পু**রিল ন শ্ধ। ধুবতীর ক্রুমতি লইয়া কুপ্তি। জার্থিক কাৰ্য্য পুলকিভ মজি ।। কি কৃহিব कি শুনাৰ বিবাহ উৎ ভাবিষ্ট ভাবের ভাব ভাবক বুঝার ।। **ভদস্তরে নুপা**বর स्ति करतः। कलसारतं क्यारितं नाकाशं यस्त यस्त ॥ বাব দিজ বামে প্রাইল বাম। পোর্ণনানী প্রা**র** শ্লী স্মান্ত্রালা। নিক্তিতি দিনাগত দেখিয়া হাজন। পথ সারে করে সভার সাজন।। পাত্র মিত্র পুরে (ছিত পুর ্ব। সমাদরে আনে পবে করি আবাহন। একতন হোষ বভার ধৰিল। বিপ্রস্থুতে আনিতে নুপতি আজা আশ্রে নাত্র বিপ্রস্কুতে করিল আদেশ: মনেহির কণ ধরি বর্তন্য । কেল বেশ বিল্যাস বাড়ায়ে বিধিত্ত। **ন্দিন্দ উপানীভ বাজার সভাতে।। স্বাজন মগুন মে**'ল रेरिकः। खद्मपदत्रग एकम् भूळाई अथरमः।। नमधात नः লানক জুলাছ: সভামধো বদাইল আভি হাই মতি ।। বি रियान मान सना नाबाहेल। भौन्द्यारमा मरताहारण व दिनिज । तक्षती कटत विति द्राष्ट्रकृमातीरत । तमक्का धः हेंड़। कानिन वंहित।। कमा काछि द्वित खाडि हक्ता। माटच (मध्यारक श्व ३हेशा वाङ्गा। तार दिब्रिश हलना हिट्छ हात्म । हिट्छ हस्रामनी शरम शिर् कांट्य । अञ्जाक शिव्य नांच नांच नांच नांच नवः । १३ ८३ ধিক ভাপ ক্ষাক্ত অল মহে।। চিন্তান্তর মহাতর **খ**। व्यारम । बक्क स् काखित है ए निक करक शांत । यही राष्ट्रका। वात्रा वाष्ट्रतमा। त्राच सूराश्च शर्व वर्त (धन ্ৰুক্ত বা কহিব আৰু কলার সৌন্দর্যা। বয়স। আশিং इंटेब चरेश्या। अधि काटम गर्छ देशन ताका बनामम। স্মানে সবংশে মরিল ছুর্ব্যোধন।। অভি রূপ্রতী সভী পৰিবভা। কথকিণী ছংখিনী জনম ছংগ্ৰুভা।। অ

কোন কাৰ্যা নাছম শেভিন। বন্ধারতে সত্ কিয়া শাতেও শিখন।।

विश्वसूरकत विवाह समस्य क्या एवंद र

পরার। বাদ্য ভাতে নানা কাল্ডে ব্যাণিক সঞাও। হৈছ-দোৱে উপস্থিত বিপরীত কাপ্ত :৷ দৈবে এক নিশাচর নি-শিতে ভ্রমিতে। খুইল খোহিত দুটো কনারে গ্রনতে। আচ-ষিতে মারা মের করি কান্দ্রানন। বজায়ত ভাষাত নে শব্দ श्राम श्रम ।। अथरम अंबर्जन स्वाम स्वाम स्वाम नाटा उन्हे। कहा मुक्कि মায়া রব্ধী অন্ধকারময় ৷৷ প্রভাতফ নিজ অঞ্চ নিরক্ষীকে मारतः। स्वकारम विभावत अध्यक्तिम शृंदरः॥ चलाक्ष्यात কনারে কবিয়া সাকরণ। অভ্রীক্ষে সংস্কৃষ্ট করিশ পদন।। নিশাদর গেল ঝড় নিরুক্তি হইত। প্রবর্থার নালা করি জুণ্ডি ব্যাল । তার প্রে সংখ্ করে কন্যা অন্বেরণ। না দেৰিয়া क्यादित जिल्ला मर्लजन।। अकि नांव ए व दांव क्या द्वाया शिल। एड्फा अस्मा अस्मर करिल । ना भारेन स्थान স্থানে কন্যার সন্ধান। না কানিস কন্য। কোথা কবিল প্রান। ছঃখ্যুত, মাভাগিতানা দেখিয়া হুতা। ছ্বাপ্তর जारव यय कम्मा त्वल रकाशा ॥ छेटेकः वटत जरह करत माहि कल्पन । इरेक्षा ब्राकूल मन गवा होति कर।। त्रश्रनीटक कथा হৈতে ব্যহির হইল। নগর ভিতরে পরে এবেশ করিল।। চারি জন জাপন জাপন ছংখে নিগু। নারী আশ হতান অন্তর হৈল কীন্তা। রাজপুত্র তথার জাভিধা তিন জন। একা अया हालित कमात्र कार्स्यन ।। वक्रमच दिक्यू व्यव्हिष क-রিল। হইয়ানিরস্ত পরে,ডাকিয়াকহিল।। পতঃগরপ্তম সবে আমার বচন। এক বর্ষ মধ্যে যদি আইস কোন কন।। कानाकुळ नगटत क्रिटर खटब्यन । अरम्बर ७या भात लाटन मामन । এত वनि ब्राह्मपूक्त निवद रहेन । जिन सन विन मिटक शमन कतिला।

शागक शक्षम ।

বাজগুলোর প্রবোধ স্থান।।

গ্রান। বারু আরি জগতের শাস্ত্রের লিখন। নে भारमार्थ्य काव इत्र मालाङ्गाः त्मे नार् इत्र मात भरीतः। त्यमं विधि लक्षा कामि निर्वाहितक गाउत्। কংশীৰ মন্ত্ৰ হয় আলাভন: সে আগুনে নিজ্ঞান मभीदर । भन्भा जनस इकेटल मभीदर्भ। (सूक्र कः উক্ষ জুট কুলাশনে। সংখার আরম্ভ নারী বিরোধ প্র অঘটন সংঘটন তাহার কারণ।। সর্ক্রদা কণ্ট দুক্র মায়াৰহ। ভবিশানে স্বিথানে সাহস অভিশ্যা : आर्थ नवरम कतिल मगायम, यात स्वार्छ देशस दशारकांतम ।। शक्ष मार्थः विषागः मारून मार्वी चार्याः श्रास्थ अक् इष्ट (५) व जाना वर्गा। इक्टरीक वीच मधे উপসপ্ত। বারী আশে ববংশে মরিল চপ্তম্প্ত।। সভ क्रीहरू यहिल नाही काटन । जारी। त्वाटन शाखराका বনবংলে।। অভ্নব শুন ভাৰ ভিত্তি বছন।। যুক্তী চ करले में करह खमन ।। त्य द्रत्य क्षेत्र। वन्य तरह है निर्देश ना मर्च रामभं चाटह काल चाळानिया। थाकिट० -**ভান কেন হও অন্ধ। যে জলে নিশ্চয় থেলে হতে** ভাতে হং অবাস্ত **তু**রুন্ত বেই মদন বৈক্ত। জ্ঞান দেন **অ**কারণ मन भया। सुधा खाटन नारी शाटन कराह व्यवस्था। किंक यात्व क्षांत्व किंद्र स्विता अन्यम (श्रास्त्र) व प्रहिष्क प्रकृषः। नश्र धर्मा गर्मा शीम की न इत लोखाः स পিত। আতা আদি সংব হবে পর। বন্ধু ভেদ বিক্ষেৰ বন্ मिद्रश्चत्र । किन्त रख अन्द्रश्च मा कत कथन। एटव क्वन कू ষ্ট্রায় কুফর্মেনেত খন। ইন্দ্রিয় শূকর তুল্য অভক্ষ ভক্ষ অতক ভক্ষণে রত কুপথ গ্রমন।। জ্ঞাস চক্ষে দেও মন বিহে पाक्षमः। मितृष्टित्र यम जूमि १७ मग यम ॥ यश्रम हेस्स्ति क र्दि किनियात । धारतीय क्रायण जादत किति धारात हा देशक

পানপুত্র জ্রীরাজ্য গমন গবং ভথাকার বর্ণন।

প্রার। চলিল পশ্চিমদিলে পাত্রের নক্ষন। নারী আশ इटाव निकार एक युगा। ভाবে भटन नांही विटन ना कारिद আর : শরীর মংহার হয় আশার স্কুলার ॥ ভদুষ্ট জনিউ (रष्ट्र कर्ति भारते ज्ञाहा । इतिहा खर्क धन मधी पर्क दृष्ट्य एक । এফি নার প্রাণ যায়ে উপায় কি করি। অকুলে পাইতে কুল নাহি কুল ভরী।। ভাচে দুংখ্যিপু বাড়ে বল্পণ পেচে। নিরা-প্রবে নিরুপারে মবি বে বিধালে।। এই মত পাত্রস্থ ভা-বিয়া বিস্তর । উপনীস হৈল এক পশ্চিম নগর।। কামপুর নাম পে নগর মনোরম। জুরান্তবে ভিন পুরে নাতি ভার দম।। ভদক্তর ধীরে খীরে প্রসেশে নগরে। কে শারে বর্গিছে यक बहुक (म १६८व ॥ । व्यामा माना १५८४ वक बाजूक मान লয়। যে আলয় হেরি ইন্তালর লয় হয়।। মন্ত্রীয় ও চম্থ-কৃত চারিভিতে হোর। বে দিগে নির্থে দেখে গেই দিকে নারী।। ভদস্তর পাত্রস্ত ডাকি এক নাবী। জিজাসিক রমণীরে এই কার পুরী॥ এত বলি দেরমণী কহিল তাহারে। পানহ র্তান্ত এর প্রবেশি ভিতরে।। শুনিয়া পাত্রের পুর हमर क्रुड मन। भीरत थीरत रमहे शूरत क्रिल गयम।। अध्यम बारतरा एनरथ वाश्रुक्त ध्रमेन। अञ्च मेंत्रवारक बाती सक मंत्री-গণ।। এই মত ছারে ছারে কত শত ছল।। এবেশিকে

ভিত্তেত্ত মাহি করে মানা।। এইৰপ অপ্ৰণ মে নেখিছে। এবেশ করিল এক অপূর্ব পুরীতে।। সূত গটনে স্থুবন করে জালো। নিশাকর কর করে তার হাল :: শ্বেক্ত পীত ঝাড় কত অবিরত দোলে কটা हाहित्व श्रांबर यन कृत्वं।। छ्युकाख स्र्ग्तांकाख नी মণি। তপুৰ্ব চন্দ্ৰিমা তুলা দৰ্পণ ৰাখাৰি।। নাহি য রত্ব পাছে স্থানে স্থানে। শোভাকৰ মণি চুণি মুকুছা প্রথ এইমত কভ শত দেখিতে দেখিতে। এবেশ করিল এক मरशरका। छेखर चारत्य देवरम भारते छुटे कम। नक्। करत्र हामव बाख्य ॥ यद्विनी महिनीनन देवरम आदम न ব্রস্কুপ রণবন্ধী কত শৃত বৈদে।। দেখিয়। পাত্রের গ ছুই যুবজী। মদনে যোহিত মন উচাটন মতি।। ১ वर्षना कि दविव शरम शरम। कारमत वागना श्रुटत धी প্রদেয়। জগতে উত্তমা জানি রস্তা তিলোওমা। বে क्ष भग्न छात स्ति गया।। जालांन अनक त्रहे अक छ নমন কটাকে আছে পঞ্চাণ লয়ে। যার প্রতি যুবতী উলিলন। পঞ্বাণভার প্রাণে হানরে মনন। পা ুমাহিত হেরিয়া নারীগণ। সমাদরে সভা মধ্যে বসায় পার্ত্তে পরিচর জিঞাসা করিল। সকাতরে ছতি इंड जिट्यपिन ॥ इःश वार्डा श्रामिश युवकी इरे जन। मूनी व्यक्ति भूडवी ज्ञल नश्रमा ।। जन्दरीश्ररण करव क ক্ষরিল। আতা মাত্র তভক্ষণ উদক আনিল।। ক मामीश्री श्रम अकालन्। जनशाम खवानि कत्रिका चार প্রধানা ধুকতী দোঁহে পাত্রপুত্তে কর। সলপানে আ कर यश्चमत्र ।। श्वनित्रा शास्त्रत्र शुळ विनय वहन । লামত্রী ভার করিব ভক্ষ।। ক্রকেণে দিবাকর কর स्मिन । कर प्रमा स्वावरण योगिनी धारवन ॥ छ। कारियोशन राजिमी नगरम । जात्रज्ञिल शीक वामा वह ज

शिर्मा। भाव छान यथ भाव श्री जिल्ला नकेन। युराय फि লারে পুর গার ভতকণ।। শুনিয়া মোহিও বড় নারী ছুই कता । आविष्ठल निक सूत्र रहेश महाना । जीविश गास्त्र ভাব কৃত ভাব উঠে। দম্পতা মিলন যেন এই ৰূপ ফটে।। লাগি লাব আনিভাব আগনি অনক। উথলিল রুমাভাবে রমের তরজা তত্তপরে দৌহে হৈল গীত বাদা সাম। আ-প্র সক্রিমীগণ দিলেন বিবার ॥ পাত্রপুত্তে করে ভরে হইয়া निकात। जामा (माँशकारत एव हेक्का रम्र मन।। शुनिका হালিয়া বলেন আমিত না জানি। ইহার সিকাত কর মনে अनुवानि।। ७७ छनि छुहै अन काशांत वहतः। अना ऋरण এক क्रम कविल भारत।। आहेत अन लट्डा अने शास्त्र सुभग्नतं थ्यम तरम नव इटल कुरिय कोशास्त्र ॥ नान। मक दर कर কাব্য আলাপন। ভাবে বুঝ ভাবের ভাবক যেই জন॥ চির বিরহিণী ধনী ছিল যে আগুনে। সে আগুন নিবারণ সুৰক मिलान । कङ्करण तकनी एहेल आर्मि रमय। उस्मा नामि দিব। জাসি করিল প্রবেশ।। প্রজাতে উঠিয়া ভবে পার্কের जमान। नीख मक कर्म यह देकन मनाभाग। यक नामीशन ज्यानि निवृक्ष दहेन। मत्नोन्नर्थ **उत्कारक स**नि वताहेन। मन आरम निया गारम कड़ाईल तिम। रा ठीम श्रीबी व क्रीबी इप्र खार्टन रमय।। (इस् कन दमकून बादी प्रवे करा। (इस् চান্দে চকোরিণী যেমত মগনা।। ভদস্তর ফল করি থার্ট আরোজন। সংবাহুথে পাত্রস্ত করিল ভোকর।। সুরুম্ ভাষুল আৰিয়া দিল পরে। ধাইয়া ভাষুল ভতি আন্নৰ্ অন্তরে। ভদন্তবে পাত্রস্তুত করিল শরম। চামর প্রাথম करत तहानीशन।। कुछू म क्षुती मृशनम सुरुपान । बटनी स्टब्स करत क्ष्म परक्षक जिल्ला सकेन्द्रन स्वागरम सूर्य निखा शिला। वरता इरल निवा शङ् वासिमी आहेश । क्रिय-खरत काहेल साहे बतीना यूचली। यात्र नह श्वर्म शास्त्र ना ভূজিল রতি। দাসীগণে ভতকাণ দিল করুমতি।
বিদার নথে গেল শীলগতি।। জনক বাণেতে হয়ে গে
কিল জল। জলে শাল মিশাইয়া কৈল নিজা জল।
ভল্লে পাত্রত্ত চাহে ততকা। যামিনী কামিনী কাছে
কাইনন।। প্রেম হাজা কৌশনে বাজাইয়া জনুরাগ।
জিল জানন্দেতে মদনের যাগ।। খন ঘন আলিকন।
গ্রহার। উথলিল উভরের পুখ পারাবার।। প্রেমে মন্ত
ভত্ত প্রেম নিতা বাজে। পলকে প্রশন্ত হয় ভিলেক না ছা
ভত কব নিতা নব প্রেমের উল্লাস। করি বালা মনসিজা
কৈল নাশ।। উত্তরে প্রণয় সমা কেই কম নয়। কায়া
মন্ত সদা সদাবাণো রয়।। এই মত হিছু দিন ফরিল ব
এক দিন দৈবাধীন শুন বিবরণ।। ছিল্ল শিনচন্দ্র নাম।
নগ দান। ভার আক্রামতে গ্রন্থ হইল প্রকাশ।।

-

প্রীরাজ্যের পূর্ম র্ত্তান্ত অবণে গাত্র-স্কুতের পলায়ন।

श्यांत । यामिनीटि कामिनी नहें ता सूर्ण कोला ।

कोति किकांतिन প্রেমের কৌশলে । एक एक थानी प्रामात बठन। এই রাজ্যে নারীমর হৈল কি কারণ।। या किति शि पि कि तार किता है पि कि नाती। वृक्षिटि है रात जात के नाहि भाति॥ जिक्रुवरम मत्ररम मा होत हिन हिन्या । मत्र प्राप्त एका छान हिन्या । यह एका मत्र किता । एक एका हिन्या । यह प्राप्त के प्राप्त । यह खान विवास ।। यह एका मार्थ विवास ।। विवास मार्थ विवास ।। यह किता विवास ।। यह विवास । यह विवास ।। यह वि

हिताबय हेल्यालस्य स्थल। स्यहे ऋत्ल किंद्र निम विलय हेरेल । सुविकर्ग नोटम ७७ देनका कर्माक्षाति । अटमीमल उपाइ ग्यार्क ৰূপ ধরি।। চিত্রকম ভাবিয়া গতেক নারীগণ। তেমেরনে मनात्वरण তোবে छात्र मन।। सर्च मिं गर्छक पूनली हर्षि मात्न। निशृष्ट द्वास छाप्न त्कर नाहि करन । अक हिल हिखाबथ प्रय कारदाहरन । छेशनी छ देश कात्रि खाशन उदस्य मिथिया चार्क्टः गत्व हमर्क्ड स्टना। अमः विकि निर्वे पिकि क भूनः चारेला।। पानरबर्द्ध हिन्द्रश्च स्कारमञ्ज किस्नारम । क चूमि कायात्र देशक काहेरल स्माह तारम। यक समि श्रुणिदर्भ कविल छेर्डत । सामादत कि नाश् किन सुमिटत व-र्वत । आमात आनम वह भामात तमनी। द्र कृति लाहेटर হেখা আমিত সাচিবি॥ এত শুনি চিত্ররথ মুক্টের বচন্ট সঘনে কম্পিত অফ তৰ্জন গৰ্জন।। কম্প নিয়া মন্তব্যেত ষরিয়া ভাষ্টরে। জোধে কবে পদাঘাত দৈতের উপর্যে । চিত্ররৰ আঘাতে সংক্রার হরে মন। ছই জনে নহাযুদ্ধ আ-রত্তে তথ্ন।। নানামত বাছ যুদ্ধ করিয়া বিভর। বগহীন স্চিকর্ণ হইল কাভর।। ক্রোধ ভরে দানবেরে পাড়িল ভু-ज्या । गकांज्यत्र स्किक्न किञ्चन्द्रथ वटन ॥ टेक्ट्न जून नर्जान्ने भूनं देशक ज्याम । जर्यरमद्र एका कवि या कव विमान ।। अकी-ভবে योक कट्ड विनत कतिन। एता कदि नानरत्त्व शाय না মারিল। ক্রোধভরে ভাহারে কহিল, শাগবাণী। ভার্বর दरकृत मधा स्ट्रेटन जीत्यामि ॥ अहे त्यत्न भी स्ट्रेटन भूक्य उर्गिक । अने प्राचा व प्रतित रहेत गुवर्ग । जना वन टेस्टब यनि भूजन्य नकात्र । जात मर करम क्रि विच वाजनात्र ।। कार अक्ष गटन गरि गाती शह शदत। करवक गुज़र बद्धा मिन रावश्रद्ध ॥ अनिहा मात्रण भाग यर्कन मुक्की। दिन तथ एतर पित्रा करते शिष्ट ॥ अन गरम परि आकृता व

তিবে পতি। বল দেখি অবলার কি হইবে গতি।। এত গ্রতি বাণী দল্গ উপত্রিল। উপদেশ কথা শেব সবারে : बागान्त्रस्य नाहि । साव रहामा गया त्रहि ! किस अया হইলে মরিবেক পভি।। শাপেতে পতিত দেশ তম মহা नाग वर्षे तामा नर्वे धरे ११७ क्या । छनिता ध कथा भारत्वत्र नम्हतः। युवशीत शरम पति कहरम कम्मन ॥ ना र त्रा मा दुविशा कृष्टिनाम इंकि। वल आंत किरन (भांत । मिस् कि ।, श्रुनिहा सुकती छात्त कहर रुक्कन। অস্ট্রার করিব মোচন।। পাত্রস্থত বলে প্রাণ কং কথা। আৰু তৰ ক্ষাচনা করিব জনাধা।। একাজে: त्यांत मरक ध्यमद्रद्य। (मात **जाका कमा**ठ अविका र বিরে।। শুনিষা স্থীকার কৈল পারের নন্দন। স্থান মন্ত্ৰ ধনী করিল পারণ।। কি কৰ মন্তের তেজ শুন বিব क्षेत्रात करें कता क्षिण शमन।। अकाक यात्रिमी ' सिरिक निकार । दनहें ऋत्व नाभि सिराए दिएम अकश क्षा शाम काम स्माद्ध देशन क्छेमन। फमस्टत धीरत कर्तिन भवन ॥ दिक भिवत्या नाम विश्वभग मान । काकामण अधु रहेन ललान।।

-

শ্ব পাত্ৰপুত্ৰ পাঘাণ মূৰ্ত্তি স্পৰ্থনে,পাষাণ ভু হওনের বিবরণ।

शबाद । क्ष्मस्त स्म कर देशस्त्र घष्टेम । शिरिष्न मि लिएड व्यविष्ट कर्या ।। এक श्वादम द्वार यह शायांत श्री एमि इस सम क्षि कुष्ट्यो ।। शायांन निर्माण राष्ट्र अम ग्रंत । मन्या श्वाकांत्र मृष्टिं व्यास्ट्रम विश्वत ।। निर्माण अम ग्रंत । मन्या श्वाकांत्र मृष्टिं व्यास्ट्रम विश्वत ।। निर्माण कर्मा प्रकार श्वाकांत्र क्ष्मम् । स्कृत स्वाद्य । स्वाद श्वाद स्वित्र । स्वाद स ति जल शर्मान पार्वा (महर्ष ॥ यह माज ति मिना १६ शर्मान । ज्यान भारत निका पार शायां १६ भारत । ज्यान भारत निका पार शायां १६ भारत पार पार्वा १६ भारत । ज्यान । ज्यान १६ भारत पार्वा १६ भारत पार्व में एक माज यह यह स्वानित युवहीं। निकाति एक माणापन कर्तिन युक्ति ॥ माज वन विकास विविद्य त्यावहीं भारत निकास विवास हिम्सी विवास व

-

অধ পাত্রসূত প্রাণ দেহ হ**ইতে উদ্ধা**র এবং স্ত্রী প্রাপ্ত।

প্যার। এই মতে অরণ্যেতে জমিতে জমিতে। উপনীত হইল এক নারি ভীরেছে।। দেখিল মন্দির এন নদীর ভাটেছে। প্রবেশ করিল ধনী তাহার মধ্যেতে।। কালীরপা কালদারা কাল বিনাশিতে। তিলোক জননী তারা রিভাপা নাশিতে।। মুক্তাকেশা করে জান যুগু বামহাতে। ভবার্ণবৈ তেবে ভব চরণ ভলেতে।। শরীর লোমাফ সেই রূপ দর্শনিকে। প্রথমিয়া বুবকী নাঁছার ঘোড়হাকে।। করিল জনেক স্তব একার মনেতে। স্প্রসন্ধা ভবজারা না হৈল ছাধাতে।। নিরাশ ভাবিয়া কনা। জাপন মনেতে। ভিল্ল দেখীর পাশেতে। শেরশ জাবিয়া কনা। জাপন মনেতে। ভিল্ল দেখীর পাশেতে। তাল এক জান ছিল দেখীর পাশেতে। তাল এক জান ছিল দেখীর পাশেতে। তাল এক জান ছিল দেখীর পাশেতে। কালি কালি নিজ্ঞান কলাতা। তাল কালি ভানিতে।। তাল এক জান ছিল দেখীর পাশেতে। হুলা নিজে জাপন গলেতে। কেনকালে দৈববাণী পাইল গুনিতে।। হুলা কালি তামার স্তবেতে। পাধান মোচন হত্তে ভানার পুণোতে।। জানার চরণামুক্ত লৈয়া স্থুবেতে। ছিটাইয়া দেহ বিয়া পাশান দেহেতে।। সন্দেহ যা ভাব জুক্তি

ভাষার মাক্যেতে। শুনি সুদর্কী অবি হাজিরা ভূমিতে। কেন্টার চরণামৃত লৈয়া মতনেতে। কিটাইবা দিল মত পাবাণ দেহেতে। জল যিছ অথপ্তিত কেনীৰ কাহেছে। পূক্ষত দেহ মড কৈন আচম্বিত। পশু পশ্চীবাণ যত দিল সে স্কলতে কেনা কাহেছে। কাহেছে। কাহিছে লাইল জান পাবাণ ইইডে। কাব্কনা পতি নহ পাইয়া পরিজ্ঞান। বুবতীরে ফ্রতি করে বিবিধ বিধান।। ভদস্তরে দেখা এক অপুর্ব্ব ঘটন। ইইল পাবাণ দ্বতা কনা। এক জন।। পাজারতে বছবিধ স্তখন করিল। তে ভূমি বলিয়া ভাবে হেল্ড জিজাসিল।।

ष्यथ পাषान नियमन तथी हुओं सेशायान ।

श्रात । श्रु देशेशका कमा। वटल छन तही कथा। इह আমি বিঞা পত্নী বিশ্রের ছ্হিডা।। উদ্যানক নাম নুনি ছিল মোর পিতা। দভীনামে হামী আমি ভাহার বনিভা।। পিতৃ श्रुदर-वृहेलाम (योगन मश्युका। कुनत्कटण कुवृद्धिटण देवलाय অন্যমতা।। ভালি পতি রতি আনে পরপতি রতা। একাশ হুটভে নাহি থাকে পাপ কথা। তদস্কর প্রতি মোর পাইয়া वात्रक्षा। निक शृद्ध लहेत्रा त्रांत रुद्य फेल्सानिका।। প्रक পুরুর রাম্বি যাথা হটরা ছঃখিতা। নিরস্তর আন্তর চিন্তার অনু-शका।। देमदबरक अम्छ निनि एहेम जागल। कुह्दत दर्का-হিল বত হক্ষ মুকুমুজা।। বসত প্রস্ত অভি ক্লডান্ত সমত।। रटर प्रक अनक अनदक निरवाधिका।। छाटर आणि नरि क्षिक श्रीक सञ्चनको । शरमाहन छेडर सन्दर झुर्चाक्छो ॥ तकि রোতে উপাপতি করিলাস বেখা। তেলাধিক ক্ষণ পতি দেখি व्यातात्रका ।। त्याद्रभः स्ट्रवाः प्रश्रीवश्री स्ट्रेश प्रश्रायका । कात अग्रुहिक अल शाहरत निन्दिका । अन्न विन क्लार्य स्थारत करह महाम कथा।। इट्टींब भीवान कुछै , सहिद्दव खनाथा।। का-প্রাণ্ডির পালে হইয়া চিক্তিকা। কৃতি করি পদে পড়ি করিল ব্যক্তরা। দূর বাকা অধ্যক্তর হট আনি শিলা। সকলে
স্পর্নিতে মোরে করি অপাহেলা।। পর পতি স্পর্নিন পাপে।
তে দিলা শাপ। তাতে আর অধিক বাড়িবে অনু হাপ।
সর্ব আতি নেহ মোর করিবে স্পর্নি। তেপাড়েপ না করিবে
পশু পশীগণ।। এত শুনি স্ত্রতি হাণী কছিল বিধান। ভোরে
যে স্প্রনিবে নেই হটনে পাধাণ। দেখিতে দেখিতে দেহ
পাবাণ হইল। সম্ভবে পতি মোর এখা রালি গেল।। অভঃ
পর এই মোর পুর্বে বিবরণ। তোমার পুণ্যেতে মোর শাপ
বিমোচন।। কহিলা বিপ্রের কনা। পুর্বে বিবরণ। তীর্ধ পর্যা
টনে ভবে করিল গমন।।

-

े অধ সাধু কুমারীর গন্ধর্ম গ্রন্ত যিবরণ।

পরার। পাত্রমুত দণ্ডী কথা করিয়া আবশ। সাধু জুনা-होदर তবে किछाटम कांत्रन ॥ सून्यती भाषानश्रस्ता देश्या कि थकारह। कि श्रकार काहिना **वधा कर सूर्विस**ारत ॥ कन्। बटल खन उटन करि निनवस्। कहिएड लामाक हम जम मःसं ने ॥ भन्नत्व रकामात जरु हिलाम वीजदर किहू लोहि দানি রাত্তে নিজার কাতরে।। প্রভাত সময়ে মোর হৈল নিদ্রা ভঙ্গ। দেখিয়া গজর্ব মোর ছইল আভঙ্গ। ডরেতে ारिका रुटत प्रिताम ऑक्टि। अश्राप्र शक्तक स्थादत आ-नेता এर कि।। भूकाता किशादय त्यादत जहेल निकल्प । निलात बृखास तम शक्तका माहि कारम ॥ अर्थायन शक्तक रियादन श्वारन कामिल। भिना शतगरन कक निलामत्री देशस । अह ।त गम्बदर्यत मा यानि कात्र । एनिया श्रीद्वात श्रुक रुपेय इंड मन्।। अंकागरल जिस अटम वित्रों विश्वन। आंकर्षशै ाह्य भूने: कतिया चार्र ।। एएकर्रा कासरीरिक नेनन करिकाप ाधुत थानम जानि उन्नीक देशन। कमा गर नाथु दिस শাপন ছামতা। আনক্ষ অন্তরে তবে জিটাসে বারভা ।। एवाहिल शाळ्युक मन विवत्तन। आन एक एक मन मन मन मन एक। कि ह सिन (महे पूर्ण कित्रा) विकाश विकाश हा अपूर्ध कमा रेट्र प्रम के उठिन।। आकर्षणी मक करत निका करत भरत। का निकास पर्धित कि सिनाकुन्त पर्धित कि सिनाक कि सिना

षथ नराभद्रत गुंख निनञ्ज तात्का गमनः

बिश्नी। नगंभत युक, इत्स दृःवाद्रक, काशम कार्यात ल्यांत्क। मध्यम मिन्नाम, हाव्हि श्रांग आण, मरनीमामा मरना ক্রংখ। অমিতে অমিতে, পথ বিশ্রামেতে, উপনীত এক ্রেট্রেশ। অতি চমৎ কার, সে দেলের ব্যাভার, সর্বাহীনবাসে।। ্জ্পর্প দেশ, নাহি এজা লেশ, নারীগণ বিবসন।। সবে পারস্পরে, কারে নাহি হেরে, সমভার সর্বজন।।। বাজার गंडात, रावा त्कर राह्न, त्मरे त्म कालन भारत। मंडा रेराल ছাতা, ছাড়ি ছেড়া ধড়া, বড়ার মন্তবোপরে॥ নাহি ভত্রা कर्त देशरम महिला, साधि कान कर्मकाछ। यन कान जन-श्राद्ध वनम, मृश्विक कहात्र मक्ष ॥ भटत मक मित्र, प्राविटन कृषीत्र, शत्राम्भदत मारि मृद्धि । खाट्य नायुक्क, स्ट्रप्त हमस्कृत् সৃষ্টি ছাড়া একৈ সৃষ্টি॥ ভাবিতে ভাবিতে, দেখ আচ্ছিতে विक्ष वक छेनबील। नाहरेल उडम, प्रतिस व्यमन, उर्छाधिक পুলকিত ৷৷ কৃত্রি স্বৃত্তি নতি, জনেক মিনতি, হেতু জিজাসিল भुद्धाः स्वित्रा खाक्का, क्वाइट्ड कर्मन, भूक्त वथा स्वि काट्यं ॥

ष्मथ के बारकात्र भूकी विवहन : , ,

खिलाती: भूटन बहे सना हिल ममाराना, अश्यम श-নার সূত্র। বন্ধ গুস্পাবন, ছিল পুশোলন, অসুক্র ছিন लाएक ।। वस नदबायक, दश्यि नदमार्थ, अन एर उद करन । पुर निवा, ता नीत काशिनी, दर्शत अमर शक्दा। हरत अक हिन, स्त्रम विवत्तन, हैरासूत नुकाकी तथ। याहर क ন্ভরে, জল শেভা খেরে, মোহিত হটল সন।। কথার থায়, আদিয়া ভবাৰ, উপনীত হয়ে তীয়ে। তাজিয়া বসন, গ্লাধবীগণ, নামি সরোবর নীরে।। করি মান সভ্জা, ভাজি नक लख्का, मशना इरेडा खडि। আছে मध्र अल्ल, खन (रूम गटल, এक रेमवाधीन शिष्ठ । विवित्र घर्षेन, युटा धक खन, ाट्या त्महे महत्राबहत् । छेठाछेन मन, विहित्व वर्गन, दश्ति महत्रा র ভীরে।। বক্ত লাইডে লোভে, লোভে কমে ফোডে, কোডে ्रेश शोर्ष्य प्रदेश । इरम्र षाचि लुक्, खोषान रन पून्य, नज इति াস পরে।। জলুক্রীড়া সারি, যত বিদ্যাধরী, ভিঠে কভকণ ं दत्र । मा प्राचि वनन, गियांकिक मन, किरेन्न रेस्टवर एक्टत ।। ্রিরা চিস্তুন, মুঠ্ট আচরণ, বুঝিলেন ভদস্তরে। গানিরা কা-ণ, বিদ্যাধরীগণ, দিল শাপ ক্লোবভরে।। যেজন বসন, तिल इत्न, पिल संख्या मवाकारतः मा इरव विकल, कलिरव . ণ ফল, বস্ত্রহীন ঘরে বরে।। হবে লজ্জাণীন, লজ্জার কারণ, ंदंव ब्रद्ध मक्ष्मितंत । स्यमम कूकर्या, कलिएव स्म धर्मा, स्क्रद्ध कर्त्र मदत् ॥ इत्र यमि वाम, ज्ञात शत्व जाम, मध्यत्यः मुश-एत । **यह भाभ भिटन, जा**स्थीन इटन, यटन शाल वर्शभूदन्ता ই দে কারণ, দেশ বস্ত্রহীন, ছরস্ত শাপের কেরে। ওঞ্জিয় ्थन, ताधुत बन्मन, पाना चादन यांजा करत ।। श्रीवनाक्षतिकः ্রিল রচন, ত্রিপদী বিভার করে। বিষক্ত বেশের, এই শুর্জা ाव, वावशांत्र देवच कारत ॥

अश मनांशरवत शुक्र जिरमज त्रांटका शमन।

जिल्ही। एन गर गवित्मय, हाजिया विदेख दम्भ, जेल-নীও ত্রিনেত্র দেশেতে। ডথা হেরি চমৎকার, কহি ভার সূবি-দ্বার, ক্ষরক্রব্য বর্ণনা করিছে ॥ স্ত্রী পুরুষ বত জন, সবে रमर्द्ध जिनश्रम, अक जरन किलांगा कतिल। এक श्रम छक्का, शाम भूलकिए मन, विवत्न किराउ लीलिन ॥ भूर्त्व हिल अह রাজ্য, সুরাসুর নাণ গ্রান্ত, সকল জনের অমুপ্রমা। এ সেশের नादीजन, किल कार्ड सूनर्वन, मिक कटा ब्लाटना करत बमा।। खरनिक सुभावगा, भृथिवीटक थना। भना, जना जांत नाहि स्विधि नमा। जकरलब मरनाबमा, सूत्रोस्ट्र श्रिक्समा, नरक সমার ছা তিলোলুলা।। দেখি সৰ অপবতী, মদনে মোহিত মতি, মহাদেব আদি তডকণে। আদি তবে আশুতোয, হয়ে खाँक ममस्त्राय, गतिरकाय तमनी तमरन ॥ नव यूव**ी**त मरण-जानक गट्यां उटक, मन्त्रक कदत्र रक्षन। अके मिन देवत গতি, এই কথা শুনি সতী, আসি নিজ পতি অন্বেখণে !৷ নিজ क्रम लाइ माझ, कामि उभवजी ब्राक, এই मिटन उभमीजा হয়ে। ভাবি ভগবতী ভাব, তসাপ্তে মহাদেন, ছলে ছলি ছল कांद्रख्रिया। (मटन्त श्रूक्रमणन, मटन टेकल जिनत्रन, गाटन সভী না পারে চিনিতে। তদমরে ভগবতী, হয়ে চমৎকার चरि, उर्व डीटर मांशिन डार्विस ॥ गर्सक्रम ब्रिट्गाइम, डाट्ड শিষ্ বিভূষণ, চেরি হৈল বিচলিত মন। দেশি দেশ ছঃখ অভি ভৰ ভেবে ভগবতী, ক্রোধে শাপ দিল ততক্ষণ।। যেমৰ চলি-ल लाद्रा, भिष्ना देनद्वत करत, नक्त इक्त जिल्लाहन। श्चितंत्र कृषण यक, क्राप्य देशम अञ्चलक, मठी कथा ना इब कुला ॥ जित्नज शहेल महतः दूस छाटत अञ्चटन, धहे तम পুর্বের বিবরণ। এভ শুনি সাধুস্থত, হরে অতি পুর্বাক্ত, श्रामाख्दत कतिल गमन ॥

রশিকরঞ্জন। দাধ শাধুপুজের পদ্ধীর প্রাথদান।

এইনপে দেশে দেশে স্তমণ করিল ক্রেমে, াবিশেষ কে পারে বর্ণিতে: এইন্সণে এক দেশে, উপনীত হল শেৰে, ভাৰ্য্যা শোকে ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে।। ফুধ্যে কালৱ র্বাছ, পথ**ন্তান্তে ক্লান্তমান্ত, পেল পরে** তক ফেরারণরে। সাধু েত ক্ষমভি, প্রণমিধা করে জাতি, ছেরে একবিপ্র দে মণিদরে লক্ষ শিক্ষী সে আঞ্নণ, দেব বিশ্ব পরারণ, প্রতিমার করেরে वर्छन।। कि कव रेमटवत कथा, विका भूष। करत गया, छथा बत निष्य अक कना ।। अधिभाग फेटेक: बटरे, छाटक टम^{्ड} खांचा-ণতে, বারে বারে খ্যান ভঙ্গ হয়। ত্রিজবর অধন্যার, শিশুরে গ্ৰেণ করে, অহোধ প্রবোধ নাছি রয়। সক্রোণ হটীর। ন, ডিজবর ভতকণ, অনি করে করিয়া গ্রহণ। বিষয় জো-वत छटन, आमोग अभित थादि। शामकार कविक ছामा॥ ালক হইল হত, বিশ্র অতি জানন্দিত, পূর্বেমত পুডায় निज। त्रांधुनुक सूटत थाकि, अनव कांत्रण त्निंग, घटनां छःदंश াবিতে লাগিল।। এমত না ক্ষেত্রি কাত্ত। লযুপাপে গুরুদত্ত। গুর্বাপ্ত করিল বালকে। ব্রাজ্ঞা এমত চণ্ড, নাহি দয়। স্কুণা-গু, ভক্ত ভগু ব্যক্ত পশু লোকে।। হয় ছিল পাপাশর, মাহি ।র মেহোদর, ধর্মভন্ন নাহিক পরীরে। করিয়া কিঞিৎ বাজি, निविव हैशांत काय, श्रृषा घटक कि अकात करत ॥ खाँगाः। हरवक भरत, भूका ममाभव करत, चांनरकरत क्रिन आवमाना ণশু ভবে প্রাণ পেয়ে, প্রাক্ষণেরে কটুক্সে, অভিবেশে করিছ ।त्रांश ।। हेश त्मदर्श शांधुसूच, इत्य काकि एम. क्रूक, शांधांक्र ইয়া বিজ্ঞার। আপনার ব্যক্তানে, স্কৃতি করে নে ত্রাক্ষার रंग्यक्ष कटर जनस्त ॥ (मधि मीम इत्यास्त, यापूर्व विका ार, जनसार करक जानुजूरक। टक्न यम इ:स फाय- विकि विकास ्धानक, बनक कांत्र मगाद्भारक।। समित्रा नाकृतमुक्त गुल्किक् क्षेत्रिक, भवानक हरेता विद्यत । देशक विक अधिकृत क्षेत्र

्यादक तत्त्र कुन, चांकुल इसीन मभाख्य ॥ चामांत्र तमनी धमी, हत्सामनी मुक्लिशी, टेमट्य क्शी परम्टन प्रतिल । मिलता कार्गाह ल्याटक, मिक मण शुना त्मरथ मिन मिन क्र्मींक वा-खिन ॥ चर्षि जन्म ब्लट्स (लट्स, लट्स क्रान मान फार्ट्स, स्ट्रान **ट्रिल फेबारम खमग। छादि दुखि छाशाकरन, श्रांगमान शा**रव বলে, তব সনে হৈল দরশন। দীন দেখি দয়া করে, রুপা-पृथ्छे मकाकरत, त्रमगीरत पार श्रांगमान । भूरमन वृत्तिहा जाद, वेटल बात नाहि जात, वाँहाहैय कर क्षांव व्याव ॥ इट्रा हत-বিভামতি, স্তবে পুলকিত অভি, শীছণতি অভিশেষ লয়ে। भृञ्जामिक्वनी महत्त, नुमञ्जिक कति कहत्त्व, महत्त कना दिन नौहा-हैरेड़ ॥ श्रुक्तमच देश्व (मह, खाचारनदा अनुश्रह, निगत्मह निक्ति সর্ব কার্বা। অসুরক্ত ভিছভক্ত, নিগ্রহাসুগ্রহে শক্ত, ভবে হক মুক্তিতে সাবুঞা।। ভরন্ধর। ভর সেতৃ, তাহে ভরাবার হেডু, विकालनं करनी करका । पृत्कल मन वाचिन कारण कारण निम्ना काँकि, विकारण कांत्र मत्नात्रक ॥

অধ সাধুসুতের গুটিকা প্রাপ্ত। পিয়ার। সাধুনিজ বধু বিধুবদন নির্বি। মোহেতে গমন चटन बदन वक् मुखि।। विनद्यटक वाकारगद्य विविध क्षकाद्य। ম্ভ ভ দছি বিৰভি করিল যোড় করে।। বিপ্রবন্ধ গর্মকর্ম মর্ম नविकात । हैस इस मर्गास मरतस्य पुष्ट् यात्र ॥ अनात्र नः-শারে সার পকলের নিঘি। বেদ বিষ্ণু বিশ্বপুদ্ধা বিধাতার दिवि ।। त्यां कर्दा जनकर्ता कवक्ता वि य । अवार्गदेव करवत धेर्मा भगत्व।। उक्तिकार्य उन्नाम जारि विश्व शरम। भनानि धातन एव अप विद्व सरन ॥ ठानिक बनत क्वारेटन वंद्रोक्टर । किक्रि क्रमनायम करि निग्राहर ।। क्रमाम का-क्रिकी भारेशा गांव निक क्टला। इतिरव निताम स्मर्थ स्टव विविष्टा । कुनवरी सामिती कुरमह छत्र पछि। दर्शवंडी

रताह्मा छेखमा युवकी ॥ सहस्कृ गवाकतं नाहि क्याक स्राव । নাৰিয়া ভাষায়ে ভাৰ চিস্তা ক্ষমিবংর। সভে নারী কিনে চরি পারি বেভে দেশে: তাদ নালে মনোদ্ধানে বাড়ার ্তাৰে।। এত শুনি স্বভিবাণী ভাৰাণ তথন। অপুৰ্য প্ৰটিকা क्रिकट्स समर्भेग ॥ श्रम्भिन खाटन यक श्रम्भित श्रम् । निद्रा-েদ নাশিতে দে গুটিকে নিপুণ।। রাবিলে মুবেতে ধুবা হয় न युवछी। युव। इस युवछी प्रेटबट्ड देक्ट्ल व्हिष्टि । रेपेन नत ।क तक ना भाम रमिट्ड। राहे अन महे कि ताथरम सूर्य-छ।। পाইরা গুটিকা মুধে রাখে গুণবজী। औत्रम विभिक्ता वः इहेल युवछो ॥ भूनर्कात अनिष्ठा डाम्बरनत्र भटम । वि-ाणि विशदे क्लांटर हटल द्रियमदम् ॥ नार्षि छाल द्रियांनाल ংখাপকখনে। রজনীতে রসবতী রহে পতি সনে।। দিবলে क्षिष त्वरम् हत्व इव्रविष्ठ । नानात्वरक जनरक नियाद्य तक-হৈত।। এই ৰূপে কিছু দিন পথ বিশ্বাদেতে। উপনীভা হৈল নী পিতৃ আলয়েতে।। পুর্বাহতা কুণবৃত। হরে সাধুর্ক।। প্ৰীতা আৰক্ষে যথায় পিতা মাত।। দেখি সুভা মাত। পতা জানন্দে সগন। আদা অস্ত শুনিল কন্যার রিবরণ।। अक्र शनाबुक तक कनताबुद्ध ताथि। सूद्ध कांग नक मन शटल रिमा काँकि॥

ज्य गांधु शृंद्धत विवाह .

क्रियं विकास । शिंक शृंद्धा क्रिया । शिंका । जिंका । जांका जांका क्रिये विधान ।। गरवान शाह्या नगत वाणी ।

पुत गांगित्क गंद्धत जांगि ॥ व्यवकात क्रित हरेन पर्व ।

प्रकारित जेक्त जांद्यत्व कांद्य ॥ गांधुदत गांधु निष्क क्रिया ।

प्रकारिक श्रांदन विद्यान ।। शृंद्धारिक ।

पर्व क्रियं । विदि होन विधि ना शांकि क्रियं ।

परे क्रियं क्रियं । जांशांदत क्रियं ।

ममार । अपनि अहे कथा शिटकात कुटमहा आकाम (य-में अखिल भूटल ।। कविसाय स्थन अभन कर्मा । काला नाहि कानि इंशाह मन्।। पित्रा किथि दिवि वांनी श्रेल: क्वी रवम मिक्र भौने हात्र।हिला। मृह् फाटव स्माप्त मतादा कन्न। क्षम श्रविक्षिष्ठ एक्सरम इरे।। एवम विधि खारम विशेष विधि। कमाएड दिवाह राजन चित्र ॥ यजन रुजन मन्न एटन । वाक म्छ। केर्ड। इरप्रदेश करने।। अञ्चीकांत्र उरक् (क्रम १८व) वर्तन করণ হিন্দে কিরিবে।। পুরোহিত জীত পাইয়া কথায়। नेनटखोर ७८व मिटनन गांत्र । सूर्य देखन मांधु कमादि भान । बाइना बाटण विकत्र वाथान।। मान्ति इद्भर पूर्व विका एकेन। बन्निम निष्यम बिनास शत्या ॥ विष्ट्रिय ज्या कतिरहर्मन । वकुरुषु क्रार्थ क्राधिक मन ।। क्रार्थिक नाएक वकुन्नाटक । सूच ইম্ভুৰোৰ বিন্তু ভাহাকে। রসণীর স্থানে গুটিকা লইয়া। महाकिस एक दिनास इहेगा। शक्ति त्यादर मठी खाँछ कार्की विका कव्यक्षाता हम क्याता।। क्योदत हरेमा थटत श्रित शास्त्र। भीरत भीरत करह समझ माथ।। कलविरम गीरम অন্যথতি নাই। ছোনগবিনে প্রাণ কিলে যুড়াই।। প্রেমাস্কুর त्यात क्रिया भटन। काटत श्राटन ह्हिन त्मल विस्कृतन ॥ আঁথি পালাবে।। দে ভাবে ভাবি রাজনারায়ণ। বলে भूबक्की नक्ष्ठांकेन ॥ क्लि आश लट्ट नांचु कामांचा। **भ**दत अम विश्वसूरकत् कथा।।

कार्थ विश्वश्रदक्त भरमा दर्ग शमम जरर स्थानाम वर्गमा

कार्-जिम्ति । फर्स्स विकास्य, राज क्राबाहरू, स्वित्र कार्याहरू, स्वित्र क्षांत्र क्

त्रीनकाशना

नर्स क्या । वटक मनांखन, डांश्ट्रण विका, कालान २०४ ज्ञ-मक । घटनत कारात्रि, मन कटन राज्ञ, मा दावि छेत्रार कात्रा बिक्ति वाकी घाटड, मश्मात विख्यात, स्मायः नगीर खूक कांद्र प ভাষিতে ভ্রমিতে, অনেক ছাবেজে, মন্দ্রা নেশে উপানীক। দেখে দেশাচার, লাগে চন্দ্রার, ছিভে হয় বিপরীক। অ-শেষ ভূর্মতি, সেশের বসতি, নীচজাতি সদা ভিটি : ভার সঞ্জ माना, किवर्का तम प्रमान तम्दर त्यम भरशक्ति । छः श्रद्धान्तर्भाते गाल महामाना, वत्न शूरणा महा कानी। मूर्य ताका शहना, মেত বিরাজে, কানান্ট্র শিরোমণি।। ব্যাভার আহার, আত চমংকাৰ, কলাচারে সলাগতি। ক্রোধ অভিনয়, কট वाका केन्न, नांकि क्य शक श्रान्त ।। सूट्य स्मर्ट्शक्त, मान किय मस् आह एकरकत गाँछ। वाका स्ट्रांनल, यस इलाहका धन इत (धरो आडि।। शैन कमा मध्य नार्षिक प्रमंद्र উদর মাত্র। চিকুর বিকার, সন্নানী আকার, কৈল হীন ক্ষীণ शांक।। विक्र शिंठर, अभिन वसन, क्यनात बहराख। दनि ত্রাস বাস, পিশাচ নিবাস, ভূমি সব জল পাত্র।। शीर्व ছিল त्वमा, विमीर्ग त्व त्वमा, हिस्तकमा देवनाथकि। कट्टाटक कः যোগ্য, নাহি দৈব যজ্ঞ, ভাগ্যা ভোগ্য অস্কিডিয়া গুছে কলে: দাপ, অতুল প্রতাপ, সিংহ জিনি পরাক্রম। গেল জন্য দেশে वाका नाहि ভाবে, जीठ अकि निवा गम।। नाहि शासाशामः অবুধা অবাধ্যঃ আদাসত্ত সন সবে। লাহি পাত্ত শুদ্ধি, ধঞ্ शैम वृक्षि, ज्यांज्य माहि जाता। एवं वनक्छ, हुवस्त हु-তান্ত, অসাস্ত নিতান্ত গর্ব। তার কটুভাষে, কেই না!ং রোবে, হংগ যেন বক বর্জ।। কামভত্তে মন্ত, প্রেমোন্ত কুত্র নাত্র যোনি বিচারণা। সংগচ্ছ সমূত। পুঞানি ব্যাক্ত शका गर्भक्ता॥ निक्ष शुक्तवधु, खाकु वधु गधु, सर्व ल ब्रांटम । स्ट्रांट्स मिक, कुटक छाटत एकि,

রুমে ৷ নাহি অন্যভাপ, সদা গ্রেম্লাপ, নাহি ০ দেশাচারে। কেবা পতি কার, নাহিক বিচার, একা । অক্ষকারে।। ক্ষমে ভার সহা, মৎস রণ্ডা ধার্য্য, অহছ সং পরে । বছ ক্ষ**ন্ধে লয়**, দিরে নাণি সমু, জাত কাঠি ্যন ধং लब्रह्म क्लेशीन, निष्ठांच भूजिन, सूक्ठिन हिंदन १८४। ह म्मर्थ अन, अहरू छेनन, जिल्न महेकि निता। यह वी क्रमाः कुतक सम्रमाः, सूतक दममा मटवः धमद तमगी, सम्बद्ध कामि, शिमाहिनी चूला (भाटक ।। अस्टदात करे, श्रद्धियान । अष्टेभारणे देखलाकारव । अधन सूर्वाम, अपूर्व मः लाम, वि ্ট প্রভাবে। ক্রণ ঘটা জীর্গ, কুচত্টা শীর্গ, মেঘাচ্ছত চ <! मी। यांच करुति।, अटकत लावगाः तमः हिन्न पिता गिनिः দলর মাঝার, নির পায়ে। ধরু, কি কব ভাহার ছাখ। নিচি तम्मदन, मृष्ट्रक्र छोटन, घटने काटि कात सूथ ॥ दशद कुछ् नत्थ काटछे तुक, विभाछ। छिपूर्य यादा । यथः करते कि ाबाब हर्नाक, घडे त अपूर्व करत ।: यह लाशायत, का ংরোবর, কেবল এক্সের ভরে। ভাবিয়া তুর্গতি, শীঘ্র বৈ ाछ, मक्यूक्छी क्रक्टम्र॥ छथा यनि लाल, विधि नानी है: ট্টাইল পুরুষ করে। ঘোর দক্ষা ভয়, সহত সংশয়, ভা क्ष्याचक मिट्रा। मछ मित्र यमि, छाट्य विदि वामी, यह रामंत्र जाना। जानात छेश्रा, जानात मक्शांत, भाकांनर न उक्षा ।। भारतीय जन्मरन, कुम्कूम् रलायरन, कार्ड्मन य ःवन ভार्तात कशाम, वक याना घरणे, भारत प्रति कार र्थ । इंटर्स इस्त मर्था, इस्त कर्या कर्या, मर्था इटल नमा काटन ওপায় রহিত, চট আচ্ছাবিত, রাছ যেন প্রাসে চান্দে॥ য राजीश्रद्ध, देवदेश कामा मदम, दश्म कूल शांत्र दस्या। न्लः कि किं। कुशाल विकिन, आकामिका मधा तथा।। वि हम बेमम, में हारे छ करम, साम कारन तार्थ छीरत। छा तब बौका, गाति बन कीका, भूग म्हे बानभरत ॥ माथाः यमन, मा रमग्र कर्यन, ऋजस्य तस ५८७। नो भारन अल्ल क्रियरा ভাব ইফা, কলে ৰাকা অকপটে ৷ বলিতে অবলা, খণেতে সবলা, প্রাক্ষা কিনি। বুদ্ধেতে নিপুণা, ভোকনে ছি-खना, कारम कार्येखन का जिला विका महत्रेग्रस, खका व्यमी-মদে, পর ভূগ্যা পর রকা। শুকুর ভাস্করে, লক্ষা নাহি করে, নহে পতি অন্যগতা ।। যার ছই পতি, দেই সেলা সতী, মঙ্কি ণ্ডি অতি ভাল। সর্বটাই মানা, পতি আশে ধনা, দীশে যেন গ্রহ আলো।। দেবর ভাশ্তর, আতে যাব ব্রে, ভার खर्भ भटन जुद्र । मर्काञन करह, काम मदक भटह, आदि रही ঘরে ঘরে ৷ নাহি নিন্দা নায়, সবে প্রেম আশা, বিধরা मध्या मधा। खन्न निर्ण कांड, धटमी कटमी मसि, शहशिक महना त्रमा।। त्कांध त्य कारेनर्गाः निक्ष कार्या मध्य क्रीन लक्षा यका রাজ্য। হাটে মাটে থাটে, ভ্রমে অকপটে, পুর্চ্চে করি শিক্তু थार्या ।। होन कान ताका, स्कार्या अकार्या, शरसवा करत टोर्स। नवकू मार्स्स, नह धर्म कार्या, नकूर खोका दनकाटनका ।। षट्याका कूट्याका, कूकार्गा निवृद्यं, जन्छ निव मान्ध्या। कः तिल तहन, ताकनातात्रन, উপाधिटक उद्घाहांगी।।

4

ঐ রাজ্যের পুর্ব্ব বিবরণ ও উবাহরণ ও বাণ রাজার লক্ষীত্যাগ।

ত্রিপদী। দ্বংধযুত বিজস্ত, দেখি দেশ অভুড, চনৎকৃত চলে ধীরে ধীরে। বিরুপাক্ষ শিব নথা, উপনীত হৈল তথা, প্রণমিরা বছ স্তুতি করে। যোড়করে করে স্তুতি, হেনকালে দৈবগতি, তথা এক আইল সন্মানী। বিপ্রপুত্র স্তুতি করে। প্রণমিরা সন্মানীরে, জিফাসিল মৃত্ত মন্দ হাসি।। দিগার্মর লরা করে, সবিস্তাবে অধ্যেরে, কহ এই দেশের কারণ। ক্রিক্রধর্ম একালার, সমা মারা নাহি কার, কদাকার অভক্ষা ভক্ষণ।। ভালি তবে বিগম্বর, কহিলেন তদন্ত্র, শুন এই দেশ বিবরণ।

ইণ্ণনামে মহারাধা, শুভ প্রকাবত তেকা, বিষপুতা পারারখা। ভাতার জনরা সভী, উবা নালে গুণবভী, देवन प्याचिन खन्न। खन्दन मन्ना देश्या, हिन्द्रान्था भारे स्मनिकः स कविल इत्।। धनी स्निक्तिरुट्य (र्णाह, देवद्य ध নাহি, গোপদেতে বিবাহ কহিল। পতি লইয়া ৰপ্ততী, পতি কপে স্থিতি, দৈৰগতি ভূপতি শুনিল। ওঞ্জন : करत, श्रादिनिएक कनाति श्रुद्धि, व्यक्तिपारत कास्रोद्धि थी দারদ সংবাদ পেরে, ছারিকার গ্যাহে গিয়ে, **এ**ফু (प्राठित कतिन।। स्थानि (सर्व नाहातिन, अकाथ**ण्टत** फर সসক্ষরি সাজিল সম্ভবে। কাণ্যাকা কার্ছা পেরে, ভা गरेत्रमा लहा, युद्ध नच्छ। करव उक्तांध छत्त ॥ (इनकारण লক্ষ্মী, যাণ নৃপত্তি উপাক্ষি, কৈল ডাকি সকল স্থুনী হ ব্যাপ্ত চরাচর, পরাৎপর দামোদর, তার বহ যুদ্ধ অভুচি চাহিলে ইন্সিডে মর, চরাচর লয় হয়, কেন তার সঙ্গে मुखा, मश्वरम निर्काश्य करत, धम ध्यान होका गारत, नात त्यादतं इत्व क्रम् ॥ वाकात कृत्कि देश्ल, लक्की वाव छेनिन, भारत मोछ। इहेन क्यांभिछ।। कतिना निषम সম কান্ত সহ বাদ, তব গৃহে লা হইবে স্তিত। ।। বিষম কু शांत्र, त्य शांका ना स्थरन बाह्य, शक्तीरत विमाह्य मिल जिल রিষ্থ উপেন্দ্র কারা, তাজিয়া রাজার মারা, চলিলেন ক্ষ্মতরাবে।। কুকিয়; রাকার মর্মা, তদভরে রাক্ধর্ম, ছ त्रोक्का क्रिल शमम । (य हिल क्रीकांत्र यम, इंडेल टन ध[े] रामा, धन्द्रा भीटह हटल उडका।। लक्की धन्द्र राम यमानि देशम ब्रांजन, धर्म वृद्धि धर्म अञ्चलादत । सुवृद्धि প্ৰ-কাৰে, ভাজি সেহ বামরাজে, বিনা বাজে গেল ছ खुरत ।। य हिल ताकात विका, ता रुटना नक्षीत वः নুপ্তিরে ছাজি সমুস্থী। জানিরা রাজার কাব্য ছবে: ' ক্রির কাজ, ধর্ম সঙ্গে করিলেন গভি।।' যে ছিল রাজার

हमा । । देहल वस्त्रीत तम, कालिएनक होने मुशक्ति । उर किल ताकात दहर, विना यम हदा भारत कालि दहर दोल होना खदा । यस कर्य क्वियोन, कानि मुशक्ति मान, किति ख-हान दृश्य काकि । यहें क्शि क्वियं क्थिय, खूशक्ति यम खद्य, काकि विदिलम शकि । माओहाके नाम दिक विकाश होना। साकि। मटक क्षेष्ठ हहेंने श्रकाम ।।

অথ বাণরাহার দশদশা।

लिलही। डाजिया तांक जनन, शूर्स डेज मणकन, धमन कतिल कामाश्रद्ध। कि कात्र करिव वीका, ताला देशन लक्ती ছাড়া, भूष में छ। घटि भगाभदा।। अध्य खनकरी जामि, ভূপালেরে কহে হাসি, ভাল বাসি খাসি তব পুরে। কর্শ্বেভে वाष्ट्रित यम, रहेलांम छव वल, जगरस्राच न। जांब जहरत ॥ দিতীয়ে অধর্ম ফিনি, অলক্ষীর বশ ডিনি, এবেশেন রাকার শরীরে। হয়ে অলক্ষীর বশ, ভৃতীয় আদি অন্স, করে वाम नृभाष्ट अञ्चदत ।। हजूदर्श विवय कारय. कूर्यांच त्य वान-রাজে,মতি গতি আকর্ষণ করে। পঞ্চমে আদি কুবিদ্যা, দেহ कालकोहै बाधाः, निक माद्धा लहेल हाकाद्ध । यदर्घ मुखाः सङ्ग স্বভী, হরে পুলক্ষিতা অভি, ভুপতির ভুগ্নে স্বান করে। সপ্তর্মে कति नका, जाहेदलन स्मिलका, धार्या तनना छेशता ।। ब्रह्म जनकोत्र तम, जसे त्मरक जमार्ग, मृश त्मरर यात्र स्वासद्धः नवरम चारि निष्ठा, वांग नृत्म कति प्रशाः आदनिया सन्त्रेत मांबाद्व ॥ क्षणाटक सूर्विकान, काणि करव विभागान, हार्विक रशन भानना जास्टर । करन त्राधनातात्रभ, तृश्विरशन विक सम् मन मना कटर मट्य कटर ॥

शतात। त्राकारत नहेता जानि शहे मगनदा। नगकाति यह देनमा त्राकात भागता। लाएक क्याक हिस्सा हुतास भमन। काम क्यांस शम शर्म काहेन कक्या। निकास

কুছে। বাদ বিবাদ ঘটন। দর্গ গর্ক দাশ্চর্যাদি বছু শতক एके भोगाफे नहें नहें वह जन। यनाँच एटेल क्यांटावी अनग সেনাপতি কাম ধাম করে এটা দেশ। জ্ঞান হত কাম टेकल नगार्टमा। शुर्व्साफ य हिन तांका यक्ती पन्ना -कालकरीत रेमना एरथि ग्रहन रिक्स छव ॥ निर्वाखन था দেখিনা হৈল ভয়। আদি চট্ট পট্টবস্তে করিলেক অয়। নমুপাইল ভয় দেখি অহস্কারে: আনুসি সংখ্যা জিনিল সংখ্যা জলঙ্কারে ৷৷ অখাদ্য মুখাদ্য গণে দিল বভ ক্রে অসভ্যের ভরে সভা ছাভিলেন দেশ।। আসি কাম নিব উপরে ছাভে শর। কাম শরে নিকাম কালের অনুচ লোভে স্বাসি লেণ্ড বাণে লোভী কৈল প্রজা। স্বকলস্ক अती क्लफ निल धका।। अञ्चारत विद्रांश छाष्ट्रांत द देशक। छेलकादा छेलकात किनिम युटकारु॥ मना प आर्षि नक्यों अञ्चहत्रन। ताका छाकि नक्यों भाष्य है श्रामाम । अविमान अভाব नमूह देश्ल मृ: श्रामा मध्य श्रीन सूक्ठिन गुर्थ।। शतुम्भत खत खत कामणटे ए সংজ্ঞাম নিকাম আদি নাহি দেখি কেহ।। বেশ ভিন্ন ট हीन कीर्न इहेल (पर्। हटछेत्र असादि गरु मु:थडी त्य ्रामिन ভোগ काम यान সংযোগ कतिल। गम विम अे श्र कांभक इहेन।। जनस्रत नात्नापत्र इहेशा कूशिकः ब्राटका उपमीछ इहेल इतिछ।। आव्रिकना वांग मह वि क्षेत्र । सूत्रासूत्र रममनामि करण्य घटत घत ॥ जर्वा क्रक मछ चारुक नः ब्राम। नटर कम नम नम चना च लीबता विक्की इंडेल इस्क बारमक बुरक्तरक। यान पर्न-अर्थ क्रिया क्लार्थरण। ८६नकारण कामरमव कृरकत क्षेत्र कुष यक्ष वाका रहेकू हैका देहन यम ॥ निवन क्टर कटव कटकत्र रशाहरत । जाका दहेल वहे रस्टम व्याधकारित ।। अक श्रामि नात्रामा मिला व्यञ्जित करि বসতি কার অতি হতীনতি। অধিকতির কাম শরে তরিও শালন। আর তাহে অলক্ষার অ্লুচরগণ।। পরশ্পরে কানের নিকটে দের করে। কোকিল ভৌলিল তথা স্করে কানের নিকটে দের করে। কোকিল ভৌলিল তথা স্করে নির্ভর।। কাম যোগ কাম ভোগ কামব্রত পুরা। কামেতে কামিনী কামী দিল কামধ্যজা।, সেই হৈতে কালেতে পুর্নিত এই দেশ। নিশ্চর জানিবা এই দেশের বিশেষ।। মেহরুত বিপ্রত্বত অনুত অবণে। মন্নাদীরে স্কৃতি করে বিনর বচনে।। চমহকার স্থাবিন্তার শুনিয়া বিশেশ। অতপের কিছু আরি মোর অভিলাষ।। পাপাচার একাকার জবিচার আতি পুরা মোর অভিলাষ।। পাপাচার একাকার জবিচার আতি পুরা বিনে কেমনে এ দেশ আছে স্থিতি।। পাপ পুণা বাকা কিন্তু একত্রে মিলন। কেবল পাপেতে রাজা গৈর্ঘা নাহি হন। পাপ গুণা ভিন্ন অনা দেহে নাহি রয়। অতথব ভাবাভাব কহ মহাশার।। শুনি হাসি সন্নাদী কহিছে তত্তকণ ব্যা প্রকারে হৈল এই রাজ্যের রক্ষণ।। দাঞ্জীহাট যাস দিল হৈলা অভিলাষী। তাঁর আজ্যা মত গ্রন্থ ভাষার প্রকাশি।।

ঐ রাজ্যের প্রসংশ।।

-कोश्यास । कोशीकाद्य मक्छाद्य खत कृति काला। विशेष नत्र। कृति कत्र च्यति मांग। यांगतारका श्रम भूरका गरझ व বাস।। ভঞ্জিভাবে ভব ভাবে ভেবে ভগবছী। পতি কা রাণয়াজ্যে করিলেন গান্ধ।। মুক্তকেশী করে আশি বিশ্ব র नामा जाता मनी मृह्शंत स्थानाम वाति॥ ततः খৰ বিষ শুষ্ট শির করে। করে দণ্ডখণ্ড খণ্ড পাপ অন্ধকার भरन मह अक्तरेनका अक्षा कहिएक। छाकिमी रमानिमी व लिमािक मो शिथा। (भन्न यान्त्राधम लक्क कान्त्र वसूमके। লাপ তুপ দাপ ছাপে দাপ ছিভি।। শিব রঙ্গে চলে স कारक कुका कि भी। दन्धि पत्र लाटन छत् यत्र यत लानी।। म काम दर्शिकांस कांस कांस कांस जादर। जिल्हादर अर ए উপমীক ভবে 🔢 ভাবিয়া ডভেবে ভাব ভব ভেবে বং कालीपाटम चक्क काल काकि निमा काला। काली काली र **छद्र निरादित्व सूर्य । काली नार्य मनकालि धा**न्य । लाद्या कनिकान भर्गास तहित्व काली विकार एक জ্মুপম হইবে ভূপতি।। ধর্ম কর্ম মর্ম যত করিবে প্রকা স্থান খ্যান খ্যা হোম হবে বাবমান।। গ্রেষ্ঠ মতি প্রেষ্ঠ ক লেন বহুমতী। অভশব মহারাজ না ভাব রুর্গতি।। ভব क्षेत्रार्वस्य जारहम जवारी। कठ प्रित निवरलास्क शत र ক্ৰি। অজীকারে ভ্রানীরে লয়ে পুলপাণি। বিরুৎ बद्भा प्रमा प्रका करत कानि॥ अरुःशत सूरिकात । ভুজন। কেবল ভুপতি মাত্র দেশের ভূষণ।। কি কহিব क्रमांव थन त्म द्राकार। कीवगुक्त त्मव क्रक विवासक व ্লাদেশপান্ত দান্ত শান্ত নিভান্ত স্থাত। পিতে নিভে র कुछ हर्छ कर्छ काकि॥ धना धना नर्क माना रेएना ि मन्ति। श्राट मांडा जेशकांती धर्यंत ममान ॥ वस बाटमा १ श्रुका ज्ञष्ट देशर्य। अकि। त्यक्ष कार्या नदर आक् वर्ष्क र मुक्ति।। सर्वः नय यौर्वाक्य शास्त्रीक्षा वृक्तित्सः। मस्ति पृक्तिः।

বৃত্তি সার এ অগতে ৷ বিপ্র ক্ষতি শুদ্ধ দ্বি পার্ছয়ে ब्राटकारक। अभकत्म खारन बांसा शरीकरम्य रेग्डिक । अन्य नना क्या नवा भया भूत करि। खाप्प आद्य विकार संग्रह-ইল ভিতি।। নানা ছানে নানা স্থানে অভীখের পেরা। বছ भक अमातृक होटन छोटन ट्यांचा · विश्व देवण **एक स्वा** आणि निकी काछि। सूरथ ब्राध्यानी मत्मा कताईल विडि॥ গুদ্দাচার রাজার বিচার শাস্ত্রমত। প্রতি কতি বেশান্তের व्यत्मक शिक्षक ॥ शुक्क आंकि लिक्केमिक मनावादक मन । देखन যোগ্য ভোগ নাহি হয় কদাচন।। সার্বজন নিষ্ঠাৎন আপিছ অন হাবী। এই মত হীন যত বৰ্ণিতে না পারি।। সভী সাঞ্চী অবলাস অল্ডাব প্রতি। সক্ষরের ভূষণ বেমন নিশাপতি !!! সকলের শীলভা ভূষণ ফেন অভি। সেই মত দেশের ভূষণ নরপতি।। এত শুনি বিপ্রস্ত আনন্দিত মন। বছবিধ নমাশীবে করিল শুবন।। স্তবে তৃষ্ট দিগধন জিঞাদা করিল। क्षक्रि निक इःथ निक्षञ्च निर्दामल।। এक छनि महानिरित मरा उभक्ति। अभूकं सक्ती এक छादर मर्गालन।। यानी-র্বাদ অঙ্গুরী পাইয়া বিপ্রস্ত। অঙ্গুলীতে নিরোজিল হয়ে পুলকিত। বেই মাত্র অঙ্গুলীতে অঞ্রী রাখিল। দশ নিশা-চর ভার অগ্রেতে আইল।। দেখি চমৎকার হৈল বিপ্রের নক্ষন। সন্নাসী বলবে বাপুনহ ভীত মন।। এই কঞ্রীক य**रे कम (मध्र शांदक।** इटर मन निर्माहत कारात आखादका। এত শুনি বিপ্রস্তু আনন্দিত মন। নমাণীরে প্রণদিয়া করিল গমন।। কভ ভূরে গিয়া পরে বিপ্রস্তুত কর: কোন कर्ण्य कम तरव कह स्ति कहा।। श्रीन निर्माहतर्श करत निरव-मन। गर्स कर्य शांति त्यांता कतिएक गांधन।। अनि विश्वकुष নিশাচরের বতন। ক্রিতে কহিল ভার ভার্যা অন্নেবণ।।

বিপ্রস্কৃত ভার্যা। সহ মিলন।

প্রার। এছ শুনি দশ্দিক ধায় দশক্ষন। স্বরণ্য সধ্যে भारत दम्मा कटम्बन ॥ चाकिल सुल्हती अक सनित क्रिट আচ্ছিকে তুলিয়া কইল নিশাচনে।। ভাষ ভীতা ছঃখযু লাগিল ভাবিছে। না কাৰি কি আছে ভোগ আম ভাগোতে। ভয়ে স্চী গুণবছী মুদিল নয়ন। কণপবে আ ৰুখা বিজ্ঞের মধ্যন ।। ভার্যা। দেখি বিএক্সভ প্রেমে পুর্লক। म्हांनरक महात्यार्थ हरेल (माहिष्ठ। क्रेश्नरहत धनार করিয়া বিভার। নারী প্রতি ক্রিভাসা করিল তদন্তব ।। ত খনী কছে ভবে পূর্ব্ধ বিবরণ। যে প্রকারে নিশাচয়ে ক হরণ।। মোরে হরি ছ্রাচাবি লইয়া চলিল 'কভ ছুগে গে भारत निर्मि (भाष देवल ।। द्वति अक महत्त्रावस वदनत्र किवर মোরে রাখি পান হেতু প্রবেশে সেনীরে।। যেই গাঞ্ निम भीरान भीरम। नक क्रा मिमाहत देश्य एकक হেরির। আমার মন পুষ্প স্থপ্রকুল। বিস্তার বর্ণিতে ব वीक्त्य वाद्या। इश्थ मत्म ताह वत्म कतित्व अग्न। दे श्रद्ध मूनि नइ देशत महभाग ॥ यंटरन शालन देकल क्रनक रश আপুষি ভনন্তার জুলা করি যে সেবন।। একদিন তাকান করিয়া শুষন। ভিজাসিল সেই সরোবর বিবরণ।। মুনি শুনহ পুর্বের বিবরণ। সিদ্ধ পীঠ এট স্থান শাল্ডের লিখ विश्वामित जनव शानव नाटम सूनि। छीर्थ शर्याहेन कति ज कांशिनि।। এक मिन ७३ छीटर्स कांनि महासम्। सान माप्ति करल मूनित छनत।। आह्य करन रहनकारल कू भद्रिण। नक्षन्थ फारम मूनि काठत रुहेंग।। (यांश वर्षा इन्य करत्र एरलाधमे। मरतावत करल मान फिल छर्य तिहै क्रम क्रव करण करत ज्ञान भाग। **लिहे क्रम** हरत नज শ্চয় বিধান।। এডবলি ভীর্ষে চলি গেল তপোধন। কল । জীবনক এই দে কারণ।। শুলি প্রিরতম মম বিষম ব

ताक्षशृक्ष कांगकुक (मर्ट्स शमन कर पृ को दर्गन ।

(कोलमी। अथा ताक्रमूक, व्यरम्राठ (योमक, त्मारम अहक, निधम इः रच। (यरम कांग्रे वृक, निधाक। निध्य, ममा
रमाइःथ, कहिन कांशारक।। कांटर (भात धम, मथा दिन यम,
शिक्ष शमन, व्यालन (मारक। क्षरमि श्रिमके, व्याक्रे व्यामके,
विवास स्थान, व्यालन (मारक। क्षरमि श्रिमके,
विवास मधे करे, घर व्यापका। मा भूतिन नांध, नियम
समाम, मार्थ देशन नाम, कांग्रात (मारक। ममा नितानमा,
स्माम, मार्थ देशन नाम, कांग्रात (मारक। ममा नितानमा,
स्माम, मार्थ देशन नाम, कांग्रात (मारक। ममा नितानमा,
स्माम, मार्थ देशन वाम, कांग्रात (मारक। ममा नितानमा,
स्माम, मार्थ देशन वाम, कांग्रात (मारक। ममा मार्थ। कांग्रात (याम), स्मामन
स्माम, स्माम, स्मामन वास्त्रमा, इंटर व्याक्रम, महाम, महामन
स्माम, स्माम,

खरता वद्य द्वर्गार्थ।। (बन ताका रमः (बन वकुत्रवः कर बाय्हेन, अकृरके चारह। अथरत चनन, क्रांक बरक जल, वियादन रिका, श्रांग कि वाटा।। एः स्व वाटज कृत्य, ध्यटन शासि वुक, विश्वा विश्वन, लास्य श्राहर कि श्राव अथन, दलारहे লৈখন, এ সৰ ঘটন, তায় হয়েছে।। এই আছে নিধি, বিধি देश्ल बामी, नाशि मिटल निधि, निधि आकदाः अमुखे मश्टबाटण, विविधादत काटल मूर्कावटन वाटम, ७८७ ७।शाटर ॥ मा स्मित्र छेशात्र, मःत्य श्राग गात्र, विधि वामी जात्र, इहेन দোরে। মিছা চিক্তা আরু, জাদার স্থার, শরীর সংহার, इत्य अरक्दत् ।। भिष्ठ कालचाक्त, क्दर्बाइ त्य कार, ना कतित्व नांक, नर्क अवादा। निक तांत्य ताथ, इहेन्ना अत्वाध, जावि काली श्रम, हरण मधुद्ध ।। कालीब किक्रव, खब्ब मध्यातः नाहि चत्र डांत्र, त्वर असुमाद्र । ভाবিলে मে পদ, विनारण आश्रम, সম্ভ সম্পদ, হয় তাহারে ৷৷ ভাবি সে চরণ, করিল শমন, রা-রাজাঁরনক্ষন,জভি সন্থরে। ভাবি ভগৰভী,চলে ক্রেঙগভি,জতি क्रहेमांच, जाण! निर्स्टत ॥ कटा वा जाणान, कटा घन चान, অনেৰ নিখাস, ভূতাশে করে। দুঃখ সমাবেশে, আখানে इंडाटम, शिव खवरमदन, बरू नगरते । काग्युक नाम, आम क्कुश्रम, छक्ति मदमात्रम, द्विश्व १६८त्। त्राकात नग्नम, कानिक्छ मन, पूछी कारश्यन, धक्त करत।। निक्रमी तक्रिनी, ब्रायांनी भानिनी, लाशिमी, लाशिमी बाक्तनी, घठाटक लाता। নাপিভিনী ভার, দুতী কর্মা লার, এই স্বাকার যে যায় পুঁরে। অমিতে অমিতে, নগদ মধ্যেতে, দেখে অ্চাষ্টিতে, बक मानिनी। शाह करुपछि, कूछ रक्ष वटि, त्रब्बू गर पिटिंग, द्धरबङ्ग क्रोनि। कि क्व विस्थित, सर्किक वेदमेग, उथाठ বিদাশ, যুক্তী কিনি। কপের মাধুরী, রবের সাগরী, সেকেছে कुष्पत्री, जानती धनी ॥ क्लांकिन कब्बल, क्ल सुनिर्वात, तकत नीबि। मिछ गुष्टभन, कछि छन्। छन, बादन। एव स्नन, तम सूब

शिशा नव कर कछ, नशीख देकिछ, हाल जिल कहन, करनक '
गता यात्र कारह रारत, मिथित शृक्षदम, करह कथा रहरमू,
हारव किनिता। कारक ठेमक, खमक थमक, याक हि।
दक, त्वाक नकरण। कारक शारक काम, यादक माथ रोष,
दक मिरछ होम, हार अकरण। क्यांनी नक्षन, खरक आखम, कारह स्टम्पाछन, हिका माछी। वहरमर वृद्धी, माकिगर, जारह स्टम्पाछन, हिका माछी। वहरमर वृद्धी, माकिगर, जारह स्टमाझ, वाल खरा लाल, शलाह नार्छ। मीर्च
गर, जारह क स्माझ, वाल खरा लाल, शलाह नार्छ। मीर्च
गर, जारह कि स्मान, शरमर धमन, स्वत नारक। होस
खादा, करत निरंदमन, ना मिर्च धमन, ख्रा मारा। रहन
खादा, क्यांच, क्यांच, नार्डि धमन, ख्रा मिर्च।

12-00-5-00-

অথ রাজপুত্র কান্যকুঞ্জ নগরে প্ররেশ ও দুতী মিলন।

পরার। দেখিয়া রাজার সুতে রবের মালিনী। কাছে
মাসি হাসি হাসি জিজাসে কাহিনী।। কি নাম কোথার
াম কোন প্রামে বাবে। ভাবের ভাবক হবে বুনি অন্তচাবে।। শুনিরা রাজার পুত্র করে ওডক্ষণ। নিজ কার্বো এই
বাজাে করি জাগমন।। অদা এই নগলেতে হরে উপানীত।
বাসা হেতু নিরাশয় অন্তর চিন্তিও।। ভাগা বলে ডোমা নহ
হল দরশন। কে তুমি কোথার থাক কহ বিবরণ।। মালিনী
আশের পেরে কহিতেতে বাণী। চন্দ্রকলা নাম মম ছাখিনী মালিনী।। ভাল মন্দ জানি নগরের সমাচার। অলাধা
সাধিতে সাধা আছরে জামার।। অভ্যান বাদ হয় সমাত
জাপান। দয়া করি চল তবে জামার ভবন।। এত শুনি রাজ্

पाणित स्गात ॥ श्रीतशाणि वाणि थानि छे। दिनश्वा प्रता । श्रीतशाणि वाणि थानि छे। दिनश्वा प्रता । श्रीतशाणि वाणि थानि छे। दिनश्वा प्रता । श्रीतशाणि वाणि थानि छे। प्रति । श्रीत क्षेत्र वाणि विकार गाणिन किल्ला गाणिनी य-र्मे कुण्या प्राप्त वर्गा प्राप्त वर्गा व्याप्त वर्गा व्याप्त वर्गा व्याप्त वर्गा व्याप्त वर्गा व्याप्त वर्गा वर्गा

-

खाध मार्गाशस्त्रत कनार्य क्षा वर्गन ।

রু মধুর অধর মধুরীম। বিশ্বকল স্কুরাভুল ওরু নহে শম।। डोवि न्लाग्ने निक कक्षे रत्न त्राम नाटक, हान यूक रहा উঞ্জ হৈল তার মাঝে।। যে ছিল, তুলনা আন মূচন প্রবে লাকে রক্ষ শাখাতে যে বুঝ অনুভাবে।। দিকি ইদিনত ভার চমৎকার জাখি। ছেনিয়া ছরিণী বনে গেল হঙ্গে ছংগ্রী वक्षन शक्षन काँचि प्रविद्या थक्षन। कामानि देविक निका करत काञ्चकत्।। क्राञ्चिक जीवन केषु किमिश मजना। ता कार्य সন্ধান সদা ভুরু শরাশনে।। এত লাজে তবু কজু মনভুলা ভূলে। হেরি ভাব আবির্ভাব সে ভাব হিলোলে।। **সিন্দু**র विन्छुत्र क्व मिव्कित (इस्त । अमाणि अध्व मार्थ ऋह इस्क নারে। চাঁচর চিকুর ভার প্রোধর জিন। কাল্যিনী জানি নুত্য করে মনুরিণী।। কত কন অবর্ণিত সুললিত বেণী। লক্ষা পেয়ে পাভালে পশিল্যত কণী॥ কল্ল জিনিয়া কাল নমনের ভারা। সে ভারা হেরিয়া ভারাগণ ভাজে ধরা।। क्रुधा किनि ভाषा नाम। जुलना ना रुप्र। अंशर्क्य, वक्रध्यं जात সমানয়।। কামিনী কোকিলকণ্ঠা কণ্ঠে হোলে হার। স্তন হেন অমুপম সম নাহি তার।। কুচগিরি হেরিয়া গিরির গেছে शर्रत। सूरमञ्जूत मृक्ष फक्ष ভাবিয়া সে धर्यत। योगरनत जाआ ভার পয়োধর বুকে। দিয়া কর দিতে কর চাতে কত লোকে লাজে করি কুন্ত লয়ে স্বরণা ভিতরে। দাড়িয় রক্ষেতে পিয়া তথাপি বিদরে॥ জিনিয়া মৃণাল ভাল ভূজের বলনি। হেরি লাজে বনমাজে লুকায় নলিনী।। চল্পক কলিকা জিনি আজু লীর ছটা। চল্লের উদয় ভার নগছটা ঘটা। কন্তালী কে-শরী জিনি যতনে গঢ়িল। সে লাজে অরণ্য মানে করি জরি भिना क्षरत निष्य एष मिर्च प्रमाता यह प्रात्त एक হেলে স্বভাব তাহার।। কণলীর তরু গুরু জুরু সুগঠন। লিখিলো সরাল গতি দেখিয়া গমন।। পাদপদ্ম মুলোভিভ मध्य (रहत । रहत थम गर्मा बम्म इंक्यून जमत्त ।। धाकिएक নয়ন যেবা ৽৷ হেরে ভাহারে। ধিক জন্ম ধিত কর্ম ধিক ধিক তারে। বছজাক্ষ করি ঐকা চমু আপনার। যদি দেখে ভরু থেদ পাকরে ভাহার।। দেখিবে প্রভাক্ষ যদি পারি দেঁখালিতে। মনের বিরপ হয় সৈ রপ বার্ণতে। রপসূতা সাধুসূতা ফিলেরে পপ্রিভা।। পূর্ণ রপবন্ধী অভি রসেতে মপ্রিভা।। কার্রারে বিবাহ ধেই জিনিবে বিচাবে। কড শভ সুপ্রিভ এলৈ গেছে ফিরে । এক দিন সাধুসূতা আছিল শয়নে। দৈবে এক রাজপুজে দেখিয়া স্বপনে।। শয়নেতে মদনে মোহিত হয়ে মন। প্রভাতে শারীবে জিজাসিল বিবরণ। ধৈনা হৈতে নারি শারী কি হইবে গভি। শারী বলে গ্রেহ বসি লাবে তব পভি।। চন্দ্রসেন রাজসূত বিজয় স্কুনর। সে আসি বিচারে জিনি হবে তব বর।। ভাহারে সাধুর কনা। করিবে বরণ। ভূমি কেন ভার চেন্টা কর অকারণ।। লাএটালট বাস ছিল ছিলগণ দান। ভার আজা মতে গ্রন্থ হইল প্রকাশ।।

-

कथ गांधुकता। यह तांकशृद्धत साम हता पर्मन।
श्रीत । यह छिन तांकशृद्ध श्रुविक सन। छारत मरम
वृद्धि हत्र कार्यात गांधन।। कति हला हत्ककला मालिनीरत
यता। यक पिन प्रत्यन शाह कि कोणता।। क्या पृष्णु दिराह विधित गःष्ठेन। छ्यां गांद्रक पिथि गार्थक नत्रन।।
छिनिता मालिनी करह तांबात क्मारत। या पिदरण सारम
धर्मी यांद्र गरवांयदत॥ कानित्रा गक्काम छात कर विवत्रण।
त्राम हत्व कृषि छात्र कत्र प्रत्यमन।। वांका हत्व स्ट्रकोणता
प्रमा प्रक देहत। मन्नरन स्थान स्थि निनि श्रीहाहेन।।
व्यक्तार छिना निक निछा कृष्ण कर्ता। मालिनी गहेना।
तांकात नम्मरम करह सन स्थान।। गांधुन्य । त्यन हांदम

কাস্য সরোবরে। যদি ইচ্ছা হয় তবে চিলহ হল্পরে।। এক
্রিনি রাজপুত্র অতি পুলাকিত। মালিনীরে গঙ্গে করি চলিল
গ্রিত।। দ্রে হৈতে মালিনী দেখাইরা সরোবর। তথা হৈতে
গহুবেতে হইল অস্তর।। রাজপুত্র উপনীত সরোবর তীরে।
পুল্পরন্য স্থানাতন সারিভিত্তে হেরে।। কলে কুনে অভিকৃতন
বড় শোভা পার। প্রিয়া সজে বনপ্রিয় প্রিয় লরে গায়।।
নুভাইতে ভাপ ভাপ উঠে সলোবরে। পুশা বত অবর্ণিজ
চানিভিতে হেরে।। স্থান হলে সাগুসুভা ছিল সরোবরে।
মদনে গোহিত হৈল রাজপুত্রে হেরে। রূপ ঘটা চাকে গটা
স্থানির কি লো। বন্ধ খেন প্রোভ বন্ধ দিন্তীয় সন্ধান । মধ্য
স্থান জুল বক্ষ ভাবর রাভুল। কন্দর্পের গর্মি মহে সাত্র ভুল।। জিনি চন্দ্র চন্দ্রিকার মুখচন্দ্র আলো। খগরাজ পার
লাজ নাসা অতি ভাল।। স্থানর স্কুচার উরু কুলু শর্ণসন।
ভুরু সুগ নিন্দি নাগ অভি স্থানাভন।।

অথ নালিনী সহ সাধুকনার কথোপকথন:

পয়ার। এইরপ রসকুপ হেরি রাজস্ততে। মাহিতা প্রশারী মনে মদন বাণেতে।। উভরো চমৎকার উভয়েরে দেখি। বারেক ফিরাইতে নারে অনিসিধ সাঁথি।। সাধুর নিদ্দনী ধনী হুইরা অধিরে। গৃহে আসি মিউভাণী জিল্ডাসে শারীরে।। ওছে শারী প্রাণে মরি কবে পার পতি। শারী বলে মনে ছুংখ না ভাব যুবজী।। বেই জন পুরাইবে তব মদ আশা। চন্দ্রকলা মালিনীর গৃহে কার বাসা।। এত শুনি স্থানীর আনন্দিত মন। আপনার সংচরী করিল প্রেরণ।। শীন্ত ডাকি আন চন্দ্রকলা মালিনীরে। স্বীগণ উপনীত মালিনী আগারে।। চন্দ্রকলা ভাকে ভোরে সাধুর কুমারী। বিলম্বে নাহিক কল চল ছুরা করি।। শুনিয়া মালিনী যায় কুমারীর পুরে। সাধু কন্যা যতনে জিল্ডাসা কবে ভারে।। ছাড়ি ছবা চন্দ্রকলা কথ বিবরণ। তোর বাড়ী বাসা করি আছে কেনে জন।। করি ছবা চন্দ্রকলা কছিব কনারে। হুথিনী মালিনী একাকিনী নহি ঘরে।। কেন বাছা একি নিছা জিজ্ঞান আমায়। বল দেখি কেবা কোখা দেখিকে কাছায়।। ছবে ছবো ছবা করি সাধ্বালা কয়। এত দিনে চন্দ্রকলা হইলা সংশয়।। মনে কিছু দেখনাক বিশেষ ভাবিয়া। সরোবরে কারে ভুমি দিলে পাঠাইয়া।। বাঞ্চ করি গেল মোরে বিবিধ প্রকারে। অভএব গৃহে গিবা জিজ্ঞান ভাহারে।। কিবা নাম কোথা ধাম কাছার ভনয়। দেহ পাঠাইয়া হেখা লয়ে পরিচয়।। কেনন পণ্ডিত সেই নেধিব ভাহারে। বৃদ্ধি বল বিবেচনা বৃদ্ধিব বিচারে।। প্রতিত হইয়া হৈলে বিচারে খণ্ডিত। যদি মুখে সাগ্রাইব স্কুমি মণ্ডিত।

कथ द्राष्ट्रभूरखद माधुदना। मह दिवाह।

পরার। তদন্তরে মালিনী অতি ছবিত গমনা। অন্তরেত করে বিবেচনা।। গৃহে গিয়া রাজপুত্রে অতি ছলে কর। পূর্ব্ব কথা না বলিল করিয়া গংশয়।। রাজপুত্রে আনাইল এই নগাচার। তব সহ সাধুনুতা করিবে বিচার।। অত-এব যদাপি থাকরে ভবিতবা। বিচারে জিনিয়া কর ভার্যার লভা।। এত শুনি রাজপুত্র পুলকিত মন। তদন্তরে সাধু পুরে করিল এমন।। বিদয়াছে সদাগর সভার ভিতরে। উপনীত রাজপুত্র ছাত্র বেশ ধরে।। এন মহাবীর্যা মুর্য্য ডাকে নবমেছে। সেই মত উপনীত স্বাক্ষার আলে।। সমানরে সদাগর সভায় বসায়। কোথা বাস কি প্ররাশ চাহে পরিচয় রাজপুত্র নিজ পরিচয়া নাহি পিল। কেবল বিচার আশ ভারে জানাইল।। তদন্তরে স্বাকারে ভিনিল বিচারে। লাগর গিয়া পরে কহিল কন্যারে।। শুনি ধনী পিতৃ কথা

मन्छ। इहेन। कतिए विष्णंत द्यांना निष्णंत विहित ॥ एवहें क्षांन इहेर्न विष्णंत । एवं द्यांन इहेर्न विष्णंत । भूकंनित विद्धा निया किता एवं द्यांन हिंदा मध्या निया किता किता एवं हो । छोत मध्या निया किया किता किता एवं हो । छोत मध्या निया किया किया किया हो । विद्या किया हो । किया किया हो । किया किया हो । किया हो । किया हिंदा । किया हो । हिंदा हो । हि

一世

রাজপুল শারীসহ কথোপকন:

लयू-विश्वी। इहेन विवाह, उपस्थ निकांत, वालिन यहं छाला। पर्माटन (पाहिछ, अिछ आनिप्तक, मठो शिछ इछि तरा। विवह आछन, इहेन निकांन, पर्माठीत मभारतरण। निका नवतम, अक शर्द निक्ति रम्पत । लिखद मारीदा, पिश्वी रम पदा, आनिप्प छाद किछारम। देनवाधी अलि, एकामांत मश्ही, देनन पर्मा छात किछारम। देनवाधी अलि, एकामांत मश्ही, देनन पर्मा छात विद्या। केहं मात्रकात, कि दहकू आमात, आगमन अहे प्रत्म। वाक्ष्मी कथा, धिन आनिप्तक, करह कथा दित हिटम। कव आश्रमन, देनन पर कार्यन, आनि आमि मित्रकात । अक्षर्वत ताक्षा, ताका छा अला, देवरम हिमानस शारम। हिन्न हान्न नाम, हिन्न हान्न मान्याद । अक्षर्यका, देवरम हिमानस शारम। हिन्न हान्न नाम, हिन्न हान्न मानदिन । अक्षर्यका, देवरम हिमानस शारम। हिन्न हान्न नाम, हिन्न हान्न मानदिन । अत्राह्म मानदिन हान्य । अत्राह्म हिन्द हान्न । अत्राह्म मानदिन । अत्राह्म मानदिन । अत्राह्म हिन्द हान्य। एका भारति, हिन्द हान्य। अत्राह्म स्वाह्म स्वाह्म हान्य । अत्राह्म स्वाह्म हान्य । अत्राह्म स्वाह्म स्वा

্ছলে ভোষে। দেখি তার ৰূপ, ফতি রসকুল, বন্ধি হলে প্রেম केंद्रित ॥ अन् छेठाहिन, लाइ बकुनन, खरन सीश्रंत व्यादमा। দক্ষি তিন জন, ভাহার কারণ- ভ্রমিলেন বভ্রেন্দ। মনের বাসনা, কামের কামনা, হৈল পুর্ণ অবশেষে। নিজ ভার্ষা। পেরে, जानमिन्छ करम, निक श्रक्षारम ।। वर्गश्रिम वम्भी, मरम ऋयूभानि, 'क्वरभारव छात्रा अरम। मिल्यत कथन, कला ভিন জন, আসিবেন ভব পাশে।। এ কথা গুনিয়া, বিনয় कतित्राः कटर शूनः मत्नालाटन । अहे निटवननः कन्यात कथनः कर किछू मितिरगटम !। अम एक्स माती, करर धीति धीरत, पुर्व মৃষ্ট্ মন্দ্র ছেলে। পারস সুক্ষরী, গন্ধর্ক কুমারী, রূপে অন্ধকার নাৰে॥ ছড়িত লক্ষিত, হয়ে মধোচিত, সুপ্ৰকাশ্য আসা হাসে। ভাহার কারণ, চিন্তা কর কেন, পাবে ভাবে অনা-রাসে।। করিয়া মন্ত্রণা, করিব ঘটনা, মিলাইন তাত পাশে। আশায় আশাস, আশে আগে আশ, আশা রদ্ধি হ । আশে।। म्दनह आंख्नारम, क्षीमारथत शरम, बटन महा कत स्मरय। क्रिल द्राप्त, द्रांकनांद्रांध्रण, श्राप्त भीन विक मारत ॥

一個

রাজপুত্রের বন্ধু সহিত মিলন।

পরার। প্রভাতে উঠিয়। রাজা বিজয় সুন্দর। প্রাতঃরুত্তা নিজ্যকর্দা করে ভদন্তর।। গোপন হইরা সারী রাজপুজে কয়। মোর বিবরণ কিছু শুন মহাশয়।। পুর্বেতে ছিলাম আমি চিত্রভামু পুরী। তব অন্যেবণে মোরে পাঠালে সুন্দরী।। দৈবকলে ব্যাধ জালে ধরিরা আমায়। সাধু কুমারীরে সেই ক্রিল বিক্রম।। অভএব মোরে ভূমি লৈও সঙ্গে করে। মিলাইব তব সহ রাজকুমারীরে।। শুনিয়া রাজার পুত্র আমন্দিত মন। শাহীরে সন্ধান বহু করিল তথন।। দৈব-বোগে ঐ দিবা পাত্রের কুমার। প্রথেশ করিল আসি নগর ভিতর।। নিজ সাধ্যে অন্তেশন করিয়া বিস্তর। উপনীত হৈল

আসি দাধুর আগার।। যাঅপুশ্র নিকটে পাঠার সমাজার। এত শুনি রার্ডপুত্র জানাদ অপার।। ধরণপুর হৈছে ভবে णाहेल मक्ता केश्वदत्त धनावाम क्तिल विख्ता। कम्बंब উপনীত আর ছুই জন। রাজপুতে সহ আনি করিল সিল্ন।। कृष्टिका निक निक छ्थ्य रिवेद्रभः व्य क्षकारत शाहेन ভার্যার অত্যেষণ।। কিছু পিন সেই স্থানে করিল বঞ্জ। পুনঃ এक निम তবে রাজার गणन ॥ भक्छित भातीरत **कहिंध** विवत्तन। कि श्रकादत कति दम कराति कदम्बन ।। ताक्रमुखे कथा अपन मात्री करह (अरव ।। वाहित्स कहिएछ एव कहे अन তবে। গন্ধর্কের রাজা চিত্রাভানু নৃপ্যাণ। ভারার ভনরা ধনী নাম চিত্রাভিণী।। চিত্রের পুৰণী বিসি চিত্রালিট নারী। চিত্রকলা নামে লে কনার সহচরী।। সর্প কার্যা कारन भिर कारन वह गांशाः शर्मम छोश्त याया ताकात ভনরা।। যদি সহচরী করে। কুপাবলোকন। জনায়ানে পারে ইহা করিতে ঘটন।। সে বিহনে অন্য কনে না পারে ঘটা-তে। অন্ত্রধারী দারীগণ প্রত্যেক দারেতে।। অনেক ছুর্গম कान आहरम পरथरछ। अक्षतीरक भूगाशस्य इरेरिय गाँडेर ह मांना ব্যাড় बद्धांत्र निथंत नग नहीं। त्रांकन शिभाव वनलक्षणी বাদী।। এত শুনি রাজপুত্র শারীর বচন। বদুগণ নিকট্রে কহিল বিবরণ।। আনন্দিত পাত্রস্ত এই কথা গুনি। স্ক্র र्भन देर न ভादत मञ्ज क्यां कर्मने ॥ मञ्ज मित्र। करिया यह क्या বিবরণ। ভদস্তরে কহে ভারে বিপ্রের নক্ষর। আকৃত্যি পথেতে বাইতে হ'টল উপায়। আমি দিব এক দ্ৰবা বিশ্ব-শিচে ভর।। এত থলি অসুরীক রাজপুতে দিল। ভারীয় य खन कारा क्रमीन करिता। क्रमस्टात करी रहा मानूत अम्मन। ওটিকা সমর্গি কহে গুণ বিষরণ ।। পুলকিত হঙ্গে তবে রাজার छनत्र। गर्क विवत्रण छटव भारीकाटत्र कत्र।। भानी घटन अकारी बास्टर स्टब शर्थ। कथात मामत मान चारि योज

3.35

রাথে। ওদন্তর দিন স্থির করে ক্রমন্ত। আশার আশয়ে নাম পুলকিত অভি।। ভিজবর ইত্যাদি।।

真の事

রাজপুত্র কান্যকুতা দেশ হইতে চিত্রকর্ণ গলশে গমন।

পরার। রাজপুত্র কহিছে ভাকিয়া বন্ধানে। যত দিন না हरेदद मम जानगरन ॥ चटकानिन जिन कन एएथाय तहिरव । हैशंदक असदत किছू छः थे यो कोविद्यः। थक यनि शिल हिन अंदराधिया गथा। निक काहा वृज्जी यथां प्र जाटक करे।। त्य क्षेत्र शहरत यथा कहिन विनत्त्र। वांकिन वित्र वाथा व कथा শুলিয়ে।। বুদ্ধিমতি যুবতী সে সভী পতিত্রতা। কাতর। কালরে করে ধরি কহে কথা।। পতিগতি সতীর শাস্ত্রেতে এ পতি বিহনে বল প্রাণ কিলে রয়।। কীণতমু বিষয় কুষাণু ভাপ পাবে। জনিবাণ ভাপে সদা । দহ দথ হবে।। যদি বল নেত্রজল নিভাবে বহিরে। সেকারণ জকারণ বুৰহ অন্তরে।। যেমত সংযোগ বহি সরস কার্ডেতে। পড়ে জল অবিরত তাহার অগ্রেতে।। সে উদকে অগ্নি।কভূ হয় সবে কহে ভাহে জার দহে অমুক্র।। প্রাপে খোলে কুন্ত সরোবরে। সেই মত হবে নাথ মম নিরা-बोह्य ।। अञ्चर पर अना दिश्ह मरनरू। एम शाहे जला-किं जीटर्बत करण एक ।। श्रांगमाथ स्ट्रिष्ट लट्स मयश्रांग। क्रियाः एवर फाटर पिटल कादी क्यनिकीं।। मृजा भटत गाँर। कटत রীক্ষাতে করিলে। শেষ ক্রিয়া কছিলাম কর ভীথ জলে।। ब्ह्राटम कम तममत्र अम आदिश्याती। आधि कांकि कर प्राटक बिहरण्ड व्यक्ति।। जानस्य अयदा चव वाजि वनियात। क्षेत्रकारस रहि क्ष्रू मा रह मध्गत्।। यनि वन वितर राष्ट्रिय भावभारत। छाशांत्र किकिश किए एकटव दनश मदन ॥ व्यान निरम् क्षांग श्राटम कर क्षारमध्य । अक कर खेरूमक कारन

भेत्रम्भद्र।। (भांत समा त्यांत व्यांग कशू ना चालद्य। कामात त जाला नत जानात जानिएय।। एक मछ माबिएक मंदिन। इल ग्रें। भूनर्वाद भारतीत्त्र काहित्रः लद्र शक्ति। विविध विवादन धनी विश्वतारम भूटम । विश्वताल आमादत याँगादिन विश्वमाद्य ।। भावीद्य लहेबा श्टल वांकांत नमन। सांवर्षी बरहरत क्षांत्र वाकर्षन ॥ महत्त्व पृत्मा घरण मत्व वर्गाकृती। সঙ্গে দশ্র ক্ষেত্র চলিল আগুসারি॥ এক দিব। শর্মারী চলিয়া **इ**हे जन। ज्ञिकर्न (मरमारक अरवरम क्लक्कन ।। मात्री कंदर দেখ দব গদ্ধকের পুরী। চিত্রকর্ণ রাজ। এই রাজে। জবি-কারী।। নিশাচর গণ পরে গদ্ধর্মের ডরে। আজা লয়ে গেল স্থানাময়ে॥ এত শুনি রাজপুত এটি पिन शूटच। योत्र त्यांदत प्रमुना य ह्यूक्म त्यांदर। শারী দক্ষে রাজপুত্র চিম্ভিড অন্তরে। উপনীত হৈল পরে विख्य कर्न भूदत्र ।। कि कहिर कि खनात अवनिष्ठ भूती। हैसा-लग्न कुछ इस यादा पृच्छि कति ॥ वियम हर्शम हर्ग प्राथि लास्स ভর। দিবা রাত্রি দিবা সম মণির আলম। যোজন যুড়িয়া श्रुती প্রতেষ্ট হবে সম। নরে অয়ণিত অভি দুশা অলুপষ্। প্রস্তরে প্রাচীর পরিসর হস্ত শত। তাহার বিশুণ জান উর্জে নেই মত।। ভারে ভারী অস্ত্রধারী পুরী হোর আছে। পুরী পথে ইপ্রকাল আফ্রাদি রেখেছে।। পুলকিও পরম আমান आगगाचि। भूती त्नथि कि कात्रग जुटत निम भाषि॥ बाजनावाम् करें छन दिवत्। महत्म नहम नाहे कार्य ध काइल ॥

চিত্রাঙ্গিণীর বিরহ বর্ণন।

जिनने। किजान तानम्का, मदन कि मिरिका, देवति वटम विकास सम्भदत। गर्न देवला गांधी किन, कादमवद्य भागि-हेन, देवदमादय या आहेका किदत।। मदन मदन समानम् देवन काक स्थानन, गमा काथि का का कदत। मददम महदम

वह, स्वाहेटल गाहि क्य, यन कथा माहि ब्हाटन श्रेटत । 🗆 किंबा रेण्डरमार्ट्स, आंबरोर्ट्स फेल्स्ट्राम, कन शांत्रोहें। भावीकाता। काबिया यम बालया श्रीत निक भिजालया (ক্ষার না গাইল ফিরে।। ছায় কেন দেখা দিয়ে, কুল ল भव थारम, आहेलाम है। एस स्वाप्त स्वाप्तरमा हेसा स्वाप्त मि देशन, आंत्रांथ ना खाहेन. खंडांशींद्र कर्जातांद्र लिए श्रुनः धनी ভাবে মনে, श्रामि षाई श्रद्धपरक मान छाई। লাহিচ|ই। পুনং ধনী মনে ভাবে, পাতে বা চকুৰ যা यि छोत्र दिशा नाहि लाहि ।। सिविता वाक्लि पन, विज्ञर **७७% ।,** यूहि यम किछाता कतिय। श्री विवाणिया छ। भूकं कथा धीरत भीरत, नविकारर तर कामाहेल ।। यूनि रि क्ला ভारत, हरह कुमाहीरत फान, खन नाल: व्हित कर म মুখ মুখ্য দাতা খিনি, ভাখারে ঘটাবে তিনি, নারীবে छेमकं (यमभ।। श्राद्याविष्या कूयांत्रीरत्र, छमछत्त कदत्र ध भूष्ण बर्स कवित शसन। शोवरङ भाष्टिक कूल, मधु ल व्यक्तिकृतः, स्कारत खझरत व्यक्तिया। स्थन' महन्। वन ধ**নী উক্ন** উত্ত করে, উত্তরতে কুত্রন জ্ঞান্তি। জালুদ্ধিত হৈ त्वशौ, তारह ज्ञास्ति (यन क्वौ, ज्ञास खूटम शर्फ अर्वकारि कमय कुसूम मक, लोगांतिल लोकिक, ममर्ग मनन घाटल। शटक धनी ध्वांमहन, विद्यक्ता काटक महन, कात क পড়িকাম তাপে:৷ কাপে কারা থর থর, মরে অক মুর मुख्यास्त रमञ्ज्ञ कल्यसीया । ध्राधित धाता मक, श्रार्क् मीत क রত, সুশোভিত যেন খনে তারা।। হেনকালে সেই ভ্ देवय बरल कर्म करल, छेभनी छ देशल এरम भारी। विज्ञः मानुंद्री त्मर्थ, एउटक यटन क्यादीरक, रक्त अटना ६ व कुमात्री।। श्रमित्रा नात्थत कथा, मृत्त शाल मत्नाव কে বলি সিহরি উঠিল। শারী দেখি ততক্ষণ: রাজকন্যা ক कनः खटर मात्री वन् इकाशा ननः। हिजा कटर हुन हुनः

इंगिकेत्रकार हिंही

mark from

অথ চিত্রাছিণীর সাহত লাকপুত্রের চিলন।

भहात । विज्ञका मधीरत जिल्लारम रिकाहिनी । दि सर्थ আনির পুনে যোর ও মনি॥ শারী বলে রঞ্জি পেনে অপোন व्यक्तिर । ७५७७। यह नात्र माक्यांट विवास । नाती महक চিত্রকলা করিল গমন উপনীত হৈল যথা গাফার নক্ষা। চিত্রকলা শারীকে জিজাদা করি কয়। কর্ণারী ইক কোথা तांकात जनत्र।। भारी टटन के देवटम काटह दुवशान । हिस्तिका हकुरा दिखा छ।।तमिट्स हाम्। शक्तिगात खन वटम दांकात নক্ষন। চক্ষু অলগাতর ননা রচে অস্থ্র।। নারী বলে রাক্ষ-পুত্র শুনহ এখন। মুখে হৈতে হাটকারে করণ ক্ষেপ্র। মুখে देश्टण खरिकाद्व ताजभूख निलं। द्यम भनी ७मः नानि जिन्ह्य क्षेत्र ॥ ठक्क कि। स हिज्ञेकला है। म बल (इट्स : अनिषय एट्स আঁ।বিচাহে বারে বারে।। ভাবে মনে কুণারীর মুখে দিয়া हारे। बैद्र नद्य सम्द्र भागत्र शांद्र याहे ॥ এই क्श मदन भटन महमत भौनहम। ताकसूटक आंभरमहरू कटेह हिटन (हेटन) এলো ওহে নারীবেশ সাজাই তোমারে। রায় বলে নিজে নারী পারি হইবারে॥ কেবল তোমার সলে করিব গমন। এত শুনি চলে চিত্র: জানাজত মন।। জানজেতে উপনীত कुमात्रीत भूदत । तांककमा यत्न करे मा मिश्र रक्षदत ॥ किया

कत्र कि करिय अ तांककृषाती। ना आमिश्राधि अदित वर्षे भोती।। श्रीम बनी स्थान एक मुक्ति क हेल। 'सुधीदर क হয়ে ধরার পাছিল।। সহচরী এতু করি করার চেতন।। वक् विनिष्ठा कोम्ब्रद्य स्ट्रेलाहिना।। ७८व हिन्नः नशीशद्य क्ताहित। त्राक्षभूट्य निम करा धविएक कहित।। भूकं मल देश्य दक्षित्र मन्त्रमा मनदा भाषिक यदव कद्य मित्रीय কেহ বলে ধনা ধনা নয়ন আমার। হেন ৰূপ নয়নে না क्फू जात्र।। धनावत्त्रे हाधकनाः धना देश्ल भटि। धटन রাজস্ততে দেবিরা বৃষ্ণী ।। রসকূপ ফুজনার ৰূপ অভুঃ क्रवर्ध लाहाना राम विधित्र घरेना।। ভारत महन प्रहे भूकी भूगा करना। सन निधि अनिधि देशक विधि मिर वीनवादित जमस्रदा मिटलन आनन। मधीनव कत्राहेल **अकालन ॥ भथ्यां ७ जूट**त शंग भीठण इंहेल । उपछटत र कना विकाम कतिन।। ८क सुमिकि नाम उप व्याधाह वानी वस्तीमखरल धरल कृति कि ध्रमान ।। हस्रापन রাজা বিখ্যাত সংসার। ভাহার তনয় নাম বিজয় সুন্দর।

-04-

ष्यथ बाजभूटखत निवाह।

প্রার। ধনী বলে ভাল ভাল বুকেছি ভোমারে।
হৈল বিধি আনি মিলাইল মোরে।। ভুমি মোর মন
ভারণ্য মধ্যেতে। সদা করি অস্থেষণ চোর সন্ধানেতে।।
চোর এত দিনে পাই দরশন। কি সান্তি বিহিত ভাহ
বিবরণ।। শুনি রার ছানি কয় শুনহে উচিত। প্রথমত
ধন লওয়া স্ববিহিত। যথন করিল চোর চুরি তব মন।
ভাহারে শুনি করেছ বন্ধন।। এখন বিহিত সান্তি শুন বঙী। হুদরেতে গিরি আনি চাপাও সংপ্রতি।। নিজ মনমোরে করহ বন্ধন। দেহ আলা দও ছই দশনে দ ভব কিরে। ছলিয়া কৌভুকে হল বুনিলা ছুনারী। ছলঙরে
কংছ লারে চন্তা সহচরী। রক্ষনী অধিক হইল বিলম্ব না
সয়। শুভ লগে শুল বিভা কর ছুগে, দিয়া এক নলি রম্ণীর
কো বিনাইল। যে স্বৰ্ণকার স্বৰ্ণ গোনে মালিল। সংচ্যী
করে ধরি রাজকুণারীরে, সভ্য উভ্য কর সমর্লিলা করে।।
রাজবালা পুলাগালা লয়ে গলে হৈছে। পাছি গলে দিল ছুলি
অভি আনন্দেভে।। রাজসূভ আনা দিও ধরি প্রিলা গলা।
পারিকর্ত্ত প্নর্কার করে সেই মালা।। কুরিলা গলাভা
গান্ধার্ক কুমারী। হুই মন ভত্তকা থেলে পাশা সারী।। পাল্ড
উপরে দোলে করিল শান্তা। তদন্তরে সনিশা হইল গোল
প্রনা। নানা কারা অবাগেন উভ্যান্ত করে। রাজনারায়ণ
ভিত্তর বিচাল প্রারো

व्यव ताक्ष्युत्वत मञ्जाम।

পরার। কামিনী করিয়া কোলে করিল চুমন। কার্ম পরারি ধরি করে আলিজন।। নাভী উরু ককে বক্ষে হস্ত পরশনে। নিহুরিল রসবতী ভয় রভিদানে।। একি একি দেখি দেখি কহ বুবরাজ। কাতরা হয়েছি লাজে দেখি তব কাষ।। নাহি জানি তিক্ত মিফী রতি আখাদন। শুনি নাই কর্ণে ক্র্ একর্মা কেমন।। অসমর রসময় ভেবে হয় ভয়। কাঁপিছে হৃদয় কদলীর পত্র প্রায়।। এই জানি সুখে মুখে কৌভুকে রহিব। ঝেলা গপ সপ ছ্জনে করিব।। যে লেখি পুরুষ ভাম পার্যাণ সমান। পশিলে পতকোপরে বাঁচে কিছে প্রায়।। যাও মেনে এভ কেন হয়েছ ছবির। কল্য নয় হবে বঁধু আজি হও ভির।। রায় কয় নাহি জয় শুনলো বুবতী। খাইতে জয়ুরু কেন হয় হেন মতি।। কি কায় শুনলো বুবতী। খাইতে জয়ুরু কেন হয় হেন মতি।। কি কায় শুনলো মুখ দেখিব সাক্ষাতে। সিলু হবে বিন্দু বোধ দেখিতে। তাজি চিল্লা হয়ে

পরশ পরনে যেন জৌছ স্বৰ্হয়। অস সভে দেই ৰূপ দ वर्षीनम् ।। अन कर्मा कालाकान विवाद (क करत्र। ४० স্বাকাশ বোৰ হয় স্বাকারে। প্রবর্তা হইলে কর্মে রুবি **७४नि ।** चौकान भारेटव स्टल ७ हम्मवद्यानी ॥ सनि स ৰূপদী কহিছে আর বার।। সময়ে সকল কর্মানে। ম कात । अनमत्र दक्तु देश्टक सुद्धां पत्र नदत्। नीत विना नि वसूर्व छोट्य नरहा। मरनटक यूवक खर्या मन्न मनन। ८७ र्नित्म ध कर्म तम व्यक्तित्व मार्थम । एएत पुर्व इतावी इरे নিজাগালে। জুলবাণ সন্ধান করিয়া সুবতীরে।। মন্মথে। थिया थनी निर्ण कालिकन। स्थाप्ता कारम युवताक मा ওতক্ষণ।। কংমশরে ধনী ভরে চেপে ধরে পতি। কামান ধরি গলে কামে টলে মতি।। বুকে বুক মুখে মুপ বাংছে অভি। উরু গুরু কম্মে কুরু লাক্সে ভীরা রভি।। গেল দ্ রাজ বালা পতি গলে ধরে: অন্ধ আঁথি রুদ্ধ রাখি চক্ত रहरत ।। कैरिन खन वाटक तक नरह एका किरह। मध मन **जन अञ्चल तरह।। नार्हि जूटल চুম গাঁলে कटन क्लाटन रें** নাশি ছঃখে মনোসূতে খার মুখ মধু। জাধঃ উর্লু পথ कारम शक्त मन। भटत हक्ष करत युक्त नटर कक्ष तन।। मिदिन केमि हटन धनी वटन (स्ट्रा) हुसि सूथ किया सूथ मा इः १ मार्गा। रश्न प्रम रकाम अन जिलूरम मारक। पना কৈল সৃষ্টি হেন মিফীরাজে।। তার ধার শোধা ভার কব কর্ত। দিলে প্রাণ তারে দান নহে সনোমত।। এই মত ও तक करत करू काटक। हक्षांसूथी सूरम स्थाधि कर्ज (मटन हार দেখি লাজ বুবরাজ নিজ কাম সারে। দেখি রতি লাজে। धरत পতि करता। करह दिखे छाज नाज निक काय रन माक्याम निर्देशीय मक देशम सूर्य।। अहे भठ कव मिका मोना तम्। रखनीएक यूर्वत्रांक मिटन खर्ख रवण।।। विवय ध्यम वर्षना ना रुत्र। जा थित शनदक काटर की

হারায়। প্রেমতত্ত্ব প্রেম মন্ত প্রেম বাষ্ট্র জানি। কাথ যাগ হাম ভোগ দিবস রঙনী।

> कथ है। वे कमार भूट पूक्तात कथ खबन कट्चम ।

প্রভার । এক রাজে দহিবী আপেন কার্য্যান্তরে। াবেলিতে তনমার পুরের ভিতরে।। পুরুষের কথাবেন যার্থ প্রবে-শিল। বাস্ত হয়ে মহিষী রাজায়ে জানাইল। ভানিরা রাণীর कथा खूल क्याय गरन। मारतालारन खेलानीक कमारी खबरन।। महाद्राप्त ५३ शाला हुई करन यरन । यूवक मधन इरम यूच-ভীয় রবে।। ভক্তকণ সধীগণ বাহিরে ভাইল। পুড়েব নিশ্চয় গুহে নুশতি আনিল।। মহাকোষে লাজা প্রচেশিতে রাজ-পুরে; করে ধরি মহিন্দী রাপিয়া দুপ্ররে। সহিন্দী গৃহহতে গোণ্ডেতে প্রবেশিতে: প্রীগণে গুল্প বে নেখে জাচ-ष्टि । त्रानी तन्त्र जिळकला मक्षांच कविला । लाचिमा धूयक बूद्ध कृष्टिका द्राधिका । अत्या अत्या रिल कना। अर्थिय योह । গৃহে প্রবেশিতে রাণী চারেদিকে ঢার।। পুরুষ্ণেরে না দেখিল যুবভীয় ঘরে। মনে মনে সক্রেগিত হইল কান্তরে। জেপি ভরে রাণী পরে বাহিরে আইল। মনিস্তাব সনাচার রাজারে कहिल।। ताका वर्षा कृमश्रदल देशत वस्त्र लाका मध्य सानि-লাম এই দেবভার কায়।। এত বলি দোঁহে চলি গেল ভাস্তঃ-পুরে। রাজার কুমারী হয় চিন্তিভ অন্তরে ।। একে একে সধী-शर्ग नडा कराहिल। शावशास्त्र मर्क अन मनड ११किल॥

শ্বধ চোর সন্ধানে রাজা কন্যাগারে প্রবেশ।
পরার। ভদন্তর নৃপাধর ভাবি নিজ মনে। এক রাত্রে আসি
ভূপ অতি সংগোপনে। পুর্বনিভ শুনে রাজা কথোপকথন।
গৃহের চৌদিকে ভবে করিল স্তম্বন। গুন্যপথে ইন্দ্রজাল
ভাছে আছাদন। পলাইতে নাহি পারে সুর নর্গণ।। ভবে

हाजा महिनौद्ध कदिय प्रवाहर । व्याध महिन द्वर्गरही है ততক্ষণ।। ছারেতে দাপ্তায়ে ছিল সধী চিত্রকলা। এত রা किन दोगी रिल केट एका।। छनि तोजसूर भीख शिहे सू দিল। গৃহে এবেশিয়া রাণী ভাষিতে লাগিল।। নুগ্রৱ হ खंद्र भित्रा भ्रम् कोरन । निका १८७७ निविभटन ८क. १४८७ छ। १९८० करव छूप सुण्या माविया अखरन। वाहिरत चानिसार मिक कमग्रीदि ।। शिक्षा घटत शृद्धत क्षत्रांत कात दक्षा। मा व्यान आएक क्षित अहे महान मक्त । नव मिन्नीह नक व यूनिक। दहति कुछ क्यू मान नात्मक्ष ना धान ।। कारक भिरा मान करर मकारुका। प्रश्तां छ एक लाख एक छ ष्ट्रार्ट्य क्ष्मिट्य कष्णकाम द्राकामा लाटम वहमा शहकव স্পৰিজনে কয়ে বিবসম। মিজকাণ্ণ মন লাভ লভি रहेशा। इन १८७ इन यान तात्य काफ्रानिया। पूनाः উर्धवाद्य करम भाव तरव। एमक् कुना दर्गभारक मारम्पक करन्। नहीं यह मुख्यक मुश्यि ससम । कुरुप (पर्थ हैल ३ রাণীসহ প্রবেশ করিলা অন্তঃপুরে। ভিদরাজ -রামা ডিস্তা কি কারণ। যে দৃষ্টি করিল। স্বাক্তে পাইবে। हम ॥

一曲力

রাজপুত্র প্লাইবার উদ্যোগ এবং রাজ কাড়ার প্রবোগ।

लघु-जिलामी। एटव ताक्षण्यक, इहेग्रा विखिक, जार्गाः विद्रित क्या। श्रम श्राटिक्यती, दृशि श्राटिश मित्र, त्यांत यटन हिंद्र ।। स्वत्मद्ध ताक्षम, त्यांत क्रिस्त्य मित्र, त्यांत यटन हिंद्र क्रिस्ट क्रिस्ट ताक्षम, त्यांत क्रिस्ट क्रिस क

अत्र रहा, भटन कड़े नहां यहि । एर अर्डुमिक । एस द्वारे सन्। ÷টুড়া গোণ্ন, মিজ রাজে: কণ্ডি গড়ি। যদাপি না পার, त्मादब जांका केत, आकि याहे किन त्माम । इसि विदक्ष मधी, পুনঃ পাবে পতি, আঁপনাৰ মৃত্যু ৰাত ও থাকিলে ঘৌৰন, कल मक बन. हेक्टि हैकिया शांदर। (य क्लिट जापीर, म्टवनोक खाइ, थाकिटन स खान गोटन । धनी अटन कश्र. कश मश्रीमंद, मारी रहर नहिंद छत्। महन आहिए कांग्र, बहना शांख त्नरकः त्नोरक करन केशनोती । खरखन छरणः याहेन रक्षस्य, बदश के विदेश आदि ॥ स्वीकाम मदसद, एवमन राम्कांत, **रगहे** क्रभ खान महर । छ। छि अक खहन, मक अगायता. 🙌 क्रभ कि মেশর পারে । পুরুষের প্রাণ, প্রেট মন্ত্র ভাষ নাছি मात्री वर्ष। कूल का नि पित्राः जकरन अपित्रः यात करन বাদলোবে।। বমণী অহল, সরলা অহলা, পঠের ক্ষায় क्रा ज्यापिता रचावन, अनारम रम करन द्वारात क्राक कारन । प्रत्मक नहन, मुर्चरक नहन, बेग इन रहशे पाकि। যার ধন থার, তাহাতের মজার, পর্ফার্যাল স,চি সাভি।। সর্গ্র কথাৰ, জাশায় জুলাৰ, চন্দ্ৰ জুলে দেয় হাতে - পাৱে তাৰ वनः कृतिया रुत्रण, भग्राज्य नाना मर्का छ ल ां। थि भौम, ভাবে ভাবে ভীন, দেখি যার মুখ দেকে: গলে বের ছুরি, कवित्रा ठाकुती, क्यू मान्नी लाटन आटक । मटनत नकमा, मकी स्ट्राहमा, श्रीक श्रेत्रमा मधी। ब्राक्ष वटन लिक, स्ट्राह निक देशन, পতির ফানিরা গতি।। বনে নরপতি, ভাজিয়া युवकी, भनाइन अमा स्मरमा दिस्हरम क्विस श्रेश अथीता, ৌল ধনী পিভূবাদে॥ অনেক কৌশলে, পুনঃ সেই নলে, পাইলেন গুণরভী। জগতে বিখ্যাতা, ক্রমময়ী দীতা, পভি পর রিণা অভি।। মিছে ছল বড়ে, এলেক্স জাঁরে, বনে করা-हैना चिकि। भाषात्न अरहरम, उर् ा मधारक, भूक्ष किन অভি। কাশীরাজ কনা। ৰূপ গহী ধন্যা, ভীষ তারে আ ধরি। নাহি দিল কুল, মজাল ওরুল, ভাজিল নূপ কুমারী হর কোপানলে, মরন মরিলে, ভার্যা ভারে বাঁচাইল सारकी कामरम, भगरमत छाटन, मृख शक्ति व्यान किल।। य बद्ध शिक, अवादम यूवकी, निक त्रक् मार क्टन छटन कथर, नातीत काइन, भूकंष भूक्ति। यदा। जुनि त्मरे न আতীর ব্যাভার, তুলিতে না পারি বধু। জমর দেমন, বার কথন, বাসিদূলে থেতে মধু।। মধুসুক্ত ফুল, ভাহে ভা कुल, अञ्च कुल अनिवात । कुता है एल मधु, ताहे भागवधु, किति লা তাহে আর ।। ভুমি হে যাইবে, কত লত পাবে, না চাবি भारतः (ए। मात्र विटक्क्टम, आमि दलेटम दलेटम, निक्तम मा লোগে ॥ ঘটাবে ঘটন, বিধাতা যখন, হইবে ভখন তা ব্দত্তে কেম ভার, বরে অবিচার, মোরে বধ ভা সুধাই।। : প্রাণপতি, যদি হই সভী, ছুমি হে থাকিবে মুখে। । । । । । । পতি, ভার কি মুর্গতি, আছে চতুর্দ্ধন লোকে দ অং প্রকারে, ব্যায় কুমারে, সাস্তনা করিল সভী। ভিজঃ द्रात नाड़ी लाएं कूल, भारत सूर्थ शारत अि ॥

রাজার প্রতি মঞ্জির উপদেশ।

প্রার। তদন্তরে নৃপবর উঠিয়া প্রভাতে। নিজ '
চিত্ররথে ডাকিয়া গুলেডে।। মন্ত্রণার চিত্ররথ ধীষণ সম
ধরিতে তক্ষর রাজা জিজ্ঞাসে বিধান।। পূর্ব্ব কথা শুনি
কহিছে তথন। ভোমার যে কর্মানর ধরিতে দুর্জন।।
জন উপাযুক্ত হয় যে কর্মোডে। সেই কর্মো তারে ভূপ
দিয়োজিডে।। যার কর্মা ভারে সাজে বিদিত ভূবন। আ
জনাধ্য ভাহা করিতে সাধন। ভাহার কিঞ্চিৎ কহি '
রাজন। যাহে যেবা জয়ী ভাহা শুনহ যোটন।। ধরে
মর্ম্মের্ম কর্মো কর্মা বাড়ে। কুর্মের্ম্মের ব্যাল ব্যাল

म्यामाया पारमाञ्चामा कत्र।। मर्जा मन्ना नरमा नरमा ल्डा इत ।। उटका खवा करिया काया शरकी शरकी नम्र ॥ द्रोटका রাজ্য পুরের পুরুর সহে সহা চান ৷ ধর্টো ধরা খার্কে থাকি बाद्य वाय काम ।। जातम योग युद्ध पाका युद्ध विकि वरत । योशा योशा विष्क विक आद्य श्रीक भिरत । करके कर्षः नार्यः नये जूरवे जूषे करतः गाहा यद्वि जाहा एष्ट्रि महत्रु मिन्नु स्मरत ।। तदम तम खाम खाम खाम महत्र नम भूरण । त्राक्ष त्राक्ष महत्र मिक चारक विकास मार्का। करन एक महत्त्व সন্ধানন্দে মনদ দৃটি: বন্ধে বন্ধ বন্ধে ধন্ধ ভানে ভান্ধ দৃটি।। 🧗 मारक नाम कारच काम बारक पाछ मरहे। मारस मान्डि खोटह जान्ति जार्ज जान्ति गरहे।। बरश थेख मरथ मरथ मरथ मन्द्र হয়। শক্তে শক্তি যুক্তি মুক্তি ভক্তে ভক্তি কয়।। কাৰে কাৰ मीटक माक लाटक लाख बाटफ । यदन यन कर कदन कर भटन मने পুরে।। কুলে কুল খুলে মুল খুলে জুল বাভে। সংখা সধ্য मृत्था मूर्य गटक यक भटछ ।। लट्ध मध भट्य मध जट्ध छ দশা। নাশে নাশ ছাবে ছাম আবে আশ আশা।। সজ্যে मठा गर्ख गर्ख देवका रेमका छात्र। खाटन जान खाटन काम काटन कोन मात्र। थादम थान मादम मात्र मादम वान वादय। हिट हिन नीट नीज तीटल तील सूट्य ॥ क्टन कल वटन वन जारन कल हिर्दा मा पता पता करल करा हारत हल कारमा। করে কর ভবে ভর ভবে ভর ঘেরে। ঘোরে খোর জোরে क्यांत कारत कात भटत ।। अङ्बर न दियस्य ति**छ**्यहे **कम**।े ভক্ষর ধরিতে ভারে কর নিয়োজন। কোভনালে ক**হিলে**। नकरन ब्लांच हरता कंदिह चात (मरम (मरम कनक तहिरक।। वर्षनाम मनखाश गृह हिछ यात्। नुक्तिमारन जनाबरन मा कदत क्षात्र ।। किलाकंत मादम किला चारूत कमश्र। क्षीरी खरन खरनांक्य मर्स मार्श हत ।। टम्हें ट्रम कर्मात कुछ खाँबिलां। त्रकिम। विक कटह है। कर्म इंग्रेटन माधना।

ठिकक्यांत्र ऋदिन ट्वांट्यंड मध्यांन श्रांख । 🥯 छोशमी। पुश्रतत करखदा, छाकि निम तुम्माद्वदाः क्या गविखारत, करह जारत गव विवद्रग । हिलासम खरम, विविध करें है। यहन- व्यवस्थित। शिका द्वारम, बारक ্ঞারিল গমন।। করে কড় অনুমান, কিনে পাব এ সং ্থাইৰ কাহার ছান, হেন মান কে আর রাখিবে। ्नक्रिवीशदर, अ गर द्र्डारु आदन, नाहि लादन सना यदन, न्द्रारम नक्ष्म क्रेट्र ।। दह्न प्रक मटन टाइट्स, अड्रे मरू **प्रदेश, केम**नीक देश्या करण, विक्रक्या मधीत ल्लाहरत । भीक इटब भटत . अटक भिना मांगी भूटत, ांक भीटत ए ভোরে, বলে ভিত্তকলা আহু ঘরে । রাজপুত্র কথা শুনি, हरू अञ्चानि, गविश्वा करी किनि, वासा रूप একিজাবে। তুমিকম্প কাশীমাঝ, আগনি হে যুবরাক आमि किरमद्र काए, छेलगीक माने गृहवादम ॥ तकहे दर छ स्व- इथ (मर्थ कार्ड गुरु, ना खानि किरनद इश्र, इरक्रांह एव मरन। ७७ शनि तामक्रक, भूर्स कथा निर्शा कटर क्षांच प्रथ युक्त, श्वनादलन चाकि मश्दर्भागतम ॥ 🤏 আন্তরে ভর, চিত্রকলা কান্দি কয়, একি কথা মহাশর, ছ किंदू मा चामि ब्लास। अस्पूष्य करर प्राः, जिलक्या क्षम, निक्र मार्कि छाल काम, छानिन नवान बादगान कांधर बाजाब मान, एका छावि निय नान, नन त्मार व्यक्षांन, मा विलिटन क्यांग विनामिय। यांत्र व्यक्त तिर (ভার কর্মে এভ ঘোর, তোর সে জানিজ চোর, ধর্ম बाद्यक मा कात ।। शूर्ट्स क स्मान हर वाला, तम कथ থাকে জাপা, কেন আর রাথ চালা, তাহে খাপা ভূপ দ क्रिक्षेत्र । त्राकश्च यक वटन, किल्क्नना नाहि कुटन, कि জ্যোবে ছবে, ছালি ভোলে, বধিতে তাহারে ।। চাভুরি চোহ, ভগুড়া देशेल ब्लाइ, कांदर्श कांद्रा हुत हुत, व

বালকরজন।

কুকর্ম কি ছালা ইন্ন মনে উপজিল ত হ কান্দিয়া কভিত্তে কয়, সন্নামর দেহ দঙ্গার।। স্তৃতি कः त्र मकाकरतः, शूर्का कथा मरिकारतः प्रकृतदः भीरत **धीरतः** कः इ छात्र मन निरद्र। भूनतात्रं कर्ष ताय, किरम छोत्त्रं थता यात्र, कता यांच कि छेलात्र, मधूमक जर तम मसान ॥ छनि চিত্রব্দং বলে, ভূমি যাবে রাত্রিকালে, কলে ছলে সুকৌশলে, शक्तिकां क्रकार इत्र । छिकात खन्तरम, मिटम हरक **अछ** বেদে, লাত্রে ভোবে নানা রসে. চুরি আলে চাজ্রী করিব। एएटका खट्ड प्रशासित, स्थाप त्यस धर्म तक्ष, किञ्चागळाच दण्यस **व्यक्त** माहि अत्र काटत वाँठाहिया। এ कना लिमहात्राहा निक অক্তঃপুরে যায়, ভথা চিত্রকলা দায়, উপনীত: কুমারীর পুরে। কি কহিব ঋণ ভারি, প্রটিকা করিছে চুরি, আবিছিলা <mark>ক্লভান্থরী, নিবারণ ভার সঞ্চি চো</mark>রে ।।

চোব খর। বিষয়ণ।

छोभनी। कूमात्रीत कम्लिख खान, नना उटर नाथान, शादक रुष्टे **अ**श्रमान, किटन आन वाँटि । अस्टि । १६२ ५३ किटन যাবে, কি করিতে কি ৬₹বে, কুমার অন্তরে ভাবে, কালেকাল व्यक्ति निकटि ॥ ভাবিয়া ভয়েতে ভীত, সনা রহে সমঞ্জিত, হিতে হয় বিপরীত। ভাতি আন্দে পূর্ব আশ নাশে। প্রেমে লাছেন এ বিধান, যদি প্রেমে যায় প্রাণ, তবু লহে সমাধান, र्णाकरक ना भारत (अर्यतरम ।। के तारत मनारवरभ, मार्रक मनदनत्र तरम, किंद्रा छि त्रांट्य भारम, देनवरमाद्य निक कर्म करन । अवाक बादबटक वंधटक, विजायन तव दन्दर्थ, देनव कर्म निषद्य दक, मा बदन वादक हेम्स कादल,॥ विक कदत दूरमा-রেরে, **তার ভালি** যায় মরে, তদ্যপরে, ক্রোধভরে, ভাছারে অহারে পদায়াৎ 🕫 করিলে বিষম আশ, শেষে হয় সর্মনাশ, नियरम बूटकह द्वांग, अधिका ना भाग अक्यार ।। भड़िन

প্রহার দেখে, রস্বতী অভি ছংখে, থেদে কান্দে অধোয়ুখে, नकांच्या इनेत्र भवत्य। भारत शहन किलाक्षरमः व्यटमत्त्र क्रीरादित्र नाट्य, क्रम यत्र अशाह्य, नट्य स्माट्य दलि वर्ष ভারে॥ আমিরে ভূগিনী ভোর, কেন ভোর এভ ছোর, পতি মোর নত্থে চোর, ছাড় মোর নিশি ভোর হৈল। যেন ধর্ম বিদন কণ্টা, বুঝি মন্দা রাখ ধর্মা, ভেদি চাম পড়ে ঘর্মা, রুণা কম আমার হইল।। নম কাল্ড দান্ত সাল, জনক নিতাল ভাষে, আলোপাত কি চুরস্থ, কুতাস্ত বে প্রাণাত কবিবে ৷ পিতা शुळी शांक रुखा, जारि लांकि नाहि शक्ना, किटम कारा इत्य गांखा, छाटर हिन्दा हिन्दाधिक एटर ॥ प्रकृत्याय नद्याधाय, भति हांक एक माथ, लीटन ठांक स्निमींक, विध नाथ अनाथी ফ্রিৰে। আমি সভা কুলবভা, প্রাণপতি মতি গতি, মলে পতি হবে সাথি, অন্তে গতি কোমার হইবে।। কর রক্ষাভিকা দান, দেখুরে পতির প্রাণ, পরিবর্ত্ত গোর প্রাণ, অন্ত আন বৈষ্ট দেহ কেটে। পাপ রাশি এবে নাশি হইয়া ভোষার मार्गी, निवादिया करण बानि, बाथ मनी अ बाक मक्टि। मांगत मिक्किन करता। यटच तक श्रीराहित्त, मृत्त यात्र द्वा হেরে, কেন তারে ভূমি কেল জলে। পতি মোর প্রাণ প্রাণ, যদি ভার বধ প্রাণ, ভোর অত্যে নিজ প্রাণ, এবনি ভাজিব থে शद्रत्य ॥ प्रमा धर्म पान जात, जाद शत्र छेशकाह, हेश वहें কর্ম আর, ভোর দেখ নাহি ভূমগুলে। অধিক কি কব আর, দ্যা দান লাহি যার, রথা ছার ভদ্য তার, আনিবার খলে পাপানলে।। অকাতরে রকাতরে, করাঘাৎ করে শিরে, किमि थात्र। थात्रांभदत, इतन त्रक वहन विद्वादल। अञ्चादन শাস্থরক্ত, বদনে বেক্টিড রক্ত, যেন জাসি কোন ভক্ত, রক্ত भन मिन हस शान ॥ श्रांककना। यक मार्ट्स, हिज्ञानम कर र्वास्थ, मचरन व्यथादन भरम, छेशदनाथ नाहि छात्र मन्ना। इहेन াভুরি চুর, তাঞ্চিল ভগুছা ভুর, সাপে দেহ ছুর ছুর, কাঁপে

ामा हिटल, मश्मामा।। ভाবিছে নাগর होत्र, প্রহারেতে লার যার, একি দার হার হার, যাপ মায় না দেখিল মারে।
প্রথমে ভানেক ছুঃর, মধ্যে হৈল নানা মুখ, শেষ গ্রুথে ফাটে
কা, বিধাত। মিমুধ বৈব ফারে।। ব হে গাজনানায়ণ, কেন্দ্রী
ভাতিন মন, ছুঃরে ভূখ সংঘটন, ভাগেন নার্গের অনুসারে।
থা ধর্ম ভ্রা কর, ভক্তরে ছুক্করে ভ্রা পাঁচে দিন চোরে লার,
ক দিন গুল্ভেগ্র ধরে।।

-

कथ हिजां किशीत व्यदमानि ।

ত্রিপদী । পতির প্রহার দেখে, রসবতী পাতি ১৯৫৩, धदधाञ्चरण जिल्लारम् वता। कार्यन मडी मकाकरः, नमन महास িবে, ভাবে ধারাগর জিনি ধারা।। মণি ছারা কণী জিনি, : सफ़रम कांच्या धनी, त्यन देख शहादल हरकाद्य । ननालदंश रह अङ, विष्कृत आक्षरत मङ, **उत् (भाका वि**ष्कृत ना मस्त ।। िहन প্রেমের সাধ, বিচ্ছেদ সাধিছে বাদ; আগুন বিগুণ ाभा रमाट्य। क्यांश्र लाजिटन यात, मुक्ति क्टत शांतवात, চন দেই বিক্ষেদে না নাশে। যুবতীর পতি গতি, তার वि व पूर्वार, जागि मधी महित (२ मरन: आर्१) त रहाने তে, এডকণ প্রাণ থাকে, কি জাব কহিব ধিক প্রাণে।। মা य इहें गढ़ों, उनक्रा कृति काराया, वृति किल कांसाई েরে। ভ্রাতা অতি সুক্ষঞাল, পিতা প্রলয়ের কাল. পুঞ্জী ভ ববে আতা জোরে।। অবিচার বিধাতার, বাঁচা ভার বলার, তবু ছার প্রাণ, নাহি যায়। হৈল এভ অপমান मन केठिन आन, जांत आन नाहि यात्र हात्र ॥ किहांत्र क-া প্রাণী, সুকঠিন লৌহ জিনি, সেই হৈলে ভাপে ক্রয়া है। देश बादल नाहि शतल, जांत ना मतिदल देगरल, शां-া অধিক দৃঢ় কভা। জানে ইহা পরস্পরে, খ্যাত আছে া সংসারে,বজাঘাতে পাষাণ বিদরে। প্রাণ কি কঠিন হৈছে, বিচ্ছেদের বজাঘাতে, নাছি ডেদ তাহার শরীরে।। বজেতে জভেদ যার, ভাহে এ চমৎকার, ভারে রক্ষ করে পুপাশরে। বজ জিলি দৃতভর,বজাধিক ফুলশহ, ফুলশবে হানে বজ গরে।। নীলকাও বর্তে বিষ, অক্ষে কণী অহনিশ, কুলিম শরীর তিছু-বনে। কহে রাজনারায়ণ, বিষ ভক্ষে যেইজন, ভাব দেহ হানে ফুলবাণে।।

-

অথ রাজপুত্রকৈ কারাগারে বন্ধ।

ুপ্রার। নিশি ভোর ঝরে লোড ধরে তোর জরে। হস্ত र्राष (प्रेटन वास्त्र ताम्र कारण भारत ॥ आण भूत रेल्ल इत् मव हें छुद्रांनि । प्रांटव कीन परम थिन कर्त नारम जानि । १ रह ७६ करत एख नेप्ष उछ विषा राका योग खाइन इंटिस पवि দ্রীনে কেশ। কি দায় হায় হায় রাজস্কুত ভাবে। পিপাদার প্রাণ-দায় কি উপায় হবে। যার আশে মরি লেঘে কোথা ट्रेंग हरिल । क्षेत्रान अमग्र'न दुखि आन शन ॥ कर्च एनएय ष्ट्रान्य प्रदेश कान प्राप्त मिल । सूध्यमारम वाम त्मर्थ मिश्ह-नाटम खिता। वाटक मन्क घन सन्त इस कन्न कृषि। महाताटक दिम्थि मारक देवात लाख्य छेमि।। एमथि काप महाताब इस काक भटन । त्रमकूल टांत ब्ला द्वित चूल करन ।। न दह दनव জ্মসূত্রে দেখি ভাবে ভূপ। অনিমিক নহে জাঁথি দেখিল স্ক্র। হৈয়া মায়া দেব কায়া নাছি ছায়া থাকে। হয়ে নর कि क्षकांत्र त्यार घटन छाटक।। यदन यक्ष लाइश धक्र निडा-विष्यु इदम् । कटक् उटत्र वाथ टाइटत् कांत्राभाटत लटव ।। उपस्थत কৈছে চোর অভুচরগণ। রাথে তারে কারাগারে শরীরে ব-क्रमा, इःश्र युक शाक्यक मरमांगळ इःस्थ। नाना घटन्म देनव कारण পछि कारणी भारक॥ करह विव हः ४ छा क छन कानी शर्म। गार्ट कान के क्क्रान क्वान विभन।।

অথ বাজপুজের স্তবে জগবতীর আগমন।

ত্রিপদী ৷ ভয়ে ভীত রাজমূত, হয়ে চিত্ত ভদগদ আপনার त्वमान तेमल खन कांचन विस्मारत । पूर्व तथा (मांग्क्योम) সদ্ধাহর সনক্ষাম, লইলো খ্রীত্রগা নাম, ভারিলাম ভব ভয় নাশে ।। আছে খ্যাত ভব মাবেন, বামচন্দ্র নিজ ফামে, জা-ষকা অকালে পুজে, দেব অবি রাবণ নিনাংশ। উদ্ধারিতে দবতারে শভুজায়া শুরস্কার, অভিবে ধনিয়া আরে, শির हरत जरमन्द्र के हारण।। प्रक्र सक विमाणिनी, व्रक्तरीक किय-किनी खिन कर्क मरशांतिनी, नांतर्थाी विखा तिनी आरम । मा १६ বারা প্রাহপরা, জন্ম হেডু যোগহরা, জাপিতে ভারো গো डांता- स्ने बात: वटर शांव बारम । द्व निरम के नात खांन, ল্ফায় ফাটিছে প্রাণ, জেপমান ভিয়মান, দেহ গো ঘাভর नांन मारन । मा १हेब्र, सूक सूरङ, यान काक फराहिरण, णाना नाटम खिक्रनएक, तिहित अथाछि अवस्मरम् ।। दश्वरमण्ड याँ है दुकः क्रम्मदनदण व्यद्याप्रथ, दमस्थिता मादमद्र छः थः ना श्टव वि-ः इक्ष जावा (लाख। कानियाग नव मर्सा, (इने कर्च एकस पर्चा,) কণ্ঠে বহে কাল ঘর্মা, কোথা ভন্ম নরি কোন দেশে।। রাজ-্ বুজ স্তব সাজ, জাকাশে খনে ক্ষুলিক, খোর রজে কল্পে यत्रः ভাবে অङ कालिका देवनार्यः। लागाकिङ इत्र शातः, বাসহস্ত বাম নেত্র, জানি সভ্য করে নৃহ্য, রুথের ভাষুল পড়ে ধনে।। ভক্ত ছুংখে ভগবতী, হয়ে বিচলিত মতি, বাস্কা অভি गैसर्गाक, देरमवकी अग्राद्य जिल्लामा त्यांत्र भटन दर्ग लग्नः .भटन कि रहेल **७३, जरू** दत्रता देवन करा, हेटल्पत है**साई दक्** নাশে।। বিশেষ র্ভাস্ত গণি, কহু মোরে সভ্যবাণী, হেন মনে অন্ত্রমানি, কেছ বা প্রহারে মোর দাসে। এত শুনি করা নঞ্জ क्टिवाद्व में मार्च कथा, अटक कटक चर्न मर्छा, एसव टेमका च्या सि দমাবেক্ষা। ক্ষণেক নিরবে থেকে, রুভান্ত গণিয়া দেকে, কৰে তবে কালীকাকে, নরলোকে ভাকে অভি ক্লেশে। অভি-

ন্তানগর ধান, তব ভক্ত প্রিয়তম, বিজয় সুক্ষর নাম, কারা বন্ধ রমণীর জালে : গল্পরের নুপ্মণি, চিত্রভামু নাম জানিং ভার কন্যা চিত্রাজিণী ভাষ্টের জানিয়া নিজহালে। ১ নুপ্র नाम (इट्ड, रेमड्य ध्रिट्ड मांट्ड, म्याम्ट्र क्यनुःभूट्ड, व्रि ভারে ভোষে প্রেমরগো। ৩ কথা প্রকাশ হলে, ভুণ্ডি ক্রো-(थर जात, तत्व एत पूरकोश्यत, हेस कात विम्न देवन শেষে। বরে ভারে মনোস্থে, লৌহর শিকলে বাঁধে প্রিভ ২টয়া কাঁদে, মা বলিয়া সেই কান্দে কেশে।। কর ইচ্ছা আপ নার করিলে বিক্ষ আরু, তার প্রাণ বাঁচ। ভার, ছুরাচার পাছে বা বিনাদে। ভক্ত নামে ভগবতী, জানি অতি हु:शी সতী, শীয়গতি ভূপপতি, ক্রোধমতি চুর্গাচর দোযে। ঘন ঘন ছহস্কার, মুখে মাত্র মার, মার, এ সংসার থাকা ভার, সাধা কার অত্যে ভার আসে। হতে প্রকেশ শেষ, হক্ত জাখি त्रशत्यम, **कार्य नारि मधा लिया, मृर्खि विन एउस्**त नारम ।। विक्षेत्राकांत्र नमन', लाहिए लाल तमना, त्काद्य माहिक लांच्या, सूमगमा विद्यमा व्यव्या कामिया वर्गीत काए, নিকেপিতে মুখ্রে নাজ, সঞ্চিকরে রণমাজ, চলে চিত্রভাত্ন প্ৰাজ দেশে !! ডমক ডিঙিম ডক্ষা, ডাকিনী যোগিনী ঝগ্ধা, गश्हाद्विट**क (**यन लक्षा, नाहि मक्का क्यांकिश्का बाद्यतम। मकामाका बक्तरेपका, रम्न जन देकरक कथा, रेगज नांग जांग মন্ত্র, সমস্ত উন্মন্ত রণ জালে।। ভূত প্রেত পিশাচিনী, ডা-किनी शकिनी जानि, मःशातिनी देखदिनी, मिनिनी यातिनी भरनाज्ञारम। शैन धव अल मन, मूर्थ मात्र मात्र तन, सिब नव फ्रांटव ख्व, क्रमत्रव टेख्त्रव विटणव ॥ बद्धातित्रा दम्म बन्भ, প্রকল্ফ উলক্ষ্য লক্ষ্যভাবি ভূমিকম্পা,বাজে দক্ষ দক্ষ আত্ম-রোবে। সঘনে সংহার শব্দ, ভয়ে দেব-কুর লব্ধ, তেকে তপন श्वक, खांत्रक (म म क मर्य (मर्रम ।। खरंश खर हेन्स्मि, मश्र गांत्रां बाल, कि शिथल (कांलांश्ल, अभक्रल गढ़न कांकारण।

্যজার্ফি অকন্মাৎ, শাস্ত বৃত্তি সুনির্যাত, উল্কাপাত বভাষাক अक्चार मित् क'ता थटन। सदास्त अंति रक, भराख्द লয়ে ভীছ, ভাবে সহব ই হস্তত ধুত যুক্ত বিভিন্ন কলালে। মহা करत महत्त वानि, भनवरम छेनम अभी, दश्नकादन होछ आसि. क्किश्वी कार्य नदारम्॥ स्वास्त 'शानि गटर, भश्रास्त गरत . नरव, बांवरमध्य छानि एरवः भागिति मानिएक वित्नव ाति युट्ध कविना नि, एमर कोटर्श त्यवभाष, मेड छेशनी ह क्यांकि माकि क्या उटफाउ विश्वारम । इति माक व्याप्तकात পকাভাব কালিকালে, মৃগ্রহর ভদন্তরে, করে কারে কারে বেশ্ব কিলে। এত জান ভগবতী, কতেন নার্থ প্রতি, দৈব গতি হুড়াছি, বিক্রভান্ত কথে খোর দাবে। দেবক সংশহ হয়। মনে মোর এই ভার, পাছে বা কলক রয়, লাইতোর ভাংবার छिला भा । ज कथा खानिया सुनि, कटह पुनिः खाँछ नांनी, देशगा হও নারাষ্ণী, আপুনি এ স্থানে রহ্ বুগে।। হিতে বিপ্রীত। श्रान, पर मार्ग कलक १८व, (एन जीना जीत करन, एव प्रानी নিজবাসে । যদি হয় জাতুনতি, যথা গন্ধর্বোর প্রতি, তথা যাই गौधगरिक मान काँदी कतिरंबद मारम। आणि एवं करिय कथी, তাহা হইলে জন্মখা, দিব তার মর্মা বাব্যু, ভল্মাণে মানিব সবংশে।। যুক্তি সিদ্ধ তুউপায়, শুনি যুঁভী দিল সায়, নারদ **শহরে** যায়, উপনীত গফর্ক নিবাসে।^কাত্র মিত্র বসি ভাবে, নারদে দেখিয়া নবে, নুপ্তি উঠিয়া তবে, আইস আইস বলিয়া সম্ভোষে।। ভবানী ভবলা যার, ভব ভয় নাহি ছার গন্ধর্ক কিন্সের ছার, তার থারি নাশে অনায়াসে : ভূমগুলে নাহি স্থান, অভি দীন ভিরমান, অত্তে তার কর ত্রাণ, রাজ্ ারায়ণ ভিজ দাবে। কাল গেল মিছা কালে, মুগ্র মন মার। बाटन, कान कान देशन कातन, कान श्राहरेनाम कान बटम में

उत्रामान्य अन्तर

অথ শিবশাপে অধিনীকুমানের মর্ত্যালাকে তম্ম ও রাজপুত্রের পায়তম।

পরার। ভদত্তরে নাবদ মনি জিলাগি রাখারে। সৃষ্টি मान इम्र दुवि कर प्यतिहादत ॥ कि मोटण कतिदश एक्स राई नीत কিন্তরে। ভার ছাংগে ছাথী মাভা কৈলাল শিবতে।। महैमदमा नाकिया वध गाँवटक क्यांगादत । दर्गाकमी कन्लिका **কল্পে সুরাসুর মতে** । 'কুমি র'জা পুণাবান বিলিভ সংধারে : बाकात्रक सम द्वाच कहेला काकारत ।। त्याक्षकरत कॉलीनाएउ एक হতি কয়ে। এবে বিয়া আইবাস তোমার অ'গালে।। আ-পান মঞ্জা যদি চাহ্ মুপ্ররে। ভব কন্যা দেহ কিন্য বিজয় সুক্ষরে।। এত শুনি ভূপতি ভিক্ষানে মুনিবরে। কালীর কি-क्षत्र कांद्र कह कि अकारत । अठ छनि महास्था करका हा-লারে। দে সব হুড়ান্ড রাজা ভন্ম বিস্তারে । এক দিন ग्रामानक का नक का छ दत । निमिष्ठिया दनवशदन 'व्यादन निका-ंशास्त्र ॥ তদন্তর শচীশ্বর সহ পরিবারে । সর্বদেব মহ ইশ্র ্রাপ্রিল। ছরে।। প্রাপ্তভোব সসম্ভোব মতেক অমরে। স্থা-**দরে স্বাকারে ব্**যায় স্থরে॥ মেন্ডা উর্ক্রী র্ডা ভিডো-ন্ত্রমা পরে। ভতাই কুপনী আসি প্রণমিলা হরে।। হর জনে মৃত্য আরম্ভিলা সুধীস্থরে। ইক্সিডে সঙ্গীত গাঁত গাঁত স্থ अट्रा। स्मिन्छ। बन्ता केट्यांच मृठा हर का १ । ४ मा धमा दील-क्रा-क्षमश्रम् **य**. दत वर्षतः ॥ अन्तिमौकूमात्र ছिल भवात जिरूदतः । नुष्य (परि मध्यमन पूरे निर्माता ।। लोक लच्छा ७ श यात्र मन्द्रमञ्ज अद्भाग राज पति छेर्सनीदत भानिक्रन कदत्।। ८१-ৰিয়া সকোধ শিখ হইলা অন্তরে। গর্জিয়া সকোৰ বাণী করে বোঁহাকারে।। দেবতা হইয়া লোভ মনুব্য আচারে। নরবেশ্নি প্রায়ে যোনি প্রায় হবে ভোরে। বিধাতার ভবিত্তা কে খাণ্ডিতে পারে ৷ যর্ড বিদ্যা ধরি জন্ম ল-हेटव कश्मीदत्रा। नाती त्यादक वक हार भारव देवव-

अटर । श्वनिष्ठा कोख्य **रूद्य पृष्टे नेट्रीमटर** । व्यक्तिस्ट ा निला भिना मोती शरन घरव । महागना कर नहा नमा क्यान ादत ।। भीमशीरम भिम भाजी खुनिरशः मरमादतः। शिका योग ্কাধাকুল হয় বালকেবে।। জনক সমুগ্ৰ দিতে **মানে** রকা করে। কুপুতা হইলে মাত ভালে কি **ভাগারে**।। পিতা গাড়া টোলে কোৰ কৈলে লালকেৰে ৷ কে **আৰি** করিতে রক্ষা বস্থাত। ভারে ।। অপুরাধে শারা দখ্য**ৈকলে**। र्राक्ट्राकरतः। यो दिलास् विश्वादम् छद् चामा महि खाद्रः । अमसी বছাপি জেশ্বে ভালে ভনবারে। যা ক্রিয়া ক্রান্তিল ক্ষেত্র ভেতে বল্ল ভারে । ক্ষণ করমে। কালী কান্ড কিন্ধরে। পিত বাজা অপপ্তন এ আৰু সংসাতে ॥ হখন প্ডিৰ নাত। কি ध्यः मर्गन्दर । भा २८वे कर्गात्मस्य स्वयः मना ५**त** स्थादत ॥ श्वासिः शाहरून महा कोलीत अनुरत । सबत अन्य (त्रा) शांत्रीएका मामाद्य ।। 'कानिया 'क्टबर 'बादर सुदे मह्दा बदा के निर्माह देशत क्यांति क्यांत्रिया मश्रद्ध । ७था वाका एक्स्ट्राम विकिस अर्ज्ज ধারে। সমুদ্র সমান কুদ্রি শম্ন সমরে।। পুত্র ছেড় মহারা**ক্র** শিব শেব। করে। সল্যাসী রপেতে শিব কল দিল ভারে। रमह कव थ। अशहेन निस् निस्पीता। पृष्टे गृहि पारक লবে তৰ্ভলো। এক অংশ জয়ে তার রাণীর উদরে। **লার** ভিন জন জম হৈল যে নগরে। মিলন হইল চেরে কিছুদিন পরে। তবে দেবরাজ আনি তোষার আগারে ।। ছলনা করি বরিতে কহিল কন্যারে। বিবাহ সন্মান করে তব কুনারীরে।। মনো**স্তবে গমন করিল স্বর্গপুরে। ভারতরে কু**গারী ছেব**ু ইন্দ্র**ি পাজাসারে ।। দেখা দিয়া এলো ছলে রাণার কুমারে। চাঞ্চি জনে তার অত্যেখনে হ্রানাস্তরে। বহু হ্রান্সে উপনীত ভোষাক্র भागादत । यर्छ कना। घडेना इहेन हाति रदत ॥ यकु किन सम আছে কাণ্যকুঞ্জ পুরে। গোপনে কন্যা তব বরিতা কুমারে।। **थर्थन विवार कारत रेम्स गयामरत। अञ्चल मुल खेकि करत**े

ज्ञागकस्थातम ।

মুনিবরে। রক্ষা কৈলা মহামুনি বিপদ দাগরে।। াদে কম্ব পুপ্তেবে চলে কারাগারে। ভিজ রাজনারমণ রচিল প্যারে।।

-

অথ রাজগুলের বিবাহ।

होशमी। श्रीन नाजरमत वानी, हिल्लाम नुश्रमति, प्रति দ্বি। ফণী খিনি, বান্ত অতি ক্রতগতি চলে। যথা বন্ধ রাজ ्रद्रुष्ठ, कथा मुश छिशनीक, (मटन ज्यरं क्र्यांक्र्क, नकांक्रद्र क्रमः . (इ.८.) चटल । क्रम सम ज्ञालकार, ना क्यांनिया गढ वाप, माधिव ছোমার সাধ,না ভাব বিষাদ মনানলে। না জানিয়া এত দায়, ক্তে রাজা হায় হায়, অক্ষর্জনে প্রভেগায়, সহতে বন্ধন দিল भूटका ।। या छोन विवास यम, देस्टर कर्य अर्थक्षम, गुक्क छाटन नोगायन, यत्नामा वाशिल छेक्चरल। मरनरक ना जाव तिषि, जामात करमेत दमाय, एएटर कमा विधि वंग, आंश्रेन কর্মের কল ফলে।। এত বলি নুপ্রর, হয়ে সর্ঘি হারার, রাজ शुंख छ न्हर, भगनित्र निम निक क्लाटन। क्रमू हर गण शहर, श्रीमत्र र वस करता मुश्रवत निर्ध करता, निर्देशन श्रीप्रशिव হলে : শুভ নিশি পোহাইল, মনোতুঃখ ছুবে জেল, সুমঞ্জ देहर्गलाञ्च, मधीशन कुमातीत्व चर्लः त्राटका पिन समाहात, श्वास्त्र मृशवत,करत ७.७ मिन व्हित क्या मौन करत कुछ इत्ता। রাজ্যে মহা মহোৎদত, বিলাহের কল্যব, গদ্ধকের নারী দত, श्रेशनन्त्र महाना महाता। नर्छकी नर्छक करू, करत नृहा खितिहरू কত কৰ খবৰ্ণিত, বুঝহ পণ্ডিত দে কৌশলে॥ ডমক্ল ডিণ্ডিম ৰাজে, চকা ঢোল পাথয়াজে, যন ঝাঁজে ভবমাঝে,নীণা বাঁশী बोटक एका नाहन। विक्र-त्राक्तात्रन, कटत व्याच्य निट्यमन, यस इत्र खना मन, तम वर्गन कतिव कि इत्स ॥

প্রার। এই নত বাদ্য কট বাজ্লা বর্ণিতে। মহা কোলা-হল ধর্মি নগর মধ্যেতে॥ তদ্ভর মূপবর হর্ষিত হয়ে। পাত্র মিত্র পুরোহিত বন্ধবর্গ লয়ে। সভা করি বসিলেন কন্যা দান

র সিক্তর্ঞন। ২ 6 । দিনে সকলেতে সবে চারিভিতে ॥ দান সক্ষা বামে लिक्योता मृश्वत । मक्टिनटक तुर्वत इतिये खेखत ।। शूर्वदृष्टि परमाशूटच शोटर नगारेल। कृत्य व्यक्ति रणन मनी केन्द्र र-ইল। সভার শোভার কথা জি হণিব শাব। গ্র**াসুরে ভিন** পুরে লাগে চমৎকার।। সারি খারি পুরনারী করিষা হতেবশ। স্ত্রী আচারে সবে করে সভায় প্রবেশ !! দেনিয়া পাত্রের বাপ মোহিত হইল। চিতের পুতলী প্রায় চাহিন, রবিল।। অন্ত দহিল অঞ প্রকাশিতে নারে। বোকার স্বণন সম গুমরিয়া महत ।। वाकिया रुवेश महत ही खानार कति। महरू सूची महन इ: थी यात्र भीति भीति ॥ घटत काल बालागन विवाणिक मन। বকলেতে নিক্ষে পতি আপন আপন।। কণিকে সে <mark>বৰ কথা</mark> अहे अह मदन । शृष्ठक वाह्नला इस तुक्क विद्या मदन ।। विवाद ह-ইল সাজ শুন ভার পরে। বাসরেতে বর কন্যা প্রবেশে সন্ধ রে॥ রঙ্গরদে রসাভাষে পোহাইল নিশি। পুলকিত হৈল দোঁহে হ্থাৰ্থৰে ভাসি॥ ভয় গেল প্ৰকাণিল নিৰ্ভয় দক্তিন।। करु सूर्व सूर्वी देशल गाहि छात शीमा ॥ निर्मा नाम। तक्ष्रदगर्ह वर्षः प्रहे जन। निवह्छादण्टम त्रपं ताकनाशंत्रण॥

অথ রামপুত্র ছলে রতি ৰাঞ্চা।

विश्वे। 🚉 मिन बाकाइएन, यूवडीरत कति कारमः क्टरकोमाल करर मृद्धक्षरत्। क्रेश्वरत्तत्र किंवा लीला, कि व्यश्रुक् (मथारेला, कृषि देशल कानिएक अरुद्ध । मरन त्यांत ११रे असू পাছে কর অপ্রভার, কৈছে হয় প্রিয়সী বলিয়া। বৈৰ্যোগে দিবাভাগে, তব ভাবে অনুবাগে, আনক্ষে ছিলাম ধুমাই মা নিজার কাতর অতি, হেনকালে দৈবগতি দেবিলাম অপুৰ चना अन् अन वस्त्राची, कान व्यक्त पान प्रचि, इहेरकरह সমুদ্র মন্থ্য। শব্দ সিশ্ব কোলাছস, ভয়ে করে টলমল, জলেই ছিলোল হয় অভি। র ব্লাকর সমূলেতে, আচ্মিতে তথা হৈতে

स्थाकद रहेन छेर लेडिं।। ट्रांबि डिंड हमरकूड, व्याननावि भूमें किए, केनटल के ठिना के बावक । नज़रन निवसी टमिन, कानि मिकं देश्य औरि, जान लक्ष्मी खिट्टे खनाचार । कपटल छेठिला সুধা, হেরিয়া হরিল। দিধা, তাগ প্রাণ শীতল হইল। শেযে मिर्दि मात्न जर्म, मृश्चि रंगन नम स्म. छेठिन अमेर इलाहना । शामि (यन इनकारन, छेशनीक तिशुकुरन, देनवरण विरुट्ड ফারিল। ভোমার ভাগোর বসে, সৃষ্টি নালে যেই বিষে, হেন विष भेदीदा गरिण । हेरा । एथि श्रृंकिक, रुद्र गल क्षेत्रावक, শুওে করি কুষ্ণে ইলাইল। তদন্তর সুশাকর, হয়ে হরদিত' ওর, মলেকুখে মুধা আনি দিল।। চকোর ভাষার প্রাণ, ভূথে करत सूर'भान, त्याकारल देश्य निका छन्। त्पर्य आकारक ভার, কহিতে দে ধ্বিস্থার, লোমাঞ্চিত হইতেছে অঙ্গ। ও-किष्टि त्यादकत सुदर्श किराम स्थान त्यार्थ, आश्रम अर्थाद्व मंभि बरंज। এ कथा खनाथा नग्न, ज्यारह डाट्ट सूरशानग्न, विश्वत श्रद्धि छम् कटम ।। नित्य बांबां उन खान, नाकारण दमनन व्यक्ति, रमहं सुभामान योकू वाथा। धनिया पुदकी कया, विकश्या मशानात, नाती इंदब ऋगा भाव काथा ॥ कहिटछ त्रतिक ठाछ, अकि कृष नाहि लेकि: कत कारत नव अवक्रमा। अनिलाम केंद्र फिटन, पूर्ति चाँछ सूक्ठिटन,निबबटन शाविटल फिटनना !! श्रृतेः धनौ दर्शन कश्र, करु एपि मश्रामत्र, जामार् करमग्र किया बाट्य। अकि ठाने वेड बांछे, कड मान राष्ट्र घारे, दन প্রতি পেলে করি কাছে।। পুনঃ কহে বুবরাজ, তাজিয়া আপন आक, श्रक्षकथा (पथर श्राध्या। कि रहेरित तोकहाल, मांका-एक रहिबंदेल (शटन ना) गोनि निश्वास शूर्व शक ।। योतन ग-বিশী কম্পিতে ভাতে, জোসার নিচ্ছ ঘন ঘন।। মন্তনেতে क्रमस्त्री, इत्त म्याका कि मूलाइ, सूथ क्षण ठटाइन क्रमह ।। स्मित्र निर्म महम (क्रान,क्षणत मार्त्सीटक उत्ते, शास्त्र केतातक कुस्रका।

ग्रे मञ्चरकात काटण, व्यक्तवत्र अगाहीस्त्री, सिर्ट्स व्यवस्थितः ্ৰপ্তি। মন্ত্ৰীমতে ভদন্তব্যু, ক্ষুত্ৰ মুধ্য দাশ্বব্যু, হবে বই সুদ ात धार्ति ॥ सम्यद्भ एमाम्ल, स्ट प्राचि मुख्यदन, अहे खत इन केलिए । धरहे वित्त मृति सम्, भाषाच्छीय प्राप्त जा म विर जिहरत ममास्मर्छ।। इहा संवि हता ठाछ, करीख ्रार इन्छ, कुटल, लटन कुछल्य म्(दिवा) हिंश दिन्धि कप्रस्तर क्रि ्श भगवत, मण धूर्य मिलिए अतावका। नुनारणत मुर्वा गारनः सम मल १८व भारनः खान वृष्णियेत्व करोग्राटम । कृषि । মা কব বাবে, । ক করিতে পারে তারে, নয়ন কর্ত্তাক ছারু वेटवाः ८ कथा १६ निया धनी, चटल उन एनम्बि, दश्त कर्म বাতির পিবলে। একার্যো করিতে স্থল, ে শ্রু ভর হয় কালাও क ज नि यमाशि किर बारम । एन जरद क्यमिषि, ध कर्ष গরিবে যদি, ভাগ্রে কর গৃহতার বন্ধ বুনিরে ভার্যার বুন্তি कात वरक लाजूतिक, मार् मस मत्नत खन्ममा। नत्त्र वरक मसानटम्म, दश्रमानटम्म नाहि सटम,मानटम्य मुटक्षांत्र काम पालक तुरक वृरक मूटर सुरथ, अधद हुसम मूट्य, मृश्चि हटक बांद्य कह हाता। मण्ड मटस व्यक्त बल, तूरकाश्च सद् कस. वनास मुक्टन खलदम्दर : शर्ख तम्म जोर्थ जाय, दिम त्या ভণ্ড, প্রচণ্ড মধ্ন নান। মতে ৷৷ তেংলে মূল রসলার, বাড়ে পুখ दमनातः, शदलभद दम काकाम्यन । এই यस कर कर, नथ यस भविष्ठ, नुबर् शिष्ठ जीवि गत्न ।।

। জ্থ রাজকনা। ছলে বিপরীত রতি বাঞ্ছা।

প্রার। নিতা নানা রনে নিলি বংশ দুইজন। তদ্ভর এই রাজে শুন বিবরণ।। যুবতীর ছিল রাগ বুবক উপরে। তারে সম্ভিত ফল দেই কিপ্রারে।। দিবলে স্প্রেন রতি অভি হুরী শলে। তার সম ম্য ত্রে সাধিব কি ছলে।। তাবি অভি বৃদ্ধি মতী পতি পাশে গিয়া। ছলে ছল ছল আঁথি হুসনা করিকা।

বলে শুন প্রাণ অক্রিণ কাষ। সে ভাব ভাবিরা মেরি रेक्ट इत्र लाज।। दनिता हिलाम आपि अर्डेशिका शदा। ह्नकाटन नथी এक कहिन आमारत।। बनिनीत नना जासू অম্বর হইতে। কর্মদলে ভূমগুলে পরে রজনীতে।। নিশিতে नित्नो मीर्ट आहित यूपिछा। यथा प्रःत्र पृक्ति कर्छ स्ट्र বিকসিত।। বিকলিতা ছঃখারতা হইয়া ছঃখেতে। ভারিয়া आवारण फेटरे उम्छ आनित्छ । लाख नजनिता देश समिर-না সঙ্কট। মৃণালে ধরিয়া বলে উঠ উঠ উঠ।। প্রিরবাকা প্রিয় তার উঠিখারে চার। ধরিয়া অধরা পুন: ধরায় লোটার।। ধরা। সেপ্রাধীর। হৈল ধৈর্থ ধরিতে। কারায় কল্পিত হরে नाभिन क्रॉशिटक।। भिनिमी किन्सिका काङ। मृद्र देहटक स्मरस নিরিশূর বেন ভক্ত কম্পে । ধোরুখে।। যেঘাচ্চয় ছিল শ্লী शदात मुध्यदं । जाकारक विकास १८त्र सांशिल कान्मिर्छ।। भूर्वहेळ्य शोर्वमानी वादव क्वनिधि। छेथलिव उनसङ् हमर-কার বিখি।। নিশাকর করে দিবাকরে করে কীণ। ভারাগণ शिष्ण चींग श्रेत्रा मिनन ॥ नित्रस्त सूर्याकत सूर्या करत मान । उथांक निल्ही नथा नटर नमाधान॥ ध कथा छनिता आणि लिटाम विदेश तिहा तिथि दक्ष गाँदे तिहा चन्द्राप्तरक।। लंके देश्टक मशापुरत्थ कार्त्छ त्य समग्र। त्मिर्क वागमा মনে হয় অভিশয়। ভাষে পতি সভী কথা বুকিয়া ইঙ্গিতে। ৰলে হাবি ৰপনা দে ভোমার সাধ্যেতে।। কমলিনী ভুমি নী আমি আনি ভোৱে। আমি ছব স্থা ভামু পড়ি ধরা-পরে।। আছহ যৌবন নীরে হও বিক্ষিত। আকাশ ভাবিদ্রা करमा अधेर द्विछ ।। पूक रन मृगान नम छाट्य पदत स्मादत । अनिदंब उठिएक स्मारत निक्ष खहारत।। त्यहें हत्न उठिएक ाहिन बादन बादन। পভिटन छेठिटन यन छव जात छटत।। शहर जात वात बात स्मिनी काँशित । जर्बा । य जविनद्य निष्यं मृतिद्य ।। देनके करण दस्त्रमञ्ज कृत् (न महिन्द्य । दयन ्रमम श्रुट्स अख्टिय चिठिट्य ॥ रख सुर्द इभक्क अ**काम** ए-स । सम मंटल हत्सामप्र डाङ्डि वृक्तित ।। तारे एका अमात्र शोर्गमानी स्ट्रा जन्माक्या अनेहिस लाइस छन्द रव ॥ हन्छ कटन दमात्र कत्र मिलन कतिरव । तूम मर्ग अन न तर छछ काम्मिरव।। धर्मधान। तम्हे छत्न चूछरन शर्न टक। मिनन वर्त्त एपम कृति। काला करता एक स्थाकित ात्र स्थापाम मिटव। ७५ मात मन गणाधान ना इहेटव अ एवी भूष्मत छोत दुनि जस्करण। मरनामक वर्षा धनी चार्र-मा करवा। धेइमक कर्म यक एक करू वर्नित्व। छारवरक ৰক জন বিশেষে বুনিংব।। গুৱহাতে শান্তমতি রতি क तीरक्। जानम मस्तत्र कथा भेतुम्मेरत् करहा। त्रांबा-ख तत्व शिक्ष क्षम् त्रम्। ध कर्म गांवत्म मना हिन त्यांस ।। (हातकार) कर पर स्ट्रेन व्यवहा। (इन कर्या कि व्यक्तान ceta चारव इक् II नर्कछ खारवटक माहि हिन सूरश्रामेत्री शंदक रामक बरन क्षकारमंत्र क्या। अक मिरन इंटरनन वि-। समझ। बुष्टिल अदनत इन्द्रंच छन्द निक्दर्ध । এक छन्नि ामनी পতि खंि कन्न। कहित्स गत्नत कथा ५८५ त्रामस ॥ বের অধিক নারীর লক্ষা ভয়। তাহাতে কলভা ডালি. ो भिरत वश्रा। द्वांशिश्रा ब्लाट्स्य केल खालन क्षत्र। मा ह अप्रति इस कलक प्रेमस॥ अहे अल निरम्ना किल क्रिस्त्रें। रात्र । भात अक्राजनिक्क कनत्वत्र मात्र ।। धक त्मत्व গেলিভ দেবিবে তোমায়। আর নেত্র লক্ষ্যায় প্রহরী দেখ 🍴 चौहिन जे वन अधकःवादकात अवेदन । जात वर्न क्रिक् क्लंक के परने ।। ज्याहित तमना ध्यम तम आक्षापटन है अक देश्य किए कवा कक्टा ।। नागात्र हिल अक् প্রিল্পে। ভার রক্ষু ছিল সন্বালোক সকলা ভারে। क दिन ध्यम कार्यत्र नागरन। जात्र कत जाव्हानिक (St)

দুচু আক্ষাৰনে।। এক পদ চিক্তিত হাইতে দেশান্তরে।
বাদ হইতে বন্ধ কুল ভর ভরে।। এক মন ছুই টাই ছিল
ক্ষাৰ্থ। কুলে বন্ধ অন্ধ আর প্রেমে আন্ধ বন্ধ।। প্রাদেশত ক্ষাৰ্থ। কুলে বন্ধ অন্ধ আর প্রেমে আন্ধ বন্ধ।। প্রাদেশত ক্ষাত্রতা কি কব সে কথা। প্রের প্রাণ আছিলাম ক্ষোত্রতা।। দ্বিজ কহে ইথে কেছ্ কর্ছ সংশ্র : প্রে রমণী কাছে মুখালে প্রভার।।

4

अर्थ जिलांकिशीत मान।

. ব্রিপদী। সভী পতি প্রেমাবেশে, নিভা নানা নব: बिनुदर्शास्य कदरस्र दक्षनः। श्रमटक अन्तरं इत्र, सूर्य सूर्यः क्षित्र जाना काठा (ध्रम जावाशन।। युवराक मंदन छ স্থানে প্রেম রৃদ্ধি হবে, প্রিয়ারে করাব ছলে মান। পর क्षितिः भान,हेटथ द्रात पृष्ट् मान,त्यात्व हत्त्व खट्य मर्भायान । क्रिक हुई खरन, चारह त्थ्रभ बालाशतन, त्राक्रश्रुक करिन विद्या। टेक्ट मदन खन्न वानि, योन वनदर विद्रमी, जत विराध कतिया।। अनि धनी शांति कया, आरमय कि यह क्षित्रहरू अवरणा कतिय। धन गन एक आंध, नकलि कर ক্লার, আর কি অদেয় ভাহা দিব । যুবরাজ ভদন্তরে, যুব क्रदंब भदत, मृह्यदत कहिएह राज्य। विज्ञहता साटम नार्यो, শুলী সুকপদী, লোর চিত্ত করিল হরণ । তাহার লাবণা চ क्षिम दम हत्कात काटच्या, कांद्रवादत छात्र स्थाभान। न ক্রমার লাখ্যা, চিত্তহরা তব বাধ্যা, বারেক আমারে हिना । ज करा धनित्रा धनी जिलास्थरक ना खरतं वांगी ्राह्म किन विद्व भारत । मरनरक ভाবে यूवकी, मांगीरत जूर क्रीक ल्याका बूटब वन काम नात्न ।। अधिता भिक्रत क्रीरि किर्म पर्न कत्र, भात जात्ना बात कर रहत । जाता मुखेलेगा, यागारेव जमा स्ता, शब्द अबद पुनारे ट्यामाद्र कि कति द्याम, नक्ति छारगात द्याम, अजान

র বিকর জন। ৪) হিক যায় মলে। শর্করায় নিমফলে, আজারেরে সুসলিত্যে, ख्कि काल माहि यात्र शुरल ॥ निश्हागटम कुकूदहरत, तासि-ल यक्त करत, जन्मांगरन मना हैक्का कात ; प्रदादत कून भूतन, मिक्कारत मधु मितन, उद् किकाकदत कनावात ॥ नातीकः কপালে ছাই, আমার মরণ নাই, কত আছে এ ছার 🗱 भारत । कूलवधु काथा शाव, किरम खान त्यांनाहन, ना आर्मि कि इटर बुक्क कार्रल ।। अनिया नातीत छेकि, अपतिश्वित्रा अन যুক্তি, বলে প্রিয়ে ওনহ বচন। বহু রত্ন থাকে যার, ধনাশা কি কা্য তার অন্য ধন না করে গ্রহণ।৮ শুনিরা গতির কথা। রমবতী পেয়ে বাখা, ক্লোধভরে উপজিল মান। বস্ত্র আছি। **क्तिया जाटक, मिल्क्सा मान उत्तरक, मत्नाष्ट्रास्थ जादिल बद्रान (र्र** मिथि तमगीत मान, ताळशूळ जित्रमान, जोटन घटन कुकर्म हरे-ল। সভাবে অভাব দেখি, কণেক নিরবে থাকি, বিময়েতে কহিতে লাগিল।। হাগিডে কপালে ৰাথা, হেন মান পেলে কোথা, হেন মান পেলে কোথা,কর কেন এছ অভিমান। র-ररमा, उनामा करत, कताधाक कत निरत, देश कि व्यामात वाँहि थान।। यक त्कन क्षकी हम्न, जुकी हत्म कथा कथ, ना বুঝিয়া রহাস্যেতে এত। যে দেখি তোমার রীভি, হইলো লম্পট প্রতি, না মানি কি গতি তব হৈত।। মিছা সাথে সার্থ বাদ, করেছি যে অপরাধ, ভাহার বিহিত দণ্ড কর। ভাজ নির্জ मान श्रिटत, कथा कर कर्के रुटत, मिक मन ना रत्र जाशत ।। अट्छे मिन इस्के। इन्छ, नटह মোরে करू कन्छ, ज्यांशि व जाना युक् हैरन। जीव हहेरन यूथनन, जिस्र किया छेक जन, निर्वाहन নিৰ্কাণ বুৰ ভেষে।। তোমার বিরহানলে, বিষ প্রায় জ্ঞা चरन, राका करन करह निर्माण।। निक अनुगढ बरन, देहन षाि स्किटित, दिमदन यूषांत्व तन श्रीत ॥ (च हिन श्रीत শলী, রাগরুপ রাচ আসি, তারে ধরি করিল গ্রহণা দেখি

ब्रामन ।। कृषि यनि मन्न कन्न,तांछ विनाभिट्ड शांत्र, धर व्यक्तीत्र श्रहादतः त्राङ् देश्टन जनमान, हत्कात शाहित **উक्तिक एमधित्य तम महीदत्र ॥ युवताब एक वटल, एव**ल शिक पूरल, मत्न ভारत अकि देशल मात्र। माना करल (লৈতে, কথা কিছু কংটাতে, কত মতে করবে উপায়। फीटत कत काटल, नानांभक वाका ছटल, यक कटत युष्ट व्याधा (मृक्थाना श्राम समी, एत्स्र तरह श्रामिना), ८ কোথা রহে উপরোধ।। রাজপুক্ত ভদত্তরে, যুবভীর করে স্তুতি করি সাধিতে লাগিল। ছেনকালে অকুসাৎ, । धमी निकशंक, शक्ति घटक कन्नन टिक्ति ॥ युवताक वे काष्ट्रत नातीदत बदन, कार्यत शहर माहितन शिक्टत : নাহি হেন দাঁড়া, সৃষ্টি ছাড়া কৈল বাড়া, নব পোড়া लाटक करत ।। इश्लं सूर्य शांति शांत्र, ना प्रिथि ना छिन नाती रुद्ध পश्चि स्ट्रत बाद्ध। मदमात्रक देश्टल পश्चि, ना ः এ ফুর্গতি, থাকিতাম সমত আদরে।। অত্রেসিক অরসিক ৰূপ বিৰূপাধিক, ধিক ধিক থিক বিধাতারে। দাঁজাইকার मार्रे, प्रमश्रीत मात्र थार्रे. এ इःथ कार्रे आत काटत ।।] इन्ने यक्क्य, धनी अल्यादन त्रत, जादन मदन कि मात्र धाँ নিক্স মান প্রকাশিয়া, আপনি পশ্চাৎ হয়া, ছল করি শ त्रिका। कटन कार्य भारम शारम, यूवकी गरनरक शारम, क्रदर कि साम बाटक छान। यांद्र कर्मी (जहें दिएन, नाहि श प्रमा बदन, त्म इन दिकन त्मट्य देशन। कम्लुम्य क्राट्यां प्र दमील एटब महमाक्रार्ट्स गटनः यटन कत्रदत्र किन्छन । এहे : कोति महम, छेट्ठे श्रमः एककर्ण, भन्नामहन कतिल भन्नन ॥ श्रिता পणित गणि यूरणी प्रशिष कि। महन जादन कथा। कहैं। भूनः ভारत अहे हरते, ভाष्ट्र माख मान गार्द, ज किंद्व कान ग्रहर तरे।। त्य केनात्र मिल्लभात्र, ভार्य तात्र दे পার। পুনরার পারে ধরি সাধে। এত মান কেন প্রাণ, রা আমার মান, দেহ ্রা দান অপ্রাধে 🏱 র্জামারে বিরুদ্ধ द्वरचे,दक्नशोक व्यद्धायूर्य,यम्थानव्यत्व मनोनदन । कृषि मान ष्रभमान, जूमियान कंत मान, त्क सूथादव श्रिकम बदल ।। মঁপেছি ভোষারে প্রাণ, রাখ বা ঝবা প্রাণ, মান অপ্রমান कर भारम । जुमि मधा ना कहित्त, उक युष्टारत व अनदत्तं, গুরুমান কেন সমুদোহে।। ছোমারি আশাতে আশা, পুঞ্ না পুরালে আশা, আশার আশা কে আর পুরারে। আশা দিয়ে আনি মোরে, সে আলা নিরাশা করে, কিবা আ**শেরি**-हिना निवदा। एव जामा भून देशन, त्यांत्र जामा कृताहैना মান ছলে তাজিলা আনারে। মানে মানে মান হত, প্রার্থ भान तरह करु, गांन नात्र थाक मान जाता। भान नात्र उन्हे वडी, भनमारन कह शिकि, त्मर अञ्चमिक यारे तम्म । वृतिको পতির নম, রসবতী ওভক্ষণ, কহিছে লাগিল। মৃতু হাবে।। 🐯 কহিলে প্রাণনাথ, একি কথা অকক্ষাৎ, দেশে যাবে ভাকিয়া আমারে। অজকান্ত মণি যেই, লৌহ কি ছাড়মে দেই, জান্ত্র काथा जाल निनोटर ॥ अजिशान देश ७३, करु मंठ कर्द्र রক, নানারক অপাক ভক্তিত। অনক হইল সঞ্চ ক্র কর उक्ष चन्न, शक्ति जन्न मन जानत्मारक।। करह जाननाजात्रराहर প্রেম বাড়ে জলিমানে, অভিমান প্রেমের ভরজ। প্রেম জার্ন মুর্ম ভার, অন্যে পার হওয়া ভার, দেখি রক লাগ্রে ভরক ।।

-

ে অথ রাজপুত্তের দেশে গমন।

भारत। जनमान तमाजारम शाम कर धनी। विज्ञश्तां मरनारवाता देश किरम छनि। अमिकात तरमत तारकारक तमताज। बरम इरम विमाम जानियारत काष।। कर्न कि मा क्य जिल्मान देश छरन। हिर्छ देशम विभाग मा वृक्षिया मरन।। अमिका इहेन्नां मा वृक्षिया भ वाजूती।

अकांत्र मान किन कहिना सुमती।। छनि शांनि । ত্র্থী কচে ভতকণ। মন মান যেন প্রাণ বৃথিকারে: **উट्टब्रेड मटनांकथा वृद्धिया छेल्टब्र। मनस्थारिय इरह**् कानम कारता। किङ्क मिन अहे कटश विश्विता इकटन। मूंख रमरम याहेरक वित्र देकन मरम ॥ तमनीरत कपन्यतः नित्त कहिल। উভরের মনের মানস পুর্ণ হৈল।। অভ धर প্রিয়ে আমার বতন। অতপর মোর নক্ষে করহ গমন।। वां शे अभि धनी प्रात्नक कशित । क्षिप्र वांका क्षिप्र क्षेत्र ভা হৈল।। বুঝি মন ভতকণ দিলেন স্থাতি। রাজপুত্র लान यथाय नजभक्ति॥ मखाय कतिमा छूल प्रतिशा जाम विकास सून्त्रत यटल विवादसत कथा।। इहेल कारनक हि সেছি বিদেশে। বিশেষত পিতা মাতা মরিবে ৯তা **७**नि कूश कुमारतरत कहिरह ख्यन। भूक क्रशहाय काः রিবে মাজ্জন।। বিজয় সুন্দর কর এ কেমন কথা। আ পুত্ৰ মত জানিবা আমাতা।। এত শুনি নৃপ্মণি জান देश्य। कमारदा महेग्रा यहिएड चन्नुभाँउ मिया। उपस्र ছির করিলা রাজন। অস্থ রখ গৈন্য কভ করিলা সাভ বিদাস হইতে গেল রাজ অন্তঃপুরে। তদন্তরে প্রেণ রাজার রাণীরে। আশীর্কাদ মনে মনে করিল মা আমার কন্যার বশে থাক দিবাদিশি।। জামাণ বসিবারে দিলেন জাসন। নথী সমেধিরা কপাটের प कता। श्रीनशा श्रीनशा कथा कम धीरत धीरत। जात দিন বাপু থাক গোর পুরে।। বাপের অধিক স্লেছ বালকেরে। মারের অধিক স্নেহ্ বালিকা উপরে।। দিয়া পুজ বাণু পেয়েছি ভোমারে। গমনে ভুবিব[্] छुः ध्येत नागरत ॥ हस्य नम स्मात चत्र व्यादनांकरत वि এত দিনে মোর পুরী আন্ধার করিলে।। পুনঃ নিবেধ করিতে মুক্তি নয়।। শ্বন্তর বাটাতে কেবা চিত্

त्रश्रा। हुई किसी किमार यशांश देशक स्मरता अतु द পাঠারে অমি বাজিতাম হিলে॥ দর্মদা কথা দিব शांकित। (यमन । अजांकी कीर्शिक क्षांक रहेता धर्मन । वालिका इंडेटक स्मादकना किलाकिनी। वाला नाहि भारत মধ জতি লোখালিনী। সদত করেছে মান মাধের উপবে। লা জানি কেমনে রবে শশুবের মরে ৷৷ ভাল মণ্ড কর্ম কেট্র না প্ৰি বুঝিতে। পাছে বা বিৰূপ ভাৰ ভাৰিয়া সনেতে।। त्य गलन क्षांत्र वांश्र कामारत कमिरन । म। कमिरन भाक्षिकी হত্যার পাপ হবে।। যদি কথা হাথ বাপু শাল্ডটী বলিয়া। সাপ ধন একবাৰ দিও পাঠাইয়া।। স্থী বলে যে কথা কেন-ে। কও ভবে। বাপ না রয়েছে ওব দংখার উপরে।। রাণী বলে গ্ৰে সলিলে সভা এ সকলি। বলিখে দিবেছে বিধি টেই-সিন বলি।। তদভবে ডাকি রাণী নিজ ওনয়ারে। কান্দিয়া কাভনে কিছু কহিছে ভাহারে ।। চলিলে পরে ঘরে সার্ধানে (थरका। जूननारका काकावी मारश्रेद मस्न (हरना।। यनि বিধি মেয়ে বেয় ভোমার উপরে। তথনি মানের খায়া । निर्व अञ्चरत्।। मा रेश्टल गारम् नामा क्रानिर्छ श्रामित्व। बरल हिल मा रहि दलिया महन इरव।। मायश्रीत मना स्थितका ওবে বাছাধন: দেখানে হওনা আছ এখানে খেমন!! শাশু-ভীর কথা শুন মন যোগাইরে। তবেসি ভোমারে লেছ করি-বে ভাররে।। নন্দী সভীনে যদি কংখ কুবচন। হইবে মাটির व्यवस्था कटल बहुन ।। खन खदन मा बादलन आन बुखाहरन । क्लक खनिटल कटन वाँ १० मिटक १८व ॥ मनक शक्ति यन य-তনে যোগাৰে। তবেমি নয়ন আডেড তোৱে হাহাইবে॥ এই मत्न तुकाहिया जात्मच क्रकादत । जालान त्रव्यक जुलि मिन **उनशार्य।। कामिश्रा। कश्टिष्ट कना। शंग्र कि करिय। मा** वरन (नशांत कामि कांत्र कारह गांव।। छत्व ताका भछत्रथ পুরি দিল ধন। বছতর সৈন্য দিল সঞ্চের রক্ষণ।। এই মত

িল যত কে পারে কণিতে। রথ চালাইয়া দিল ছাতি ছ । পেতে। অন্তপুরে কোলাছল জাগানের ধ্যুলি। প্রবাধ ক বিতে গেলা মুপতি আপনি। কানাডুজ প্রেচ্ছ চলিল কর্ন ইফন।। এথার সাধুর গুচে শুল বিভাগ।।

·西南谷 春季

কলার বিভ্ছ বর্ণনা ও ব্যৱসূত্তের বাটি আগেদন ও গুলে গ্রন

প্রার। বছত বাধুরত্ব জানী। বিজ্যে। বিক साक्षमा वाला विधिमएड कीएम । देवनरमाध्य छेपानीक एके कृष्टिया। तमस विधय अङ्गार्शस्य अर्थना । एक्। दिन तुस कात मंक्रक कार्यका अवस पाछन पूरा यूरकी सकाव बोलका भारतक सम्म राम स्थीपता। महिला मालकी सुधी दन वेल्डेंस ।। भरक माइ क्ष्यंप विद्वापनगढ एउन्हें। विद्वार कुल् बल खादी लगता । बिरुट्स साबुक्त निष्य सामूब सन्तिसी नगरल वितद वाटक शिष्ट विविद्धि ।। सभाग समना सम ८२ क्ष छः एथ । मित्रदर्श सप्तम रामा गौष्ट्रदर मा श्वदर्थ ।, अबि अ আব্লা প্রতিরে মনন। পঞ্চারে পতি পর্য করে নিরীক্ষা মিশাকর করে কলেবরে হার ফ্লেশে। যে শরীরে স্কুন্দরী हिट्छ मांक अद्या। अस् दिल्म शक्ष्यात आर्य भाष्य সদত সে হালা সহে সহজে সরলা।। অস্য নাথ আসিচ **আশ্বে অভিনয়। আশাপথ আখানী আলার অন্ত** হাষ अक्कान (भटत कान कान देशन निमा। विभागिद्य योग। रतियदत्र भागी।। चारक एक चानव चांच चनकां व तिथू। चय বুলু জ্নাক জাজারে দহে বপু।। জ্লোবর কাতাঃ। কামেতে ন কুল। যার মন্ত্রী মধুকর মলিক। মকুল।। মলিকা মালভী যু

कालिश कुल्मी। कारम खारन मारन खारन आरम यम यम ।। अप नम मुख्याद्वारण सूर्यम शहर । छ। एक कि कत्नी और विश्वन ने रक्षछ । द्वारथीर व्यवधि नाई नाहि त्वांटन विष्ठा ा नर বল্টী কাছে বিধা বল ক্রিয় । কুছস্তবে কামছবে কান্দিয়। श्वरणः। विकास विवास वाक विवरः विस्ताना। कारह भार ্াতাৰ কদে কুচ গিবি। সময়ে আপন কজ সেও হৈল আৰি চলিতে ১৭৭ লে জছলা কামতানে: নিশিতে নরনে নীর নেলভা ক্রিল। কবি কহে কবিতা বনিত, আর লভা। নিয়া-कर मादि एवं त्य त्कवन कथा।। स्वित्क छेडिक किस भारे . ७८८ कन्द्र: । अञ्चारीन **२८४ वक् न**्य भतकारा ॥ अर्थ क**टन** ादिन पारत महन वटल प्राच्ना। इंटफेंड नमन करत शहल मि**के** াজ। । ইন্দৰিক পার আছে অচিয়ার। পুক্তরে ছুব্ধর নেম াৰে বাৰজাৰ।। দেশবৈর পোরে নীরে স্থানায়তের ধুলা। শেই भक्ष मन मठ कांद्र राष्ट्र पहुंचा ।। मण्याको नाइमद्र राष्ट्र सूर्वा रंशा भर्। विद्रही बरमत अना नाहि शांक रहे।। मण्येकी বংবার প্রায় পোলে কাম রাজা। সমস্ত সভোগ সুখে সাধে গীরকানা। উভয়ে উত্ম বেশে অঙ্গে আভরণ। বিবিধ ^१वराटन त्त्रभ कत्रदश माक्रम । छलला हिस्छि छाइस हमस्यात्र করি। তন্ত্র চিত্রে চন্দ্রযুখ চিত্রে চিত্তে চাত।। ভাবে জার हमस्कात व्यक्ति। अवकी युदकी सूर्ध तार्थ दृष्टिशकि व्यनक उद्रक व्यक्त प्रमाणि छेथत्त । नाहि मक्का छक्का महि ভবে জবংহলে।। রভিপতি কন্ত করে উপপত্তি সঙ্গে। রসিক র্যিকা দেঁতে ভাবে রস রজে ।। বসস্ত কুতান্ত সম সদত বিভ আম। নিৰ্জনে তুলনে জাতে জাগাইয়া কাম।। কুখে ভাবে সদত সোহাগে প্রিয় কোলে। কিবা সুখ সিন্ধু বিষ্ণু বোধ নেই কালে।। দেই দাজ দেখি লাখ পার রতিপাত। সমস্ত गरवार कदर यथा निक्शिकि॥ छनि मदन गरेमना माजदूब रखन्नाही। त्यांकिना त्योडूटक शांत्र कुछ कुछ कति । त्कारिकी

इस अब स्वीध शांत्र कुलवात । छिटिल मनम विश्व वाहिट निस्ति। जिन्नदान रहेता वमस स्थिकाती। निक्तन निर्म ক্র সক্ষেদ্ধ্য তারি।। সময়েতে শ্শ্রর শমনে সার্থি। সতীং আলায় ছঃথে সম্মোষ অসতী।। এই ৰাপে নাধুবালা। পে শ্লীৰ ছাত্তে। কাক ৰূপী নাগ রাত হয়ে গালি পাতে।। জ क्रिंश त्थंत करत याधुतनिर्मती। दश्मकारल त्यांत्र वाना त्कांना दिन ध्वनि॥ ठत्र कांनि नापुशूदत्र कानात्र मःयाम। श्वनिः প্রির কথা যুবভী আহলাদ।। ধরিয়া নরের দেহ যত সেন ्त्रीं । गांधुभूदेत्र क्षादम कत्रिन गर्सकन ॥ इत्विश्रूटक दर्शत कर नुषा हिम कम। भूनत्क भूनिक अन करत आलिक्म।! तार शुंख शदा थारामिन जरुःशूद्र । ममछ मःनाम सूर्य देव निर्वाकाद्व ॥ नाधुत श्रुद्धत यक श्रुत्र नातीशन । ब्राक्कक्ता नाट গৈল কৃদ্রি। যতন।। সাধুরুভা মনানলে পীড়িভা আছিল সে रेशीर में जाड़ीहम प्रारंथ भी खन रहेन।। ভাবে মনে প্ৰভি সো ইংগ ছিল ছুলে। আর কি ভ্রমর মধু খার জন্য কুলে।। । अंखर्नी क्षारा मर कतिया रक्षन। हुई खाँगा नटम आटड कि প্রামন।। পরে ভিন বন্ধু তথা বিদায় হইল। নিজ নিং ক্রীর্যা লয়ে পথেতে মিলিল।। নানা কোর কন্ধার ছাড়াং <mark>রহুদেশ। আপনার রাজ্যে আসি করিল প্রবেশ।। চু</mark>র वानि वसरादा कहिल मःवाम। श्वनित्रा खूपिक देवल राज्य শাংলাধ।। কদন্তরে রাজপুত্র উপনীত পুরে। গলহন্ত্র প্রণাং ক্ষরিল তুপভিরে।। পরম আনন্দে রাজা আলিঙ্গন দিল। স্ক্রীরে প্রণমিতে অন্তঃপুরে গেল।। রাজার রমণী ওনে ক্ষারের কথা। কান্দি কহে এত দিন ছিলে বাছা কোখা। জ্ঞাগিনী ছঃখিনী জননী তোর ঘরে। তারা হীন নয়নে क्यांन जाय नीटत ।। अगमित्रा ताम्रपूक करए विवर्ग। स्थिन ৰী পুৰনারী লবে ততকণ।। পুঞ্বধু আনিতে আনকে द्वि इटन्। दिन्दिमा नाजीत क्षा नांत्रीशन पूरन।। उक्र मट्ड कल कितिल गर्सकना। अगरम ज्ञागीय भेरम तथु हुई किना ।

पिछी गमान १९ थरणं १७क मिछ। आभीर्साम कित ज्ञागी

पिनिष्ण किछ। अश्वः श्रुट्ट लहेशा हिलल कडकरण। हिल्ल
पिन वक्षणम मिल विकारण।। अर्ग कर्स्य वज्र मारन कुणिरन मान करत १ क्रिया । भाजस्व गांधुस्क ।

एत्य नन्यन। निज निज मालरहरू कितिल गमन। योक जिल्ला मान किल निज मालरहरू कितिल गमन। योक जिल्ला मान किल निज मालरहरू कितिल गमन। विकार मान किल विकार मान किल मिरके शालन।

किल विकार किल विकार । अर्थ मान करत मिरकेत शालन।

किल कर्य गमांभान किल मिरकेत शालन।

किल कर्य गमांभान किल । विकार मान करता मिरकेत शालन।

किल कर्य गमांभान करता मिरकेत शालन।

क्रिया करता। शिक मिरकेल कीरन। अर्थ गांविय। अर्थ कितिल समा। विकार मान मारकेत गांविय। अर्थ कितिल समा। विकार मान मारकेत गांविय। अर्थ कितिल समा मारकेत समा मा

-

তাত্রধ্বজের বিবাহ।

পরার। তদন্তর মুনিবর কহে রাজসুতে। দেবতা হই রা ন্যে নারীর লোভেতে।। শিব বিষ্ণু আদি আর দিকপাল-া সদত সভোষ সবে নারীর কারণ।। ছাপরে হইলা হরি। কু অবতার। নারী সহ লীলা খেলা করিলা বিস্তর।। বিস্তা-রা কহে মুনি সে সব ভারতী। বর্ণিতে পুস্তক বংড়ে এই ভয় ভি।। কি কব মনের খেদ মনেতে রহিল। বোবার স্থপন বিধান প্রাণ গেল।। মুনি বাকা ভারধান হইল সমত। বিধান নুপতি হইল খুলুকিত।। বিভা দিয়া ভারধানে া সম্পিল। মুনিগণে ভূট করি বিদার করিল।। ভারধানে ্রিকল যত ক্রাব্র ক্রমন্ত্র । ক্রেম্বরি স্থারতে ভালা আহে তুলি ছায়।। এই কার ইভিহান আনি তগ্ন হৈছে। নিষা দ रक्षामान प्रक्रिक कृषि कारक ॥ जाना करि अक्यानिएक सहस अपि भरकाः व्यक्तानिएक कहित्तम यम प्रक्थित ॥ निवान ইবাবালের রুচিড যেমন। স্বীয় নালে প্রকাশিল রাজনা 🕡 सर्था। चिक मीन कावशीन या क्यांन शब्दक । प्रदा कति ८ किंद्र मी नत्व शिंहर ।।

है कि दिनकाश्चम मामक खद्दः गर्भाछ।